आशुलिपि हिन्दी
कक्षा – ग्यारहवीं
(सैद्धांतिक)

आभारोक्ति

परामर्शदाता

- श्रीमती अनीता करवल, भा0प्र0से0,
  अध्यक्षा, के0मा0शि0बोर्ड

संपादन व समन्वय

- डॉ0 विश्वजीत साहा, अपर निदेशक
  (व्याव0 और शै0अ0प्र0 एवं नवा0)

सामग्री विकासकर्ता

- श्रीमती सिम्मी कोचर — संयोजक / लेखक
  लेक्चरर, सचिविय पद्धति
  मीराबाई इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी
  नई दिल्ली–110065

- श्री अशोक कुमार — लेखक
  लेक्चरर, सचिविय पद्धति
  भाई परमानन्द इंस्टीट्यूट ऑफ बिजनेस स्टडीज,
  शकरपुर, दिल्ली–110092

- सुश्री सुदेश कुमारी(सेवानिवृत्त) — लेखक
  उप–निदेशक (प्रशिक्षण)
  गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

विषय – सूची

पृष्ठ संख्या

आभार (i)
प्राक्कथन (ii)
विषय प्रवेश (vi)
प्रशिक्षार्थियों को निर्देश (vii)

यूनिट 1. आशुलिपि का परिचय 1–6

1.1 हिन्दी आशुलिपि का विकास
1.2 आशुलिपि का अर्थ
1.3 आशुलिपि का महत्व
1.4 आशुलिपि लिखते समय आवश्यक लेखन सामग्री, आशुलिपिक के बैठने की स्थिति एवं तकनीक
1.5 आशुलिपिक के आवश्यक गुण

यूनिट 2. व्यंजन रेखाएं एवं उनका मिलान 7–15

2.1 व्यंजन का अर्थ एवं वर्गीकरण
2.2 रेखाक्षरों का मिलान

यूनिट 3. स्वर

3.1 स्वर का अर्थ 16–23

3.1.1 बिन्दु तथा डैश से अंकित किए जाने वाले स्वरों का पृथक–पृथक वर्गीकरण
3.1.2 रेखाक्षरों में स्वर ध्वनियों का स्थान
3.1.3 व्यंजन "य" एवं "व" की स्वर ध्वनि
3.1.4 स्वरों के साथ अनुस्वार आने पर विशेष संकेत लगाना
3.1.5 दो व्यंजनों के बीच स्वर संकेत एवं व्यंजनों के लिखने का स्थान

3.2 शब्द चिन्ह, कारक की विभक्ति एवं सर्वनाम 24–28

3.2.1 शब्द चिन्ह का अर्थ
3.2.2 शब्द चिन्हों के अभ्यास की विधि

3.3 वाक्यांश 29–36

3.4 द्विध्वनिक एवं त्रिध्वनिक स्वर 37–40

3.5 द्विध्वनिक एवं त्रिध्वनिक मात्राएं 41–44

3.6 वैकल्पिक संकेत (र–ड़, ढ़, ल तथा ह) 45

3.7 संक्षिप्त "व" 46–48

यूनिट 4. सर्किल एवं लूप

4.1 वृत्त (छोटा और बड़ा) 49–55

4.2 लूप (छोटा और बड़ा) 56–60

यूनिट 5. हुक्स (अंकुश)

5.1 प्रारंभिक हुक "र–ड़" एवं "ल" हुक का प्रयोग 61–64
5.2 अन्तिम हुक "न–ण", "व" और "य" के लिए हुक का प्रयोग 65–67
5.3 हुक और वृत्त का मेल 68–69
5.4 "शन हुक" का प्रयोग 69–73

यूनिट 6. वैकल्पिक संकेत – "र–ड़", "ढ़", "ल", "ह" एवं "श" का प्रयोग

6.1 ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाली "र–ड़" एवं "ढ़" रेखा को लिखने के नियम 74–75
6.2 ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाली "ह" रेखा को लिखने के नियम 75–77
6.3 ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाली "ल" रेखा को लिखने के नियम 77–78

6.4 ऊपर और नीचे की ओर लिखी जाने वाली "श" रेखा के नियम 79–82

यूनिट 7. यौगिक व्यंजन 83–86

यूनिट 8. स्वर संकेत तथा आवश्यक स्वर 87–91

8.1 आरम्भिक एवं अन्तिम स्वर की मौजूदगी
8.2 आरम्भिक एवं अन्तिम व्यंजन की मौजूदगी
8.3 स्वरों का संकेत किन स्थितियों में अवश्य करना चाहिए

यूनिट 9. हार्विंग (अर्द्धकरण) एवं डबलिंग (द्विगुणन) के नियम

9.1 हार्विंग के नियम 92–95
- 9.1.1 अर्द्ध रेखाओं का स्थान
- 9.1.2 हार्विंग नियम में अपवाद
- 9.1.3 वाक्यां ां में हार्विंग के नियम का प्रयोग

9.2 डबलिंग के नियम 95–100
- 9.2.1 डबल रेखाओं का स्थान
- 9.2.2 डबलिंग नियम में ,अपवाद
- 9.2.3 वाक्यां ां में डबलिंग के नियम का प्रयोग

यूनिट 10. नोट लिखना और अनुवाद लिप्यांतरण 101–107

मॉडल प्रश्न पत्र 108

विषय प्रवेश

अंग्रेजी के शार्टहैंड शब्द के लिए हिन्दी में आशुलिपि, संकेतलिपि, शीघ्रलिपि, त्वरालेखन तथा लघु–लेखन आदि कई शब्द प्रयोग हुए हैं । आशुलिपि दो शब्दों से मिलकर बनी है – आशु और लिपि । आशु का अर्थ है – संक्षिप्त रूप से एवं लिपि का अर्थ है – लिखना । ज्यामितिय रेखाओं द्वारा किसी भाषा को तीव्र गति से लिखने व पढ़ने की कला को आशुलिपि कहते हैं । अतः आशुलिपि न केवल ध्वनि लेखन है बल्कि कम–से–कम रेखाओं के द्वारा अधिक–से–अधिक ध्वनियों को लिखना है । आशुलिपि में हिन्दी भाषा के 33 व्यंजन वर्णों के लिए उनके आधे रेखा चिन्ह हैं । जिस कारण यह हिन्दी भाषा की लेखन प्रणाली से अधिक व्यवहारिक तथा श्रेष्ठ मानी गई है ।

आशुलिपि में व्यंजनों के लिए जो रेखाएं निर्धारित की गई हैं वे बहुत ही सरल व स्पष्ट हैं । इन रेखाओं के द्वारा हिन्दी के शब्दों को लिखना व पढ़ना बहुत ही सरल है । हिन्दी आशुलिपि सीखने से पहले हिन्दी भाषा का पर्याप्त ज्ञान होना भी आवश्यक है क्योंकि आशुलिपि में केवल मुख्य ध्वनियों को ही लिखा जाता है और अर्थ के अनुसार ही उसका अनुवाद किया जाता है ।

प्रशिक्षार्थियों को अध्यायों में दिये गए नियमों व अपवादों का भी अध्ययन भली–भांति करना चाहिए और इसमें दिये गए उदाहरणों के शब्दों को बार–बार लिखकर अभ्यास करना चाहिए । इन शब्दों के अभ्यास के बाद प्रत्येक अध्याय के अन्त में दिये गए अभ्यासों को भी बार–बार लिखें । आशुलिपि में दिये गए अभ्यासों को बार–बार पढ़ना और लिखना चाहिए क्योंकि इसके अभ्यास द्वारा प्रशिक्षार्थी को आशुलिपि को शुद्ध लिखने व पढ़ने में आसानी होगी ।

आशुलिपि कला सीखने के लिए यह आवश्यक है कि इसका अभ्यास प्रतिदिन किया जाए । अगर प्रशिक्षार्थी इसका अपनी इच्छानुसार कभी अभ्यास करे या कभी ना करे तो वह इस कला को नहीं सीख सकेगा । यदि प्रशिक्षार्थी प्रतिदिन एक घण्टा या इससे अधिक आशुलिपि का अध्ययन व अभ्यास करता है तो कुछ ही समय में वह इस कला को तीव्र गति से लिखना व पढ़ना सीख जाएगा । मानक आशुलिपि एक सम्पूर्ण प्रणाली है । कोई भी व्यक्ति केवल इस पुस्तक के लगातार अध्ययन व प्रयास द्वारा इस प्रणाली को सीख सकता है ।

प्रशिक्षार्थियों को निर्देश

हिन्दी शार्टहैंड की विभिन्न प्रणालियों में से मानक आशुलिपि को ही श्रेष्ठ प्रणाली माना गया है । विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ही इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि वे एक ऐसी कला सीख रहे हैं जिसमें बोले गए भाषणों को लिखना, पढ़ना और उसका लिप्यांतरण करना है । आशुलिपि के रेखा संकेतों को बार–बार लिखकर उन्हें हिन्दी भाषा में लिखना चाहिए । आशुलिपि में शब्दों का शुद्ध उच्चारण आवश्यक होता है । प्रारम्भ में प्रशिक्षार्थी को कुछ कठिनाइयां अवश्य होंगी, परन्तु अभ्यास द्वारा धीरे–धीरे उन्हें पढ़ने की आदत पड़ जाएगी ।

आशुलिपि लिखने के लिए एक पेन (फाउन्टेन पेन) या पेंसिल एवं लाइनदार कागज का प्रयोग किया जाना चाहिए । पेन की अपेक्षा पेंसिल का प्रयोग अधिक अच्छा रहता है । अतः विद्यार्थी उच्च गति प्राप्त करने के लिए पेन या पेंसिल का प्रयोग कर सकते हैं ।

पेन या पेंसिल को हल्का एवं इस प्रकार पकड़िए जिससे रेखाएं आसानी से लिखी जा सकें । हाथ की कलाई को कापी या मेज पर न रखें । बाएं हाथ का निचला हिस्सा मेज के किनारे पर हो जिससे हाथ को घुमाने में अधिक सुविधा रहेगी । आशुलिपि लिखने वाले को बोलने वाले व्यक्ति के सामने ही बैठना चाहिए । कापी मेज के किनारे से समानान्तर हो । यदि पेन से लिखना है तो निब पतली और लचकदार होनी चाहिए, कड़ी और मोटी नही । जिससे मोटी एवं पतली रेखाएं आसानी से लिखी जा सकें एवं उनका अन्तर स्पष्ट नज़र आए । कापी के कागज का चिकना होना आवश्यक है । कापी के एक तरफ समाप्त होने पर ही कापी के दूसरी ओर से लिखना चाहिए । आशुलिपि लिखते समय कागज को बायें हाथ की अंगुली और अंगूठे से पकड़े रखिए ताकि कागज को उलटने में आसानी रहे ।

आशुलिपि की निपुणता न केवल हिन्दी भाषा को लिखना है बल्कि इसके द्वारा सभी प्रकार के तकनीकी, ऐतिहासिक, राजनैतिक एवं अन्य विषयों को सरलतापूर्वक लिखना है । फिर भी आशुलिपि में अधिक ज़ोर बोल–चाल की भाषा, भाषण, व्याख्यान, कार्यालय संबंधी विषयों पर अधिक दिया गया है । मानक आशुलिपि को सफलतापूर्ण सीखने के लिए प्रणाली का पूर्ण रूप से अध्ययन करना आवश्यक है । अधिक–से–अधिक संक्षिप्त संकेतों के प्रयोग द्वारा ही उच्च गति प्राप्त की जा सकती है । प्रतिदिन निश्चित समय पर आशुलिपि का अभ्यास करके उसे पढ़कर उसका लिप्यांतरण करना अत्यन्त आवश्यक है ।

यूनिट 1. आशुलिपि का परिचय

परिचय

आप सब हिन्दी भाषा से भली–भांति परिचित होंगे । हिन्दी भाषा में यदि आपको कुछ लिखने के लिए कहा जाए तो आप इसे आसानी से लिख सकेंगे, परन्तु तीव्र गति से बोले जाने पर लिखना मुश्किल होगा । अतः किसी व्यक्ति द्वारा तीव्र गति से बोले गए कथनों को लिखने हेतु ही आशुलिपि का विकास हुआ । ध्वनि के आधार पर ज्यामितीय रेखाओं द्वारा किसी भाषा को तीव्र गति से लिखने या पढ़ने की कला को आशुलिपि कहते हैं । आशुलिपि न केवल ध्वनि–लेखन है, बल्कि कम–से–कम रेखाओं के द्वारा अधिक–से–अधिक ध्वनियों को लिखना है । यह एक ऐसी कला है जिसमें आशुलिपिक बोले गए भाषणों आदि को लिखता है और उनका अनुवाद करता है । नीचे दिये गए एक उदाहरण को देखिए –

आवश्यक ....

यह काम आवश्यक है ....

आपने उपर्युक्त उदाहरण में देखा कि हिन्दी भाषा के सामने जो संकेत बनाए गए हैं उन्हें बनाने में कम समय लगा है । यही सही मायने में आशुलिपि है । इस समय हिंदी आशुलिपि की कई प्रणालियां जैसे– ऋषि, बिष्ट, सिंह, टंडन एवं मानक आदि प्रचलित हैं । चूंकि अधिकांशतः भारत सरकार के मान्यता प्राप्त प्रशिक्षण संस्थानों में मानक प्रणाली का ही अधिकतर प्रयोग किया जा रहा है तथा इसमें सभी प्रचलित प्रणालियों एवं अंग्रेजी आशुलिपि के सिद्धांतों का समावेश है । अतः हमने मानक आशुलिपि, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मुद्रित पुस्तक का अनुसरण करते हुए, मानक प्रणाली को ही आधार मानकर इस पुस्तक के अध्यायों व अभ्यासों की रचना की है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :–

- हिन्दी आशुलिपि का विकास
- आशुलिपि का अर्थ
- आशुलिपि के आवश्यक अंग
- आशुलिपि का महत्व एवं क्षेत्र
- आशुलिपि लिखने के लिए आवश्यक सामग्री
- श्रुतलेख (डिक्टेशन) लेते समय बैठने की सही स्थिति
- आशुलिपिक के आवश्यक गुण

1.1 आशुलिपि का विकास

हिन्दी आशुलिपि का इतिहास भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास से जुड़ा हुआ है । 19वीं शताब्दी के अंत में भारत में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध असंतोष व्यापक रूप में धारण कर चुका था । उस समय देश के राष्ट्रीय नेता ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध हिंन्दी में भाषण देते थे । राष्ट्रीय नेताओं की प्रेरणा पर काशी नागरिक प्रचारिणी सभा द्वारा पहली बार हिन्दी आशुलिपि की एक पुस्तक 1907 ईस्वी में प्रकाशित हुई । इसके उपरान्त धीरे–धीरे अन्य आशुलिपि की पुस्तकें भी लिखी गईं । अंग्रेजी शासकों को भारतीय राजनीतिक विद्रोहियों की गतिविधियों की जानकारी लेने हेतु अपने गुप्तचरों को हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण देने की आवश्यकता महसूस हुई । इसलिए अंग्रेजी शासकों ने लखनऊ के क्रिश्चियन स्कूल ऑफ कामर्स में हिन्दी आशुलिपि सिखाने की व्यवस्था की । इस स्कूल में हिन्दी आशुलिपि सिंह प्रणाली पुस्तक के द्वारा सिखाई गई । इसी प्रकार इलाहाबाद के श्री ऋषि लाल अग्रवाल ने भी एक हिन्दी आशुलिपि पुस्तक लिखी जो ऋषि प्रणाली के नाम से जानी गई । तब से लेकर भारत के स्वतंत्र होने तक यही दो प्रणालियां चलती रहीं । शासन में हिन्दी आशुलिपि की उपयोगिता न होने से इसे बढ़ावा नहीं मिला । राष्ट्रीय सरकार के गठन के बाद पहली बार 1946 ईस्वी में सेंट्रल लेजिस्लेटिव काउंसिल में चार हिन्दी आशुलेखकों की नियुक्ति हुई और हिन्दी आशुलिपि को प्रोत्साहन मिला । आजादी के बाद हिन्दी को राजभाषा का स्थान प्राप्त होने से कई आशुलिपि की पुस्तकें लिखी गईं जिनमें पिटमैन त्वरालेखन, हिन्दी आशुलिपि एवं नागरी आशुलिपि आदि हैं । ये सभी पुस्तकें पिटमैन सिद्धांत के आधार पर लिखी गई थीं । इसके उपरांत मानक आशुलिपि एवं नवीन आशुलिपि पद्धतियां सामने आईं जो सिंह प्रणाली के आधार पर विकसित हुईं ।

1.2 आशुलिपि का अर्थ

आशुलिपि दो शब्दों से मिलकर बनी है– आशु और लिपि । आशु का अर्थ है– संक्षिप्त रूप में एवं लिपि का अर्थ है– लिखना । अतः आशुलिपि किसी भी भाषा को तीव्र गति से संक्षिप्त रूप में लिखने की एक कला है । ध्वनि के आधार पर तीव्र गति से बोली गई भाषा को रेखागणितीय आधार पर रेखाओं द्वारा लिखकर उसे पढ़ने एवं उसका पुनः उसी भाषा में लिप्यांतरण (Transcription) करने की कला को आशुलिपि कहा जाता है । जिस प्रकार हिन्दी भाषा सीखने के लिए पहले उसकी व्यंजन रेखाओं जैसे– क, ख, ग, घ, आदि को सीखा जाता है, ठीक उसी प्रकार हिन्दी भाषा में आशुलिपि सीखने के लिए पहले उसकी व्यंजन रेखाओं के लिए रेखाक्षरों को बनाना सीखा जाता है ।

आशुलिपि के तीन अभिन्न अंग हैं– श्रुतलेख लिखना, लिप्यांतरण करना एवं टंकण करना । आशुलिपि एक कला है जिसमें मुख्य रूप से तीन प्रकार के कौशल को शामिल किया जाता है ।

- सुनने की कला : भिन्न–भिन्न प्रकार के लोगों के उच्चारण को समझने की क्षमता ।
- मानसिक कौशल : आउट–लाईन को याद रखना, शब्दों को पहचानना तथा तीव्र गति से बोले गए शब्दों को लिखना ।
- मैनुअल कौशल (हाथ से लिखने की कला) : श्रुतलेख के दौरान पेन, पेंसिल एवं नोटबुक आदि को पकड़ने की कुशलता एवं श्रुतलेख को टंकण करना ।

1.3 आशुलिपि का महत्व

वक्ता के भाषणों को लिपिबद्ध कर उनका भाषा लिपि में सही प्रतिलेखन करना आशुलिपिकों के द्वारा ही संभव है क्योंकि इसमें भाषा ज्ञान एवं विवेक की आवश्यकता होती है । जिसकी तुलना मशीन से नहीं की जा सकती । उद्योग और व्यवसाय के बढ़ने से आशुलिपिकों की मांग दिन–प्रति–दिन बढ़ती जा रही है । यह एक ऐसा निश्चित ज्ञान है जिसके द्वारा शीघ्र तथा आकर्षक रोजगार उपलब्ध हो सकता है । आशुलिपि के महत्व को निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर समझा जा सकता है :

- शब्दों को पूर्ण रूप से लिखने के बजाए आशुलिपि में रेखाओं के द्वारा तीव्र गति से लिखा जा सकता है ।
- इसके द्वारा अधिकतर लोगों को रोजगार प्राप्त होता है ।
- इसके द्वारा समय और ऊर्जा की बचत होती है ।
- मस्तिष्क में अचानक आए विचारों को तुरंत लिखा जा सकता है ।
- इसके द्वारा गोपनियता को बनाए रखा जा सकता है ।
- आशुलिपि का विस्तृत क्षेत्र है । इसका प्रयोग न केवल भाषणों को लिखने के लिए किया जाता है, बल्कि किसी भी प्रकार के पत्र–व्यवहार व दूसरे दस्तावेजों को लिखने के लिए भी किया जाता है । इसके अतिरिक्त रेडियो और टेलीविजन के द्वारा प्रसारित समाचार आदि को तीव्र गति से लिखने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

1.4 आशुलिपि लिखते समय आवश्यक लेखन सामग्री, आशुलिपिक के बैठने की स्थिति एवं तकनीक

आशुलिपि एक कला है जिसके लिए विशेष प्रकार के साजो–सामान एवं सामग्री की आवश्यकता होती है । जिसका विवरण नीचे दिया गया है :

- आशुलिपि नोट बुक :

  स्कूल और कालेजों में प्रयोग की जाने वाली नोटबुक का प्रयोग आशुलेखन के लिए नहीं किया जाना चाहिए । इसके लिए एक विशेष प्रकार की शार्टहैंड नोटबुक होती है जिसकी चौड़ाई साधारण नोटबुक की चौड़ाई से कम होती है ।

- पेन एवं पेंसिल

  आशुलिपि के लिए एक ऐसे पेन अथवा पेंसिल का प्रयोग करना चाहिए जो केवल आशुलिपि लिखने के लिए प्रयोग किये जाते हों । किसी भी साधारण पेन अथवा पेंसिल का प्रयोग इस कला के लिए नहीं करना चाहिए ।

– पाठ्य पुस्तिका

इस कला को सीखने हेतु कई पाठ्य पुस्तिकाएं बाजार में उपलब्ध हैं । एक अच्छा आशुलिपिक बनने के लिए इन पाठ्य पुस्तकों में दिए गए अभ्यासों की बार–बार प्रैक्टिस करनी चाहिए ।

– फर्नीचर और ले–आउट

आशुलिपिक को एक ऐसी कुर्सी का प्रयोग करना चाहिए जो बिना बाजू की हो तथा जिसकी ऊंचाई लगभग 40 से 45 सेंटीमीटर हो । इसी प्रकार आशुलिपिक को एक ऐसे टेबल का प्रयोग करना चाहिए जिसकी ऊंचाई लगभग 78 सेंटीमीटर हो । परन्तु शार्टहैंड नोट लिप्यांतरण के लिए लगभग 70 सेंटीमीटर ऊंचाई की नीची टेबल का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि यह टाइपराईटर के प्रयोग के लिए अधिक सुविधाजनक होती है ।

आशुलिपि लिखते समय तीन बातों को ध्यान में रखना चाहिए – गति, शुद्धता एवं निश्चिंतता । इनको प्राप्त करने हेतु एक आशुलिपिक को श्रुतलेख लिखते समय निम्न बैठने की स्थिति एवं तकनीक को ध्यान में रखना चाहिए :

– बैठने की शारीरिक स्थिति : कुर्सी पर पीठ सीधी करके बैठना चाहिए । टेबल पर नोट बुक और सिर के बीच की दूरी लगभग 40 सेंटीमीटर होनी चाहिए । पैरों को सदैव जमीन पर ही रखना चाहिए ।

– आशुलिपि नोट बुक की स्थिति : नोट बुक को इस प्रकार पकड़ना चाहिए कि यदि पेज समाप्त हो जाए तो अगले पेज को बिना रूके बदला जा सके ।

– बाजू , हाथ एवं अंगुलियों की स्थिति : बायीं कोहनी को मेज पर रखें और शरीर का सारा भार बायीं बाजू पर डालें ।

– रेखाओं का आकार : रेखाओं को न तो अधिक बड़ा और न ही अधिक छोटा लिखना चाहिए । इनका आकार लगभग 1/6 ईंच होना चाहिए ।

इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि जिस कमरे में बैठकर आशुलिपि लिखनी है, वह शोरमुक्त होना चाहिए । हमें कमरे के दरवाजों को बन्द कर देना चाहिए जिससे बाहर से कोई शोर न सुनाई दे । कमरे में उचित प्रकाश की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि हल्की लाइनों को आराम से पहचाना जा सके ।

1.5 आशुलिपिक के आवश्यक गुण

- अच्छा भाषा ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान : एक अच्छे आशुलिपिक में अच्छा भाषा ज्ञान और सामान्य ज्ञान होना आवश्यक होता है जिससे कि वह वक्ता के सही आशय को समझ सके और प्रतिलेखन कर सके ।
- नियमितता : एक आशुलिपिक के कार्य जैसे– आगन्तुकों से समय पर मिलना एवं टेलीफोन कॉल को सुनना आदि । इन सब कार्यों को भली–भांति करने हेतु जरूरी है कि आशुलिपिक को नियत समय से कुछ समय पहले कार्यालय में उपस्थित होना चाहिए ।
- सहनशीलता एवं व्यक्तिगत गुण : आशुलिपिक को आगन्तुकों से व्यवहार करते समय सहनशीलता का परिचय देना चाहिए । वह आत्मविश्वासी, शान्तिप्रिय एवं धैर्यशील होना चाहिए ।
- विनयशील, मृदुभाषी एवं व्यवहार कुशल : उसे विनयशील, मृदुभाषी एवं व्यवहार कुशल होना चाहिए ताकि वह अपने उच्चधिकारियों का विश्वासपात्र बन सके और अपना भविष्य उज्ज्वल बना सके ।
- आकर्षक व्यक्तित्व : आशुलिपिक को आगन्तुकों एवं उच्च पदाधिकारियों के सम्पर्क में रहना पड़ता है, इसलिए उसका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक होना चाहिए । उसे उचित वेशभूषा धारण करनी चाहिए । अनावश्यक कार्यो में समय बरबाद नहीं करना चाहिए ।
- ईमानदार : आशुलिपिक को अपना कार्य बड़ी ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक करना चाहिए ।
- अनुशासित : आशुलिपिक को किसी भी कार्य के प्रति लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए । उसे हमेशा अनुशासित होकर कार्य करना चाहिए ।
- एकाग्रचित्ता : कार्य करते समय आशुलिपिक का ध्यान इधर–उधर नहीं भटकना चाहिए । बल्कि उसे सदैव एकाग्रचित होकर अपना कार्य करना चाहिए जिससे कि गलती होने की संभावना ही ना रहे ।

पुनरीक्षा प्रश्न
प्रश्न 1.1

1. आशुलिपि का अर्थ स्पष्ट कीजिए ?
2. आशुलिपि का क्या महत्व है ?
3. एक अच्छे आशुलिपिक के गुण संक्षेप में लिखिये ?
4. आशुलिपि लिखते समय आशुलिपिक के बैठने की स्थिति एवं तकनीक को संक्षिप्त रूप में बताइये ?

प्रश्न 1.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) आशुलिपि .... शब्दों से मिलकर बनी है – आशु और .... ।

(2) ....के आधार पर तीव्र गति से बोली गई भाषा को रेखाओं द्वारा लिखने और पढ़ने की कला को .... कहते हैं ।

(3) आशुलिपि के तीन अभिन्न अंग हैं – श्रुतलेख लिखना, ... और .... ।

(4) आशुलिपि के द्वारा समय और .... की बचत होती है ।

(5) एक अच्छे आशुलिपिक में एकाग्रता, नियमितता, सहनशीलता और ....आवश्यक गुण होने चाहिए ।

प्रश्न 1.3

निम्नलिखित में से सही/गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

(1) आशुलिपि में शब्दों के आधार पर रेखाक्षर लिखे जाते हैं न कि ध्वनि के आधार पर ।

(2) आशुलिपि के प्रयोग में आने वाली आवश्यक सामग्री के अन्तर्गत आशुलिपि नोटबुक, पेन एवं पेंसिल आवश्यक होती है ।

(3) आशुलिपि के द्वारा शब्दों को पूर्ण रूप से लिखा जाता है ।

(4) आशुलिपि के द्वारा गोपनीयता को बनाए रखा जा सकता है ।

(5) एक अच्छे आशुलिपिक में अनियमितता का होना अनिवार्य है ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 1.2 –– (1) दो, लिपि । (2) ध्वनि, आशुलिपि (3) लिप्यांतरण करना, टंकण करना (4)ऊर्जा (5) मृदुभाषी ।

प्रश्न 1.3 –– (1) गलत । (2) सही (3) गलत (4) सही (5) गलत ।

यूनिट 2. व्यंजन रेखाएं एवं उनका मिलान

परिचय

पिछले पाठ में आपने आशुलिपि की परिभाषा और उसकी उपयोगिता के बारे में पढ़ा । जिस प्रकार हिन्दी भाषा सीखने के लिए सर्वप्रथम "व्यंजन ध्वनियों" जैसे– क, ख, ग, घ आदि को जानना आवश्यक होता है उसी प्रकार हिन्दी आशुलिपि सीखने के लिए भी "व्यंजन ध्वनियों" के लिए रेखाक्षर को सीखना आवश्यक होता है । इन रेखाक्षरों को रेखागणितीय आधार पर बनाया जाता है । हिन्दी भाषा में ध्वनि के आधार पर रेखाक्षरों के लिए कुल **33** व्यंजन–ध्वनियां हैं ।

इस अध्याय में हम व्यंजन रेखाओं को बनाना सीखेंगे । इनके आकार व इनकी दिशा के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे । यह भी जान सकेंगे कि कौन–सी व्यंजन रेखा हल्की और कौन–सी व्यंजन रेखा गहरी बनाई जाती है । इन व्यंजन रेखाओं को सीखने हेतु इनका बार–बार अभ्यास करना नितांत आवश्यक है । व्यंजन रेखाएं बनाने के पश्चात् आप यह भी सीखेंगे कि यदि दो या दो से अधिक व्यंजन रेखाएं एक–साथ आ जाएं तो इन रेखाओं को आपस में किस प्रकार मिलाकर लिखा जाता है । अतः इस अध्याय में रेखाओं के मिलान संबंधित नियमों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे ।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :–

- व्यंजन का अर्थ
- हिन्दी भाषा में कुल व्यंजन रेखाएं
- व्यंजनों का वर्गीकरण
- दिशाओं के आधार पर व्यंजन रेखाओं के प्रकार
- रेखाक्षरों का आकार एवं हल्की और गहरी व्यंजन रेखाएं
- रेखाओं का मिलान

2.1 व्यंजन का अर्थ एवं वर्गीकरण

"मुख या गले के किसी भाग में स्पर्श अथवा सांस के घर्षण से उत्पन्न ध्वनि को व्यंजन कहते हैं" । दूसरे शब्दों में– जिन वर्णों या अक्षरों का उच्चारण बिना स्वर की सहायता से न हो सके, उन्हें "व्यंजन" कहते हैं जैसे– क, ख, ग, घ आदि ।

हिन्दी भाषा में ध्वनि के आधार पर रेखाक्षरों के लिए कुल **33** "व्यंजन–ध्वनियां" हैं । इनमें **"व", "य"** तथा **"ह"** को छोड़कर अन्य सभी व्यंजन–ध्वनि का संकेत करने के लिए साधारण सीधी रेखाओं तथा वक्र रेखाओं का प्रयोग किया जाता है । आशुलिपि के रेखाक्षरों को रेखागणितीय आधार पर निम्न तीन चित्रों के द्वारा सरलता से समझा तथा याद किया जा सकता है :

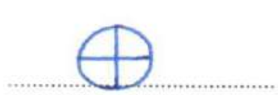

व्यंजन रेखाओं के लिखने की निश्चित विधि है, जो सभी स्थितियों में अपरिवर्तनीय है । रेखाओं को किस दिशा में लिखना है इसके लिए तीर–चिन्ह का प्रयोग किया गया है । रेखा–संकेतों के लिखते समय ऊपर से नीचे या बाएं (Left) से दाएं (Right) आदि की दिशा में भी परिवर्तन नहीं किया जा सकता ।

व्यंजन रेखा **"च "** तथा **"र"** को लिखते समय इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि **"च" संकेत हमेशा नीचे की ओर** लिखा जाता है और यह लम्ब के साथ **60 डिग्री** का कोण बनाता है, दूसरी ओर **"र" हमेशा ऊपर की ओर लिखा जाता है** और वह आधार पर **30 डिग्री** का कोण बनाता है । जैसे– **"च"** .... **"र"** .... । व्यंजनों के एक वर्ग जैसे– क, ख, ग, घ के लिए एक ही रेखा का प्रयोग किया जाता है । इसलिए रेखाक्षरों में अन्तर करने के लिए उन्हें मोटा–पतला करके दर्शाया जाता है । इसके अतिरिक्त रेखाओं के मध्य में छोटी–पतली टिक से काट कर भी अन्तर दर्शाया जाता है । वक्रगामी रेखा बनाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इनके दोनों किनारे पतले रहें ये केवल मध्य में ही मोटे हों जैसे–

क .... ख .... ग .... घ ....

च .... छ .... ज.................. झ ....

ट .... ठ .... ड .... ढ .... आदि ।

व्यंजन संकेतों का अभ्यास करते समय इनकी लम्बाई पर विशेष रूप से ध्यान अवश्य देना चाहिए । **संकेत हमेशा समान लम्बाई के हों और वे आवश्यकता अनुसार पतले तथा मोटे भी हों । इसलिए रेखाएं जिस भी लम्बाई में लिखी जाए, उनकी लम्बाई सब जगह एक जैसी होनी चाहिए** । इस बात का अनुसरण करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि बाद में नियमों में रेखा को दुगुना (Double) और आधा (Half) करके लिखने की पद्धति भी अपनाई गई है । अतः यदि हम समान लम्बाई की रेखा नहीं बनाएंगे तो रेखाक्षरों को पढ़ने में मुश्किल हो सकती है । इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थी प्रारम्भ से ही रेखाओं को बनाते समय इनकी एक निश्चित लम्बाई का ध्यान रखें ।

व्यंजनों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है :

- स्पष्ट / स्पर्श व्यंजन : हिन्दी भाषा में व्यंजन "क" से लेकर "म" तक अर्थात क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग एवं प वर्ग व्यंजन स्पष्ट / स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं ।
- नासिक्य / अनुनासिक्य व्यंजन : स्पष्ट / स्पर्श व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग के पांचवे व्यंजन जैसे– "क" वर्ग का ङ, "ट" वर्ग का ण, "त" वर्ग का न तथा "प" वर्ग का म नासिक्य व्यंजन कहलाते हैं । क्योंकि जब हम नासिक्य व्यंजन का उच्चारण करते हैं तो इनके उच्चारण में वायु नासिका विविर से बाहर निकलती है ।
- अंतस्थ व्यंजन : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में वायु मुख के अंदर की ओर प्रवेश करती है उन्हें अंतस्थ व्यंजन कहते हैं । जैसे– य, र, ल एवं व अंतस्थ व्यंजन हैं ।
- ऊष्म व्यंजन : ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में वायु को तालुओं से संघर्ष करना पड़ता है अर्थात् जिनके उच्चारण में वायु बाहर निकलती है, उन्हें संघर्षी / ऊष्म व्यंजन कहते हैं जैसे– "श, "ष", "स" तथा "ह" को ऊष्म व्यंजन कहते हैं ।

आशुलिपि में व्यंजन रेखाएं तीन प्रकार से लिखी जाती हैं जो इस प्रकार हैं:—

(1) सरल रेखा व्यंजन (2) वक्र रेखा व्यंजन (3) संयुक्त रेखा व्यंजन ।

सरल रेखा व्यंजन

क .... ख .... ग .... घ ....

च .... छ .... ज .... झ ....

त .... थ .... द .... ध ....

प .... ब .... र–ड़ .... ढ़ ....

वक्र रेखा व्यंजन

ट .... ठ .... ड .... ढ ....

ण–न .... ङ ....

फ .... भ .... म ....

र–ड़ .... ढ़ .... ल ....

स .... श–ष .... ज़ ....

संयुक्त रेखा व्यंजन

य .... व .... ह ....

दिशाओं के आधार पर व्यंजन रेखाओं के प्रकार

दिशाओं के आधार पर व्यंजन रेखाओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है, जो इस प्रकार है :

- अग्रगामी / समतल / पड़ी रेखाएं : यह व्यंजन रेखाएं बायीं से दायीं दिशा की ओर बनाई जाती हैं ।
- अधोगामी रेखाएं : वह व्यंजन रेखाएं जो ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाती हैं, अधोगामी रेखाएं कहलाती हैं ।
- उर्ध्वगामी रेखाएं : वह व्यंजन रेखाएं जो नीचे से ऊपर की ओर बनाई जाती हैं, उन्हें उर्ध्वगामी रेखाएं कहते हैं ।

उपर्युक्त दिशाओं के आधार पर व्यंजन रेखाओं के वर्गीकरण के अतिरिक्त एक अन्य प्रकार की व्यंजन रेखा होती है जिसे **वक्रगामी रेखा** कहते हैं । यह व्यंजन रेखाएं थोड़ा–सा वक्र बनाते हुए लिखी जाती हैं । यह रेखाएं उपर्युक्त दी गई तीनों प्रकार की दिशाओं में लिखी जाती हैं ।

दिशाओं के आधार पर व्यंजन रेखाओं के प्रकार

अग्रगामी (पड़ी रेखाएं)	क …… ख …… ग …… घ ……
वक्रगामी	ड.(अंग) …… ण–न …… म ……
उर्ध्वगामी (नीचे से ऊपर)	य …… र–ड़ …… ढ़ …… व …… ह ……
वक्रगामी	ल …… श …… ष ……
अधोगामी / अधोमुखी (ऊपर से नीचे)	च …… छ …… ज …… झ …… प …… ब …… त …… थ …… द …… ध …… ह ……
वक्रगामी	स …… श …… ष …… ज़ …… ट …… ठ …… ड …… ढ …… फ …… भ ……

रेखाक्षरों का आकार एवं हल्की व गहरी व्यंजन रेखाएं

रेखाक्षरों का आकार लगभग 5 मिली मीटर होना चाहिए । व्यंजन रेखाओं का अभ्यास करते समय हमें इनकी शुद्धता और इनके आकार के बारे में बहुत सतर्क रहना चाहिए । अगर हम इनके आकार को बदलते रहेंगे तो आगे चलकर जब हमें इन रेखाओं को घटाना या दुगुना करना पड़ेगा तो हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है । यदि किसी कारणवश आपसे कोई स्ट्रोक/रेखाक्षर गलत बन जाता है तो उसे काटें और दोबारा लिखें ।

हल्की रेखाओं को पेन/पेंसिल से हल्के स्पर्श से लिखना चाहिए और गहरे रेखाक्षरों को बनाते समय हल्की रेखाओं की अपेक्षाकृत थोड़ा गहरा बनाना चाहिए । इन रेखाओं को निम्नलिखित चार्ट द्वारा समझाया गया है :

हल्की–गहरी रेखाओं के आधार पर व्यंजन रेखाओं का वर्गीकरण

हल्की (Light) रेखाएं		गहरी (Dark) रेखाएं	
क	ख	ग	घ
च	छ	ज	झ
त	थ	द	ध
प		ब	
र–ड़	ढ़		
र–ड़	ढ़		
ट	ठ	ड	ढ
ण–न		ङ (अंग)	
फ		भ	
म			
ल	ल		
स			
श–ष		ज़	
य	व		
ह	ह		

सभी व्यंजन रेखाओं को किस प्रकार लिखा जाता है, यह समझने के बाद उनकी क्रमबद्ध तालिका निम्न प्रकार है :–

व्यंजन रेखाओं की क्रमबद्ध रूप में तालिका

क	ख	ग	घ	ङ. (अंग) ....
च	छ	ज	झ	
ट	ठ	ड	ढ	ण ....
त	थ	द	ध	न ....
प	फ	ब	भ	म ....
य	र–ड़	ल	व	श–ष ....
स	ह	ज़	ढ़	

2.2 रेखाक्षरों का मिलान

जब दो या दो से अधिक रेखाओं को मिलाकर लिखा जाता है तो उसे रेखाओं का मिलान कहते हैं । रेखाओं का मिलान करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए –

– व्यंजन रेखाओं को दूसरी रेखाओं से मिलाकर लिखते समय कलम या पेंसिल को नहीं उठाना चाहिए ।

– रेखाक्षर का आकार लगभग 5 मिली मीटर होना चाहिए ।

– रेखाक्षरों को लिखते समय उनके हल्के एवं गहरेपन को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए ।

– रेखाक्षरों को लिखते समय इनकी दिशा पर भी ध्यान रखना चाहिए ।

– अगली रेखा का आरम्भ पिछली रेखा के अंत से अवश्य मिला होना चाहिए ।

जैसे– दम .... पर .... जग ....

उपर्युक्त उदाहरण में आपने देखा कि पहली रेखा जहां खत्म हो रही है वहीं से बिना रूके दूसरी रेखा को बनाना प्रारम्भ कर दिया है ।

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 2.1

1. व्यंजन का अर्थ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ?
2. आशुलिपि में व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं, उदाहरण सहित बताइये ?
3. रेखाक्षरों के मिलान से क्या तात्पर्य है । इनके मिलान करते समय किन–किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

प्रश्न 2.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) हिन्दी भाषा में ध्वनि के आधार पर रेखाक्षरों के लिए कुल .... व्यजन ध्वनियां हैं ।

(2) जिन वर्णों या अक्षरों का उच्चारण बिना किसी स्वर की सहायता से न हो सके उन्हें .... कहते हैं ।

(3) आशुलिपि में व्यंजन रेखाएं तीन प्रकार की होती हैं – सरल रेखा व्यंजन, वक्र रेखा व्यंजन एवं .... ।

(4) रेखाक्षरों का आकार लगभग .... होना चाहिए ।

(5) जब दो या दो से अधिक रेखाओं को मिलाकर लिखा जाता है तो उसे .... कहते हैं ।

प्रश्न 2.3

निम्नलिखित में से सही/गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

(1) आशुलिपि में सभी रेखाओं को हल्की रेखाओं द्वारा बनाया जाता है ।

(2) ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में वायु मुख के अन्दर की ओर प्रवेश करती है, उन्हें स्पष्ट व्यंजन कहते हैं ।

(3) अधोगामी रेखाओं को हमेशा ऊपर से नीचे की ओर लिखा जाता है ।

(4) रेखाक्षरों का मिलान करते समय इनकी दिशा पर भी ध्यान देना आवश्यक होता है ।

(5) व्यंजन रेखा च का संकेत सर्वदा नीचे की ओर लिखा जाता है जो लम्ब के साथ 60 डिग्री का कोण बनाता है ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1

शार्टहैंड (आशुलिपि) में लिखिए :

1.	प	क	स	न	म	र	स	ख
2.	ल	ख	ट	द	श	ग	म	ज
3.	ख	ह	र	व	घ	फ	त	य
4.	ग	ड़	फ	ज	ज	झ	ढ	छ
5.	य	र	म	ल	श	त	व	घ
6.	ष	न	य	र	ड	थ	ढ़	ड़
7.	ख	घ	छ	झ	ङ.	ठ	ढ	ण
8.	थ	ध	ढ़	ष	ल	ज	व	ह

पुनरीक्षा प्रश्न

उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 2.2 —— (1) 33 । (2) व्यंजन (3) संयुक्त रेखा व्यंजन (4) 5 mm
(5) रेखाओं का मिलान ।

प्रश्न 2.3 —— (1) गलत । (2) गलत । (3) सही । (4) सही । (5) सही ।

(15)

यूनिट 3. स्वर

परिचय

पिछले अध्याय में आपने व्यंजन रेखाएं एवं उनके मिलान के नियम पढ़े व उनका अभ्यास किया । इस अध्याय में आप "स्वर" से संबंधित नियमों के बारे में जानेंगे । कुछ ऐसे शब्द, कारक की विभक्ति एवं सर्वनाम व उसके रूप जिनका प्रयोग हिन्दी भाषा में बहुतायत होता है, इनके लिए कुछ विशेष संक्षिप्त रेखा संकेतों एवं चिन्हों का निर्धारण किया गया है जो "शब्द चिन्ह" कहलाते हैं । जब दो या दो से अधिक शब्दों को एक साथ प्रयोग किया जाता है और जिनके लिए पहले से ही शब्द चिन्ह निर्धारित हैं, उन सभी को मिलाकर एक रेखा शब्द बनाया जाता है जिसे "वाक्यांश" कहते हैं ।

इस अध्याय में आप वाक्यांश, द्विध्वनिक स्वर एवं मात्राएं तथा त्रिध्वनिक स्वर एवं मात्राएं, "र" तथा "ह" के वैकल्पिक संकेतों के नियमों के साथ–साथ रेखा "व" को पूरा न लिखकर अर्धवृत्त के द्वारा संकेत करने के नियम के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे ।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :–

- स्वर का अर्थ एवं प्रकार
- रेखाक्षरों में स्वर ध्वनियों का स्थान
- दो व्यंजनों के बीच स्वर संकेत एवं व्यंजनों के लिखने का स्थान
- शब्द चिन्ह का अर्थ, कारक की विभक्ति एवं सर्वनाम के लिए प्रयुक्त किए गए शब्द चिन्ह
- वाक्यांश से अभिप्राय एवं इसके लिखने के नियम
- द्विध्वनिक स्वर एवं मात्राएं
- त्रिध्वनिक स्वर एवं मात्राए
- ऊपर व नीचे की ओर लिखे जाने वाले "र" एवं "ह" के नियम
- संक्षिप्त "व" का प्रयोग

3.1 स्वर का अर्थ

मुख से अबाध गति से (बिना किसी रूकावट के) निकलने वाली ध्वनि को स्वर कहते हैं । दूसरे शब्दों में, स्वर वह ध्वनि है जिसका उच्चारण करने के लिए किसी अन्य वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती । हिन्दी भाषा में 12 स्वर होते हैं, किन्तु हिन्दी आशुलिपि में कुल 10 (दस) स्वरों को ही लिया गया है ।

स्वर के प्रकार – दीर्घ स्वर और अल्प स्वर :–

स्वर दो प्रकार के होते हैं– दीर्घ स्वर एवं अल्प स्वर । ऐसे स्वर जिनके उच्चारण में अधिक समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं । इसी प्रकार जिनके उच्चारण में कम समय लगे उन्हें अल्प स्वर कहते हैं ।

आशुलिपि की दृष्टि से हिन्दी भाषा मे कुल दस स्वर–ध्वनियां हैं जिनमें छः दीर्घ तथा चार अल्प हैं ।

दीर्घ स्वर– आ, ए, ई; औ, ओ, ऊ

अल्प स्वर– ऐ, — इ; — अ, उ

3.1.1 बिन्दु तथा डैश से अंकित किए जाने वाले स्वरों का पृथक–पृथक वर्गीकरण

दीर्घ स्वरों का संकेत मोटे बिन्दु व मोटे डैश से किया जाता है तथा अल्प स्वरों का संकेत हल्के बिन्दु व हल्के डैश से किया जाता है । इन स्वरों का पृथक–पृथक वर्गीकरण निम्न प्रकार है :

स्वर संकेत :– दीर्घ स्वरों का संकेत **मोटे बिन्दु** व **मोटे डैश** से किया जाता है –

स्वर स्थान	मोटा बिन्दु (•)	मोटा डैश (-)
प्रथम स्थान	आ – आज .... जा	औ – और .... तौर ....
द्वितीय स्थान	ए – एक .... के	ओ – ओम .... मो ....
तृतीय स्थान	ई – ईख .... खी	ऊ – ऊन .... नू ....

अल्प स्वरों का संकेत **हल्के बिन्दु** व **हल्के डैश** से किया जाता है –

स्वर स्थान	हल्का बिन्दु (·)	हल्का डैश (-)
प्रथम स्थान	ऐ – ऐनक .... बैल	————
द्वितीय स्थान	————	अ – अब ....
तृतीय स्थान	इ – इक .... कि	उ – उधर .... पुल ....

3.1.2 रेखाक्षरों में स्वर ध्वनियों का स्थान

प्रत्येक व्यंजन में स्वर लगाने के लिए तीन स्थान होते हैं । व्यंजन के **आरम्भ, मध्य तथा अन्त में** । ये उसी के अनुसार क्रमशः **प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान** के स्वर कहे जाते हैं । इन स्वरों के स्थान को निम्न चार्ट द्वारा जाना जा सकता है ।

"क" व्यंजन 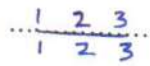

"च" व्यंजन 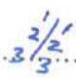

"त" व्यंजन 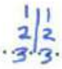

"प" व्यंजन

"र–ड़" व्यंजन 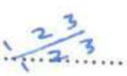

"ट" व्यंजन 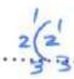

"ण–न" व्यंजन 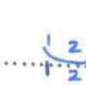

"फ" व्यंजन 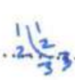

"म" व्यंजन 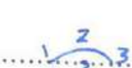

"ल" व्यंजन 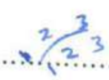

"स" व्यंजन

"श–ष" व्यंजन 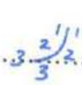

"य" व्यंजन 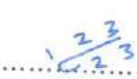

"व" व्यंजन

"ह" व्यंजन 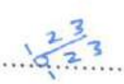 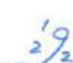

उपर्युक्त चार्ट द्वारा हम निम्न तथ्यों को जान पाये :

1. स्वर स्थानों की गणना प्रत्येक रेखा के आरम्भ होने के स्थान से की जाती है ।
2. यदि कोई रेखा ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाती है तो उस स्थिति में स्वर स्थान की गणना ऊपर से नीचे की ओर की जायेगी ।
3. यदि कोई रेखा नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाती है तो उस स्थिति में स्वर स्थान की गणना नीचे से ऊपर की ओर की जायेगी ।
4. पड़ी (Horizontal) रेखाओं में स्वरों की गणना बाईं (Left) से दाईं (Right) ओर की जाती है ।
5. जिस प्रकार स्वर के तीन स्थान होते हैं उसी प्रकार व्यंजनों को भी स्वर के अनुसार तीन स्थानों पर लिखा जाता है । जैसे:– **पहला स्थान लाइन से थोड़ा ऊपर, दूसरा स्थान लाइन पर तथा तीसरा स्थान लाइन को काटते हुए** । प्रथम स्वर ध्वनि रेखा शब्द के स्थान का निर्णय करती है ।

– स्वरों को रेखाओं के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थानों पर लगाने की विधि

मानक आशुलिपि के अनुसार स्वरों को रेखाओं के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थानों पर लगाने की विधि इस प्रकार है :

1. मोटा बिन्दु प्रथम स्थान में दीर्घ स्वर "आ", द्वितीय स्थान में दीर्घ स्वर "ए" तथा तीसरे स्थान में दीर्घ स्वर "ई" का संकेत करता है ।

2. मोटा डैश प्रथम स्थान में दीर्घ स्वर "औ", द्वितीय स्थान में दीर्घ स्वर "ओ" तथा तीसरे स्थान में दीर्घ स्वर "ऊ" का संकेत करता है ।

3. हल्के बिन्दु व हल्के डैश के केवल दो–दो स्थान हैं । प्रथम स्थान में हल्का बिन्दु अल्प स्वर "ऐ" तथा तीसरे स्थान में अल्प स्वर "इ" का संकेत करता है ।

4. हल्का डैश द्वितीय स्थान में अल्प स्वर "अ" तथा तीसरे स्थान में अल्प स्वर "उ" का संकेत करता है ।

5. अल्प स्वरों के हल्के संकेत उन स्थानों में लिखे जा सकते हैं जहां दीर्घ स्वरों के मोटे संकेत लिखे जाते हैं, किन्तु हल्का बिन्दु द्वितीय स्थान तथा हल्का डैश प्रथम स्थान में संकेत नहीं किया जाता है, जैसे:–

   बाम .... बैर .... रेत .... ईख .... इक ....

   और .... चोर .... अर .... उस.................. ऊपर ....

रेखाओं से पहले (Preceding) और बाद में (Following) स्वर संकेत :–

1. ऊपर से नीचे की ओर या नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाने वाली रेखाओं के बाईं ओर (Left side)/पहले दिये गये स्वर संकेत रेखा से पहले पढ़े जाते हैं, जैसे:– आज .... ओट .... इसी प्रकार ऊपर से नीचे की ओर या नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाने वाली रेखाओं के दाईं ओर (Right side) दिये गये संकेत रेखा के बाद में पढ़े जाते हैं, जैसे:– पैर .... रेत .... केक .... आदि ।

2. पड़ी रेखाओं के ऊपर लिखे गये स्वर संकेत रेखा से पहले पढ़े जाते हैं । जैसे:– आप .... आम .... ओस .... किन्तु, पड़ी रेखाओं के नीचे लिखे गये स्वर संकेत रेखाओं के बाद में पढ़े जाते हैं जैसे:– नी .... का .... गा ....

3. **जब भी किसी शब्द के शुरू में "अ" स्वर आता है तो उसका संकेत करना आवश्यक है, अन्य किसी स्थिति में "अ" स्वर का संकेत करना जरूरी नहीं होता है जैसे :–**

   अमल .... किन्तु, नकल ....

3.1.3 व्यंजन "य" एवं "व" की स्वर ध्वनि

"य" एवं "व" पूर्ण व्यंजन होने के बावजूद भी बहुत से शब्दों में इनकी ध्वनि स्वर के समान प्रतीत होती है । यद्यपि वर्ण **"य"** व्यंजन है, किन्तु बहुत से शब्दों के अन्त में इसकी ध्वनि **"ऐ"** स्वर के समान होती है । अतः ऐसे शब्दों में इसका संकेत प्रथम स्थान के हल्के बिन्दु से करते हैं, जैसे :–

भय .... मय .... (जैसेः– दुःखमय ....)

लय .... (जैसेः– पुस्तकालय ....) षय .... (जैसेः– विषय ....)

इसी प्रकार वर्ण **"व"** पूर्ण व्यंजन है, किन्तु कई शब्दों में इसकी ध्वनि स्वर **"औ"** के समान होती है । ऐसी स्थिति में **"व"** का संकेत प्रथम स्थान में मोटे डैश के द्वारा करते हैं । जैसेः–

नवमी (नौमी) .... नवनिधि (नौनिधि) ....

3.1.4 स्वरों के साथ अनुस्वार आने पर विशेष संकेत लगाना

हिन्दी भाषा में अनुस्वार भी एक प्रकार का स्वर है जिसका प्रयोग अनेक शब्दों में स्वर **आ, ए, इ, उ** आदि स्वरों से मिलकर किया जाता है । स्वरों की भांति **अनुस्वारयुक्त स्वर का संकेत रेखा की दिशा में लिखे एक डैश द्वारा करते हैं ।** किन्तु पतले डैश का प्रयोग बिन्दु स्वर के लिए और मोटे डैश का प्रयोग डैश स्वर के लिए किया जाता है । अनुस्वार का संकेत भी मूल स्वर के स्थान पर किया जाता है । जैसेः–

पतला डैश :– पांच .... दें .... लीं ....

मोटा डैश :– भौं .... चोंच .... जूं ....

3.1.5 दो व्यंजनों के बीच स्वर संकेत एवं व्यंजनों के लिखने का स्थान

जिस प्रकार स्वर के तीन स्थान होते हैं, उसी प्रकार व्यंजनों को भी स्वर के अनुसार तीन स्थानों पर लिखा जाता है । प्रथम स्वर ध्वनि ही किसी रेखा शब्द के स्थान को निर्धारित करती है । दो व्यंजनों के बीच स्वर संकेत करने के नियम इस प्रकार हैं –

1. दो व्यंजनों के बीच स्वर आने पर प्रथम और द्वितीय स्थान पर इसे नियमानुसार पहले व्यंजन के पश्चात् लगाया जाता है । **जब पहला स्वर पहले स्थान का आता है तो व्यंजन लाइन से ऊपर लिखा जाता है** जैसेः–

काम .... रात .... मौत .... कौम ....

जब पहला स्वर दूसरे स्थान का आता है तो व्यंजन लाइन पर लिखा जाता है । जैसे:–

लोक .... मेल .... खोट .... रेत ....

2. लेकिन जब तीसरे स्थान का स्वर दो व्यंजनों के बीच में आता है तो उसे पहले व्यंजन के तीसरे स्थान पर ना लगाकर अगले व्यंजन के तीसरे स्थान पर लगाया जाता है । यदि पहला स्वर **तीसरे स्थान का आता है तो व्यंजन लाइन को काटते हुए लिखा जाता है** जैसे:–

वित्त .... ऋतु .... दीप .... फीका ....

दिला .... पीला .... नीम .... पिता ....

3. **("क" वर्ग, म, न, तथा अंग)** पड़ी रेखाओं को लाइन से काट कर नहीं लिखा जाता । इसलिए यदि रेखा शब्द की सभी रेखाएं पड़ी हों तो स्वर प्रथम स्थान के होने पर वे प्रथम स्थान में लिखे जायेंगे जैसे:–

मामा .... नाक .... काका .... नाना ....

4. यदि रेखा शब्द की सभी पड़ी रेखाएं हैं तो पहला स्वर द्वितीय तथा तृतीय स्थान का होने पर भी उन्हें लाईन पर ही लिखा जाता है जैसे:–

नेक .... नेम .... नीम .... कूक .... केक ....

5. यदि कोई रेखा शब्द किसी पड़ी रेखा से आरम्भ होता हो और उसका पहला स्वर प्रथम स्थान का है तो वह पहली नीचे की ओर लिखी जाने वाली (डाउनवर्ड) जुड़ी रेखा लाइन के ऊपर रहेगी जैसे:–

काट .... मात .... बात .... जात ....

6. इसी प्रकार पहला स्वर द्वितीय स्थान के होने पर जुड़ी हुई नीचे की ओर की रेखा लाइन पर रहेगी जैसे:–

कोप .... नेता .... खोद .... गोदी ....

7. उसी प्रकार पड़ी रेखा का पहला स्वर यदि तृतीय स्थान पर हो तो जुड़ी हुई नीचे की ओर की अथवा ऊपर की ओर की रेखा लाइन को काटती हुई लिखी जाएगी जैसे:–

मूल .... कूद .... खुदा ....

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न : 3.1

1. स्वर का अर्थ एवं प्रकार बताइये ?
2. दो व्यंजनों के बीच स्वरों को लिखने के नियम उदारण सहित बताइये ?
3. अनुस्वार का अर्थ उदाहरण सहित बताइये ?

प्रश्न 3.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) मुख से अबाध गति से निकलने वाली ध्वनि को _________ कहते हैं ।

(2) हिन्दी आशुलिपि में कुल _____________ स्वर ध्वनियां हैं ।

(3) दीर्घ स्वरों के लिए ____________ तथा _____________ का प्रयोग किया जाता है ।

(4) प्रत्येक व्यंजन में स्वर लगाने के लिए _____________ स्थान होते हैं ।

(5) पड़ी रेखाओं में स्वरों की गणना ____________ से __________ ओर की जाती है ।

प्रश्न 3.3

निम्नलिखित में से सही/गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

(1) हिन्दी भाषा में कुल दस स्वर होते हैं ।

(2) अल्प स्वरों का संकेत हल्के बिन्दु वह हल्के डैश से किया जाता है।

(3) प्रत्येक व्यंजन में स्वर लगाने के लिए पांच स्थान होते हैं ।

(4) स्वर स्थानों की गणना प्रत्येक रेखा के अन्त से की जाती है ।

(5) यदि स्वर प्रथम स्थान का है तो रेखा शब्द को लाइन से ऊपर लिखा जाता है ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1

शार्टहैंड (आशुलिपि) में लिखिए :

1. आप आग दावा शान दाग हार मैना गाना मौका लेख
2. फोटो डेटा जेल मोर बोल पौधा छाता रोक बेटा अमल
3. आराम चाल पान माल चारी गौर माला दौर वादा लेना
4. भूमि नीम किला पुकार पीठ जून बीमा बुला जोर भूमि

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 3.2 —— (1) स्वर (2) दस (3) मोटा बिन्दु, मोटा डैश (4) तीन (5) बाएं, दाएं ।

प्रश्न 3.3 —— (1) सही (2) सही (3) गलत (4) गलत (5) सही ।

3.2 शब्द चिन्ह , कारक की विभक्ति एवं सर्वनाम

3.2.1 शब्द चिन्ह का अर्थ

प्रत्येक भाषा के कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग बहुतायत किया जाता है । इसी प्रकार हिन्दी भाषा में भी कुछ ऐसे शब्द, सर्वनाम तथा कारक की विभक्ति है जिनका प्रयोग वाक्यों एवं अनुच्छेदों में बार–बार किया जाता है । इसलिए इन शब्दों के लिए संक्षिप्त एवं सरल संकेतों के निर्माण के लिए आशुलिपि में एक अकेला चिन्ह निर्धारित कर दिया गया है जिन्हें "शब्द चिन्ह" कहा जाता है जैसे:–

किया .... अधिक .... आदि ।

इन संक्षिप्त संकेतों को सुविधानुसार रेखा के ऊपर, रेखा पर या रेखा को काटते हुए लिखा जाता है जैसे :– कि, की .... के .... उसी ....

सर्वनाम से तात्पर्य मैं, तुम, इस, उस, इन, किस आदि शब्दों से है । जिनके रूप विभिन्न कारकों के प्रयोग से बदलते रहते हैं जैसे:– मैंने, मुझको, तुम्हारा, मुझसे, उसने, इसको आदि । कुछ सर्वनाम व उसके रूप जिनका हिन्दी भाषा में बहुतायत प्रयोग होता है, इनके लिए अलग–अलग शब्द चिन्हों का निर्माण किया गया है ।

प्रत्येक प्रचलित शब्द के लिए एक अकेला चिन्ह निर्धारित कर दिया गया है । इन शब्दों के लिए जो संकेत बनाए गए हैं उनमें उस शब्द की किसी एक रेखा का प्रयोग किया जाता है या किसी संक्षिप्त संकेत का प्रयोग किया जाता है । जैसे किसी शब्द के लिए डैश, अर्धवृत्त, वृत्त, बिन्दु या कोण आदि के प्रयोग द्वारा इन्हें आशुलिपि में लिखा जाता है ।

3.2.2 शब्द चिन्हों के अभ्यास की विधि

वे शब्द चिन्ह जो एक दिशा में बनाए जाते हैं उन शब्द चिन्हों का अभ्यास एक साथ करना चाहिए जैसे:– "कि", "की" .... तथा "के" .... इन दोनों शब्द चिन्हों का अभ्यास एक साथ किया जाना चाहिए । इन दोनों शब्द चिन्हों को नीचे से ऊपर की ओर बनाया जाएगा । इसी प्रकार (हल्की रेखा) "ने" .... तथा "तो–जितना–जितने–जितनी" .... (हल्की रेखा) को ऊपर से नीचे की ओर बनाया जाएगा ।

उपर्युक्त अभ्यास प्रकिया पूरी होने के उपरांत एक अध्याय के अन्तर्गत आने वाले सभी शब्द चिन्हों का अभ्यास प्रारंभ से लेकर अन्त तक बार–बार करना चाहिए । इन शब्द चिन्हों का अभ्यास लिखने के साथ–साथ पढ़ने का भी करना चाहिए ।

शब्द चिन्ह

कि, की .... के ....

ने .... तो, जितना–जितने–जितनी ....

का .... को .... है .... हैं, हूं, ही ....

मैं .... उस .... उसी ....

एक, किया–किये–किए .... कह, कहा, कहे, अधिक ....

मालूम .... में, तुम, तुम्हें ....

आ .... हो .... हों ....

आएगा–आएगी .... होगा–होगी ....

जहां .... तहां .... हुआ–हुए–हुई ....

दूसरा–दूसरे–दूसरी .... रह–रहा–रहे .... हो रहा–हो रहे–हो रही ....

और .... इधर, ज़ाहिर .... उधर, उदाहरण ....

पूर्ण विराम के लिए X ,डैश .... के लिए, प्रश्न चिह्न के लिए ?..... तथा संशोधन के लिए ! दिया जाता है । उसी प्रकार नामों की आउटलाइन के नीचे दो छोटी तिरछी रेखाएं खींची जाती हैं । जैसे:–

दिल्ली .... कानपुर ....

अनुच्छेद का संकेत करने के लिए .... का प्रयोग करते हैं ।

सर्वनाम

मैंने	मुझको	मुझसे ....
मेरा–मेरे–मेरी	मुझ में	मुझ पर ....
उसने	उसको	उससे ....
उसका–उसके–उसकी	उसमें	उस पर ....
इसने	इसको	इससे ....
इसका–इसके–इसकी	इसमें	इस पर ....

न, इन, इतना–इतने–इतनी ....

उन, उतना–उतने–उतनी .... होना–होने–होनी ....

ऐसा–ऐसे–ऐसी .... समस्या .... स्थिति ....

उनसे, नुक्सान .... जो, होजा * .... जीवन ....

*हो जाना क्रिया का परिवर्तित रूप है ।

(शब्दों के परिवर्तित रूप भी संबंधित शब्द–चिन्हों द्वारा लिखे जाएंगे । जैसेः– होना, होने, होनी आदि ।)

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 3.2.1

1. शब्द चिन्ह का अर्थ उदाहरण सहित बताइये ?
2. सर्वनाम के लिए तथा कारक की विभक्तियों के लिए किस प्रकार के शब्द चिन्हों का निर्माण किया गया है ?
3. शब्द चिन्हों अर्थात् संक्षिप्त रेखा संकेतों की दिशा एवं इन्हें बनाने का क्या आधार है ?

प्रश्न 3.2.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) किसी बिन्दु या डैश से प्रकट होने वाले शब्द को ____________ कहते हैं ।

(2) शब्द चिन्हों को नियमानुसार रेखा के ऊपर, रेखा पर या ____________ लिखा जाता है ।

(3) पूर्ण विराम के लिए ________________ शब्द चिन्ह का प्रयोग किया जाता है ।

(4) मैं, तुम, उस, इस आदि शब्द ______________ कहलाते हैं ।

(5) आशुलिपि में _______________ बढ़ाने के लिए शब्द चिन्हों का निर्माण किया गया है ।

प्रश्न 3.2.3

निम्नलिखित में से सही/गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

(1) प्रत्येक भाषा के कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग बहुतायत किया जाता है ।

(2) प्रत्येक प्रचलित शब्द के लिए एक से ज्यादा चिन्ह निर्धारित किए गए हैं ।

(3) शब्द चिन्हों को केवल कोण द्वारा प्रकट किया जाता है ।

(4) संक्षिप्त संकेतों को बनाते समय दिशा का भी ध्यान रखा जाता है ।

(5) शब्द चिन्हों का अभ्यास बार–बार करना चाहिए ।

कियाकलाप

अभ्यास पाठ 1

शब्द चिन्हों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को शार्टहैंड (आशुलिपि) में लिखिए :

1. मैं उसी नदी का पानी पीता हूं ।
2. तुम्हें घर जाना चाहिए । माता जी तुम्हारा इंतजार कर रही हैं ।
3. दिल्ली में आजकल बहुत गर्मी पड़ रही है ।
4. बच्चे गली में शोर मचा रहे हैं । इससे तो अच्छा है तुम राधा को बुला लो ।
5. सीता और गीता एक–दूसरे को जानती हैं ।
6. बाहर तमाशा हो रहा है । तुम भी देख लो ।
7. तुम्हें कुछ पता है तो कमला को बता दो ।
8. रमेश के बाग में सुन्दर फूल खिले हैं ।

पुनरीक्षा प्रश्न

उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 3.2.2 – (1) शब्द चिन्ह (2) रेखा को काटते हुए (3) X (4) सर्वनाम (5) गति ।

प्रश्न 3.2.3 – (1) सही (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही ।

3.3 वाक्यांश

वाक्यांश का अर्थ एवं इसके लिखने के नियम –

"वाक्यांश" वह विशेष रेखा चिन्ह है जो दो या दो से अधिक शब्दों के लिए बिना कलम या पैंसिल उठाए लिखा जाता है । इसमें दो या दो अधिक शब्द चिन्हों का प्रयोग किया जाता है । श्रेष्ठ वाक्यांश वे होते हैं जिन्हें स्पष्टता से लिखने के साथ–साथ पढ़ना भी आसान हो । वाक्यांशों के प्रयोग से आशुलिपि की गति मे वृद्धि होती है ।

वाक्यांशों को बनाने संबंधी नियम निम्न प्रकार हैं :

(1) वाक्यांश लिखते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि ये लिखते समय न ज्यादा लाइन से ऊपर हों और न ही लाइन से बहुत नीचे की ओर हों ।

(2) वाक्यांश लिखने में सरल हों अर्थात् जिन्हें सरलता से बनाया जा सके ।

(3) जब भी कोई वाक्यांश लिखा जाए तो सर्वप्रथम यह ध्यान रखना आवश्यक है कि जो वाक्यांश लिखा गया है उसे पढ़ने में कोई कठिनाई न हो ।

(4) वाक्यांश लिखते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वाक्यांश का प्रथम शब्द उसी स्थान पर रहे जहां वह लिखा जाता है जैसे :– इसलिए .... यह वाक्यांश लाइन पर ही लिखा जाएगा क्योंकि इस .... शब्द चिन्ह लाइन पर ही लिखा जाता है । इसी प्रकार इसीलिए .... वाक्यांश लाइन के नीचे लिखा जाएगा क्योंकि इसी .... शब्द चिन्ह का स्थान लाइन के नीचे है ।

(5) प्रथम स्थान के रेखा शब्दों या शब्द चिन्हों से जुड़ी हुई रेखाओं को लाइन से ऊपर, लाइन पर या लाइन से काटकर लिखने के लिए थोड़ा ऊपर या नीचे भी लिखा जा सकता है जैसे:–

इस आशा से ....

(6) वाक्यांश लिखते समय स्वर संकेत का लगाना जरूरी नहीं होता, लेकिन कभी–कभी रेखाओं में अन्तर करने के लिए ऐसा करना आवश्यक होता है जैसे:–

उसके लिए ....   किन्तु, उसके पहले ....

(7) वाक्यांशों को लिखते समय कहीं–कहीं तो शब्द रेखाओं को लिखा भी नहीं जाता है क्योंकि इनके बिना भी इनको सरलता से पढ़ा जा सकता है जैसे :–

एकता की दृष्टि से ....   उन्होंने कहा कि ....

— वाक्यांशों में शब्द चिन्हों को मिलाकर लिखना

वाक्यांशों में शब्द चिन्हों को मिलाकर लिखा जाता है जिससे कि आशुलिपि में गति प्राप्त की जा सके । शब्द चिन्हों के साथ मिलाकर लिखे गए कुछ वाक्यांश इस प्रकार हैं :–

इसलिए	इसी लिये	इसके लिये ....
इनके लिए	यह कहा गया	यही कहा गया ....
कहा गया	मेरे लिये	न सिर्फ ....
के पहले	उसके लिए	मुझसे पहले ....

इसके अतिरिक्त शब्द चिन्हों को अन्य संकेताक्षरों के द्वारा भी मिलाकर लिखते हैं जो इस प्रकार हैं :–

के साथ	इस काम	तमाम लोग ....
पहला काम	मेरी ओर	उस ओर ....
जो काम	इन लोगों	पहला विषय ....
इन कामों	उन लोगों	पहला अवसर ....
यह काम	ऐसे लोगों	यह कहेंगे ....
आवश्यक काम	जो कुछ	यह समझेंगे ....
जो लोग	इस कमी	सारा देश ....
ऐसा काम	ऐसे आदमी	सारा काम ....
मेरा नाम	सार्वजनिक सभा	छोटा काम ....

— वाक्यांश में वृत्त "स" का प्रयोग

वाक्यांश (फ़ेजोग्राफी) में वृत्त "स" का प्रयोग "सा", "से" और "सी" के लिए भी किया जाता है जैसे :—

सरकार से	उस दृष्टि से	इस दृष्टि से ....
की ओर से	निजी काम से	छोटा सा काम ....
छोटी सी लड़की	इस काम से	इनमें से ....
इसमें से	मेरी ओर से	थोड़े से लोग ....
तेजी से	उस ओर से	उसमें से ....
थोड़ा सा काम	उनसे पहले	इनसे पहले ....
थोड़ी सी कमी	इस आशा से	इससे पहले ....

— वाक्यांश में "में" शब्द के लिए शब्द चिन्ह का प्रयोग

वाक्यांश में "में" शब्द के लिए शब्द चिन्ह .... का प्रयोग शब्द के साथ–साथ मिलाकर किया जाता है जैसे :—

जीवन में	इस देश में	मेरी समझ में ....
इस जीवन में	भारी संकट में	सार्वजनिक सभा में ....
इस संकट में	की समझ में	

— वाक्यांशों में "के पास", "ढंग से" एवं "की तरफ से" के लिए संक्षिप्त संकेतों का प्रयोग

(1) वाक्यांश में **"के पास"** के लिए .... ("क" व्यंजन रेखा और "स" वृत्त) के संकेत का प्रयोग करते हैं तथा इसे रेखा से छूकर लिखा जाता है जैसे :—

उनके पास	किसके पास ....
सब के पास	लड़के के पास ....

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य वाक्यांशों में केवल वृत्त के द्वारा ही "के पास" को संकेत किया जाता है जैसे :—
मेरे पास ....

(2) वाक्यांश में **"ढंग से"** आने पर इसके लिए .... ("ढ़" और "स" वृत्त) के संकेत को मूल रेखा से मिलाकर लिखते हैं जैसेः–

मुनासिब ढंग से ....

(3) वाक्यांश में **"की तरफ से"** आने पर इनका संकेत .... ("क", "फ" और "स" वृत्त) के द्वारा मूल शब्द रेखा के साथ मिलाकर करते हैं जैसे :–

नेताओं की तरफ से ....

किन्तु, **"मेरी तरफ से"** आने पर यह इस प्रकार लिखा जाता है जैसे :–

मेरी तरफ से ....

– वाक्यांश में "के लिये" शब्द के लिए "ल" रेखा का प्रयोग

वाक्यांशों में "के लिये" शब्द आने पर इसके लिए "ल" व्यंजन रेखा को सुविधानुसार नीचे से ऊपर तथा ऊपर से नीचे की ओर जोड़ा जाता है जैसे :–

होने के लिये .... हटाने के लिये .... सुनने के लिये ....

कहने के लिये .... इस देश के लिये .... जाने के लिये ....

देश के लिये .... समाज के लिये ....

– वाक्यांश में "है", "हैं", "हूं" और "ही" का प्रयोग

वाक्यांश में "है" शब्द आने पर इसे डॉट चिन्ह के अतिरिक्त एक हल्की तिरछी टिक के द्वारा भी प्रकट किया जाता है । यह टिक उसी शब्द संकेत के अन्त में साथ जोड़कर लगाई जाती है । इस टिक को नीचे की ओर (दायें से बायें) एवं ऊपर की ओर (बायें से दायें) लगाया जाता है जैसे :–

नीचे की ओर (दायें से बायें) :

कहना है .... कहा है .... अवसर है ....

हुआ है .... घूमना है .... देखा है..............................

जाना है..............................

ऊपर की ओर (बायें से दायें) :

समझा है .... फैला है .... पाती है ....

घूमा है .... नाचा है .... सोचा है ....

आशा है ....

"है" से संबंधित कुछ और वाक्यांश इस प्रकार हैं :

यह ठीक है .... मुझे आपत्ति है .... मुझे आशा है........

मुझे दुख है .... ने कहा है .... ने समझा है........

को समझना है .... मुझे पता है .... क्या यह सच है ....

क्या यह ठीक है ....

वाक्यांशों में "हैं" शब्द भी इसी प्रकार के टिक के द्वारा प्रकट किया जाता है, लेकिन "है" से भेद करने के लिए इसमें एक छोटा–सा वृत्त बनाते हुए टिक लगाई जाती है जो कि नीचे की ओर एवं ऊपर की ओर लिखी जाती है जैसे :–

नीचे की ओर :

समझनी हैं .... कही हैं .... सीखते हैं ....

ऐसे हैं .... सामने हैं .... हो रहे हैं ....

देखते हैं .... हुए हैं .... होने हैं ....

ने कहे हैं ....

ऊपर की ओर :

कम हैं .... फैले हैं ....

घूमे हैं .... लिये हैं........

कियाओं में पुर्लिंग और स्त्रीलिंग में भेद करने के लिए नियमानुसार स्वर लगाए जाते हैं जैसे:–

हो रहा है .... हो रही है ....

हो रहे हैं .... हो रही हैं ....

वाक्यांश में "हूं" शब्द के लिए भी "हैं" संकेत का प्रयोग किया जाता है जैसे :–

मैं जाता हूं .... वे जाते हैं............................

मैं देखता हूं .... वे देखते हैं ....

वाक्यांश में "ही" का संकेत करने के लिए भी वृत्तयुक्त टिक का ही प्रयोग किया जाता है जैसे :–

देखते ही .... खाते ही ....

पाते ही .... खेलते ही ....

नोट : "देखते हैं" शब्द के लिए भी वृत्तयुक्त टिक का प्रयोग किया जाता है किन्तु आशुलिपि में ट्रांस्किपशन करते समय कोई दिक्कत नहीं आती ।

– वाक्यांश में "था", "थे" और "थी" के लिए संक्षिप्त चिन्हों का प्रयोग

जब भी किसी वाक्य के अन्त में **"था", "थे"** और "**थी**" आता है तो **बिन्दु एवं डैश** का प्रयोग किया जाता है । **"था"** के लिए रेखाओं के अन्त में **एक बिन्दु, "थे"** के लिए **छोटा डैश** तथा **"थी"** के लिए **"त" व्यंजन रेखा** द्वारा संकेत करते हैं जैसे :–

जा सका था .... जा सके थे ....

परन्तु, "जा सकी थी" के लिए .... "त" व्यंजन रेखा का संकेत किया जाता है ।

– उच्च गति प्राप्त करने के सिद्धांत

आशुलिपि में तीव्र गति से लिखने के लिए वाक्यांशों का नियमित रूप से अभ्यास अति आवश्यक है । आशुलिपि में उच्च गति प्राप्त करने के लिए जो वाक्यांश बनाए गए हैं, वे निम्न सिद्धांतों पर आधारित हैं :

(1) आशुलिपि में तीव्र गति प्राप्त करने के लिए दो या दो से अधिक शब्द चिन्हों को एक साथ मिलाकर लिखा जाता है जैसे :–

उनकी दृष्टि में .... समय में .... किया गया है ....

की है कि .... की गई है............................

(2) किसी भी शब्द चिन्ह, पूरे शब्द या शब्द खण्ड को साथ मिलाकर लिखा जाता है जैसे :–

इस विषय में .... सरकारी काम ....

(3) शब्द चिन्ह या शब्द चिन्हों के साथ सुविधापूर्वक लिखी जाने वाली किसी रेखा को मिलाकर लिखा जाता है जैसे :–

कहा था कि .... कहा है कि ....

उन्होंने कहा कि .... कहा कि ....

(4) वाक्यांश में किसी शब्द या शब्द–खण्ड़ के बीच के शब्द चिन्ह का लोप करके भी लिखा जा सकता है जैसे :–

देश के सामने .... (यहां "के" शब्द चिन्ह का लोप हुआ है)

मुझे आशा है कि .... (यहां "है" शब्द चिन्ह का लोप हुआ है)

(5) वाक्यांश में किसी शब्द में आने वाले प्रथम शब्द चिन्ह को लिखकर और अन्य शब्दों को केवल सांकेतिक रूप द्वारा भी प्रदर्शित करते हैं जैसे :–

मैं समझता हूं कि .... मैं आशा करता हूं कि ....

शब्द चिन्ह

तथा .... होता–होते–होती .... तथापि ....

यदि .... आदि .... इत्यादि ....

सहायता .... सहमत, सहमति .... समिति ....

यद्यपि .... पहुंच .... इन्हें .... उन्हें ....

वाक्यांश

अवसर पर .... की ओर गया है .... सब ओर से ....

इस देश के .... ऐसी अवस्था में ....

पुनरीक्षा प्रश्न
प्रश्न 3.3.1

1. वाक्यांश का अर्थ उदाहरण सहित बताइये ?
2. वाक्यांश बनाते समय पहला रेखा शब्द कहां पर लिखा जाता है ?
3. वाक्यांश में "के लिए" शब्द किस रेखा द्वारा प्रकट किया जाता है ?
4. वाक्यांशों में "है" तथा "हैं" का संकेत किस प्रकार किया जाता है ?

प्रश्न 3.3.2

निम्नलिखित में से सही / गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

1. क्या वाक्यांश एक शब्द का होता है ?
2. वाक्यांशों में "पास" के लिए "स" वृत्त का प्रयोग किया जाता है ।
3. वाक्यांशों में कभी–कभी स्वर लगाना आवश्यक होता है ।
4. वाक्यांशों को बिना पेन या पेंसिल उठाए लिखा जाता है ।
5. वाक्यांशों में दो या दो से अधिक शब्द चिन्हों का प्रयोग होता है ।

कियाकलाप

अभ्यास पाठ 1

निम्नलिखित वाक्यांशों को आशुलिपि में लिखिए :

1. इस काम, पहला विषय, इसके लिए, मेरी ओर से, इससे पहले ।
2. मुनासिब ढ़ंग से, सुनने के लिए, मुझे दुख है, उनके पास, इस विषय में ।
3. उनकी दृष्टि में, मैं आशा करता हूं कि, कहने के लिए, पहला अवसर, कहा गया ।
4. न सिर्फ, छोटा सा काम, यह समझेंगे, सार्वजनिक सभा में, भारी संकट में ।
5. ऐसे आदमी, इनके लिए, उन लोगों, जीवन में, मेरी तरफ से, मैं देखता हूं ।

पुनरीक्षा
उत्तर पुस्तिका

अभ्यास 3.3.2 (1) नहीं (2) सही (3) सही (4) सही (5) सही ।

3.4 द्विध्वनिक एवं त्रिध्वनिक स्वर

– द्विध्वनिक स्वर का अर्थ

हिन्दी भाषा के बहुत से शब्दों में **"ा" (आ)** मात्रा और **स्वर** साथ–साथ आते हैं और एक ही साथ उनका उच्चारण होता है । दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि जब दो स्वर ध्वनियां एक साथ आती हैं तो उन्हें "द्विध्वनिक स्वर" कहते हैं । आशुलिपि में ऐसी ध्वनि का संकेत करने के लिए **द्विध्वनिक स्वर** की व्यवस्था की गई है ।

जब व्यंजन **"य"** किसी मात्रा के साथ आता है तो उसका उच्चारण भी स्वर के समान ही होता है । इसका संकेत भी **द्विध्वनिक स्वर** से किया जाता है । स्वर बिन्दु या डैश चिन्हों द्वारा प्रकट किए जाते हैं जब कि द्विध्वनिक स्वर कोण द्वारा प्रकट किए जाते हैं ।

द्विध्वनिक स्वर चार प्रकार के होते हैं :–

आई .... **आए (आय)** .... **आऊ** .... यु–यू ....

1. **आई** तथा **आए** चिन्ह हमेशा **प्रथम स्थान** पर लिखे जाते हैं, किन्तु **आऊ** और यु–यू चिन्ह हमेशा **तृतीय स्थान** पर लिखे जाते हैं । जैसे:–

   प्रथम स्थान के चिन्ह : खाई .... खाये ....

   तृतीय स्थान के चिन्ह : खाऊ .... क्यू .... द्युत ....

2. यदि किसी शब्द के अन्त में स्थित **"द्विध्वनिक स्वर" के पश्चात् अनुस्वार** हो तो पहले और दूसरे स्थान के स्वर को सम्बन्धित रेखा से छूकर और तीसरे स्थान के स्वर को रेखा के अन्त में या उसके साथ ही लिखा जाता है । जैसे:–

   खाईं .... खायें ....

   किन्तु, खाऊं .... ज्यूं (ज्यों) .... त्यूं (त्यों) ....

– त्रिध्वनिक स्वर का अर्थ

जिन द्विध्वनिक स्वरों में एक छोटा "टिक" लगाने से तीसरे आने वाले स्वर का बोध हो, अथवा जब तीन स्वर ध्वनियां एक साथ प्रयोग की जाती हैं तो उसे "त्रिध्वनिक स्वर" कहा जाता है ।

त्रिध्वनिक स्वर द्विध्वनिक स्वरों के नियमों के अनुसार ही लिखे जाते हैं, लेकिन इनको प्रकट करने के लिए एक छोटा टिक का प्रयोग किया जाना आवश्यक है, जैसे :–

हटाइये …… दिलाइये ……

– द्विध्वनिक स्वर में बहुवचन का प्रयोग

बहुवचन के संकेत के लिए "द्विध्वनिक स्वर" का प्रयोग रेखा से छूकर या साथ लिखकर करते हैं, जैसे :–

कविता …… किन्तु, कविताएं ……

माला …… किन्तु, मालाएं ……

शब्द चिन्ह

व, वह …… वे …… वही ……

क्या, गया–गए–गई …… यही …… एवं …… अन्य ……

कौन, आओ …… तमाम, आयु …… आऊं ……

मुझे, आया …… उसे, कोई ……

सर्वनाम

इन्होंने …… इनको …… इनका–इनके–इनकी …… इनसे ……

इनमें …… इन पर ……

उन्होंने …… उनको …… उनका–उनके–उनकी …… उनसे ……

उनमें …… उन पर ……

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 3.4.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(1) द्विध्वनिक स्वर का अर्थ उदाहरण सहित बताइये ?

(2) द्विध्वनिक स्वर कितने प्रकार के होते हैं ?

(3) यदि किसी शब्द के अन्त में द्विध्वनिक स्वर के पश्चात् अनुस्वार हो तो उसे किस प्रकार लिखा जाता है ?

(4) द्विध्वनिक स्वर एवं त्रिध्वनिक स्वर में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न 3.4.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) आई तथा आए चिन्ह हमेशा .... स्थान पर लिखे जाते हैं ।

(2) द्विध्वनिक स्वरों में एक छोटा .... लगाने से तीसरे आने वाले स्वर का बोध होता है ।

(3) जब किसी शब्द में दो स्वर साथ–साथ आएं और उनका उच्चारण पृथक हो तो उसे .... कहा जाता है ।

(4) यु–यू चिन्ह हमेशा .... स्थान पर लिखे जाते हैं ।

प्रश्न 3.4.3

निम्नलिखित में से सही / गलत उत्तर छांटकर लिखिए –

(1) द्विध्वनिक स्वर तीन प्रकार के होते हैं ।

(2) द्विध्वनिक स्वर के पश्चात् अनुस्वार हो तो पहले स्थान के स्वर को संबंधित रेखा से छूकर लिखा जाता है ।

(3) द्विध्वनिक स्वरों में एक छोटा वृत्त लगाने से तीसरे आने वाले स्वर का बोध होता है ।

(4) बहुवचन के संकेत के लिए द्विध्वनिक स्वर का प्रयोग रेखा से छूकर या साथ लिखकर करते हैं ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

1. गहराई, विदाई, पढ़ाई, लड़ाई, हवाई ।
2. कायम, फायदा, बुलाएं, बनाएं, किराए ।
3. दयूति, म्युनिसिपल, प्यून, च्यूंटी ।
4. दिखाऊं, लाऊं, हटाईं, चलाईं ।
5. लिखाइये, पढ़ाइये, हटाइये, नहलाइये ।
6. धाराएं, आत्माएं, महिलाएं, अबलाएं ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 3.4.2– (1) प्रथम (2) टिक (3) द्विध्वनिक स्वर (4) तृतीय ।

प्रश्न 3.4.3– (1) गलत (2) सही (3) गलत (4) सही

3.5 द्विध्वनिक एवं त्रिध्वनिक मात्राएं

– द्विध्वनिक मात्रा का अर्थ

द्विध्वनिक स्वर से भिन्न जब दो मात्राएं एक साथ आती हैं तो उनका संकेत करने के लिए आशुलिपि में द्विध्वनिक मात्रा की व्यवस्था की गई है । द्विध्वनिक मात्राओं का उच्चारण अलग–अलग होता है और इन्हें स्वर के समान ही प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान में लिखा जाता है ।

– द्विध्वनिक मात्रा के प्रकार

द्विध्वनिक मात्राएं दो प्रकार के चिन्हों (1) .... (2) .... द्वारा लिखी जाती है । द्विध्वनिक मात्रा की प्रथम ध्वनि प्रधान होती है और अन्य ध्वनि गौण । द्विध्वनिक मात्रा के संकेतों का स्थान प्रथम ध्वनि के द्वारा ही तय किया जाता है । प्रथम बिन्दु ध्वनि के लिए चिन्ह .... का प्रयोग करते हैं, किन्तु प्रथम डैश ध्वनि के लिए चिन्ह .... का प्रयोग करते हैं ।

(1) चिन्ह ....

(क) इस चिन्ह को पहले स्थान में **"आ"** अथवा **"ऐ"** के साथ मिलकर आने वाली किसी भी अन्य मात्रा के लिए प्रयुक्त किया जाता है । जैसेः–

लाया.................. दैया .... भैया ....

(ख) दूसरे स्थान में इस चिन्ह का प्रयोग **"ए"** के साथ मिलकर आने वाली किसी भी मात्रा के लिए किया जाता है । जैसेः–

लेआ .... देआ ....

(ग) तीसरे स्थान में इस चिन्ह का प्रयोग **"इ"** अथवा **"ई"** के साथ मिलकर आने वाली किसी भी मात्रा के लिए किया जाता है । जैसेः–

दीजिए .... लीजिए .... पीओ ....

(2) चिन्ह ....

(क) पहले स्थान में इस चिन्ह का प्रयोग **"औ"** के साथ मिलकर आने वाली किसी भी अन्य मात्रा के लिए किया जाता है । जैसेः–

हौआ .... कौआ ....

(ख) दूसरे स्थान में इस चिन्ह का प्रयोग **"ओ"** अथवा **"अ"** के साथ मिलकर आने वाली किसी भी मात्रा के लिए किया जाता है । जैसेः–

खोई .... बोई .... कतई ....

(ग) तीसरे स्थान में इस चिन्ह का प्रयोग **"उ"** अथवा **"ऊ"** के साथ मिलकर आने वाली किसी भी मात्रा के लिए किया जाता है । जैसे:–

दुआ .... जुआ .... छुआ ....

— त्रिध्वनिक मात्रा का अर्थ

द्विध्वनिक मात्राओं के साथ एक छोटा टिक लगाने से तीसरी आने वाली मात्रा का बोध होता है । जैसे–

रसोइया .... एशियाई .... जाइए ....

— द्विध्वनिक मात्राा के साथ बहुवचन का प्रयोग

द्विध्वनिक मात्रा का प्रयोग बहुवचन के संकेत के लिए रेखा शब्द से छूकर या उसके साथ लिखकर करते हैं जैसे :–

नदी .... किन्तु, नदियां .... नदियों ....

कविता .... किन्तु, कविताएं .... कविताओं ....

पुनरीक्षा प्रश्न
प्रश्न 3.5.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(1) द्विध्वनिक मात्रा का अर्थ उदाहरण सहित बताइये ?

(2) द्विध्वनिक मात्राएं कितने प्रकार की होती हैं ?

(3) द्विध्वनिक मात्रा एवं त्रिध्वनिक मात्रा में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?

(4) बहुवचन के संकेत के लिए द्विध्वनिक मात्रा का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है ?

प्रश्न 3.5.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) द्विध्वनिक मात्राएं .... प्रकार के चिन्हों द्वारा प्रकट की जाती हैं ।

(2) द्विध्वनिक मात्रा की प्रथम ध्वनि .... होती है और अन्य ध्वनि ....।

(3) द्विध्वनिक मात्रा के संकेतों का स्थान .... ध्वनि से ही निर्धारित होता है ।

(4) द्विध्वनिक मात्राओं में एक छोटा .... लगाने से तीसरी आने वाली मात्रा का बोध होता है ।

प्रश्न 3.5.3

निम्नलिखित में से सही / गलत उत्तर छांटकर लिखिए –

(1) द्विध्वनिक मात्रा दो प्रकार की होती हैं ।

(2) द्विध्वनिक मात्राएं केवल प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर ही लिखी जाती हैं ।

(3) द्विध्वनिक मात्राओं में एक छोटा हुक लगाने से तीसरी आने वाली मात्रा का बोध होता है ।

(4) जब तीन मात्राएं एक साथ आती हैं तो उनका संकेत करने के लिए आशुलिपि में त्रिमात्रा की व्यवस्था की गई है ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

आशुलिपि में लिखिए :

1. नैया, जलाया, फैलावा, बलैया ।
2. दिया, शिया, दीया, उपमेय, देआ ।
3. वित्तीय, देखिए, दलीय, नियम ।
4. बढ़ई, रोई, पौआ, खोई ।
5. सूई, बटुआ, छुआ, रूई ।
6. नीतियां, परियां, रसोईयां, लड़कियां, ।
7. गलियों, बालियां, पतियों, ऋतुओं ।

पुनरीक्षा प्रश्न

उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 3.5.2– (1) दो (2) प्रधान, गौण (3) प्रथम (4) टिक ।

प्रश्न 3.5.3– (1) सही (2) गलत (3) गलत (4) सही ।

3.6 वैकल्पिक संकेत (र–ड़, ढ़, ल, तथा ह)

आशुलिपि में कुछ व्यंजन जैसेः– र–ड़, ढ़, ल, तथा ह को ऊपर और नीचे की दिशाओं में लिखे जाते हैं ।

1. प्रारम्भिक या अन्तिम **("र")** .... के पूर्व कोई स्वर आये तो **"र"** नीचे की ओर, किन्तु **"र"** के पश्चात् स्वर आये तो **"र"** ऊपर की ओर लिखा जाता है । जैसेः–

   आराम .... किन्तु, रोबी ....

   कपूर .... किन्तु, कपूरी ....

2. **"ढ़"** के लिए दो संकेत .... निर्धारित हैं । इनका प्रयोग **"र"** के नियमों के अनुसार किया जाता है ।

3. ऊपर के **"ल"** .... का प्रयोग अधिकतर होता है, किन्तु जब **"ल"** के पहले कोई स्वर हो तथा पड़ी, सीधी या वक्र रेखा से जुड़ा हो तो नीचे की ओर का **"ल"** लिखा जाता है । जैसेः–

   लोम .... किन्तु, अलग ....

   लाम .... किन्तु, इल्म ....

4. सुविधा की दृष्टि से ऊपर का **"ह"** .... अधिकतर प्रयोग होता है, क्योंकि अन्य रेखाओं के साथ यह अधिक सुविधा से मिल सकता है, किन्तु अकेले में **"क"** वर्ग के पहले या **"न"** के पश्चात् नीचे का **"ह"** का प्रयोग होता है । जैसेः–

   हा .... हक .... नह .... आदि ।

शब्द चिन्ह

अब .... जब .... तब ....

आएंगे–आएंगी .... होंगे–होंगी ....

छोटा–छोटे–छोटी, छूट .... निकट, चिट्ठी .... दृष्टि, छुट्टी ....

पहला–पहले–पहली .... लेकिन .... लोग, लिये, के लिए ....

यह .... यहां ....

चाह, चाहे, चाहिये .... ऊंचा–ऊंचे–ऊंची .... पीछे, चोटी ....

3.7 संक्षिप्त "व"

– संक्षिप्त "व" का प्रयोग

(1) जब भी "क–वर्ग" ("क", "ख", "ग", "घ"), व्यंजन रेखा "न" तथा ऊपर और नीचे की ओर लिखे जाने वाली व्यंजन रेखा "र" से पहले "व" व्यंजन हो तो "व" को एक दायें अर्द्धवृत्त से बनाया जाता है जैसे :–

वक्ता .... वर्ग .... वार्ता ....

विराट .... विमाता .... वेग ....

(2) व्यंजन रेखा "ल" के पहले लगाया गया एक छोटा हुक व्यंजन रेखा "व" को दर्शाता है जैसे :–

विलाप .... विलास ....

(3) व्यंजन रेखा "व" से पहले यदि कोई स्वर आता है तो "व" रेखा का ही प्रयोग किया जाता है जैसे :–

आवारा .... एवज ....

शब्द–चिन्ह और बहुवचन :

शब्द चिन्हों तथा अन्य शब्दों में बहुवचन को प्रकट करने हेतु रेखा के समानान्तर एक टिक का प्रयोग किया जाता है जैसे :–

लोगों .... दूसरों ....

शब्द चिन्ह

हफ्ता, हफ्ते .... काफी .... तरफ ....

कहां .... कहीं .... नहीं ....

सहर्ष .... संरक्षक .... वास्तव ....

सवाल ....

वाक्यांश

किसने .... किसको ....

किससे .... किसका–किसके–किसकी ....

किसमें .... किस पर ....

किसी ने .... किसी को .... किसी से ....

किसी का–किसी के–किसी की .... किसी में ....

किसी पर ....

जिसने .... जिसको .... जिससे ....

जिसका–जिसके–जिसकी .... जिसमें .... जिस पर ....

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 3.7.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(1) संक्षिप्त "व" का प्रयोग किन स्थितियों में किया जाता है, उदाहरण सहित बताइये ?

(2) संक्षिप्त "व" का प्रयोग कब नहीं किया जाता, बताइये ?

प्रश्न 3.7.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) "ल" के प्रारम्भ में लगाया गया एक छोटा .... "व" को प्रकट करता है ।

(2) अर्द्धवृत्त .... को प्रकट करता है ।

(3) "व" से पूर्व स्वर आने पर .... लिखा जाता है ।

(4) "क" वर्ग .... तथा ऊपर एवं नीचे की ओर लिखे जाने वाले "र" से पूर्व "व" को एक अर्द्धवृत्त से प्रकट किया जाता है ।

प्रश्न 3.7.3

निम्नलिखित में से सही / गलत उत्तर छांटकर लिखिए –

(1) "क" वर्ग से पूर्व "व" को एक टिक द्वारा लिखा जाता है ।

(2) "ल" के प्रारम्भ में लगाया गया एक छोटा हुक "र" को प्रकट करता है ।

(3) "व" से पूर्व कोई स्वर होने पर रेखा "व" पूरी लिखी जाती है ।

(4) "म" से पूर्व यदि "व" आए तो इसे दाएं अर्द्धवृत्त से प्रकट किया जाता है ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

आशुलिपि में लिखिए :

1. विमला, विकसित, वारदात, विकट ।
2. विलासी, वीर, वर्षा, विगत ।
3. विलाप, विलास, वाकिफ़, वैमनस ।
4. वक्ता, विराजना, वृक्ष, वैरागी ।
5. सरकार चाहती है कि सब गरीबों का काम हो ।
6. हमें देखना चाहिए कि किसी का जीवन संकट में न हो ।
7. सभी लोगों का जीवन शुद्ध और सच्चा हो ।
8. पुराने और अनुभवी लोगों का यही विचार है ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 3.7.2– (1) हुक (2) व (3) पूरी व रेखा (4) म ।

प्रश्न 3.7.3– (1) गलत (2) गलत (3) सही (4) सही ।

(48)

यूनिट 4. सर्किल एवं लूप

परिचय :

पिछले अध्याय में आपने स्वर, शब्द चिन्ह, वाक्यांश, द्विध्वनिक स्वर एवं मात्राएं, त्रिध्वनिक स्वर एवं मात्राएं, "र" एवं "ह" के वैकल्पिक संकेत तथा संक्षिप्त "व" के नियमों के बारे में पढ़ा । आशुलिपि लिखने का मुख्य उद्देश्य गति प्राप्त करना है । यदि आशुलिपि लिखते समय पूरे रेखाक्षर लिखे जाएं तो अधिक गति से नहीं लिखा जा सकता । इसलिए गति बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि छोटे-से-छोटे रेखाक्षर बनाए जाएं । चूंकि "स" अक्षर का प्रयोग हिन्दी भाषा में बहुतायत होता है इसलिए इसको संक्षिप्त करते हुए वृत्त के रूप में लिखा जाता है । इस अध्याय में आप जानेंगे कि व्यंजन "स", "श-ष" तथा "ज़" को आशुलिपि में रेखाक्षरों के अतिरिक्त एक छोटे वृत्त से किस प्रकार लिखा जाता है ।

इसी तरह कुछ शब्द स्त, स्थ, ष्ट, स्तर, ष्टर की ध्वनि के होते हैं । इन ध्वनियों को आशुलिपि में छोटे व बड़े लूप द्वारा दर्शाया जाता है । इनसे संबंधित नियम भी आप इस अध्याय में पढ़ेंगे ।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि:

- छोटे तथा बड़े वृत्त के नियमों की जानकारी
- छोटे और बड़े वृत्त का प्रयोग कहां नहीं किया जा सकता
- छोटे और बड़े लूप का प्रयोग कहां-कहां किया जाता है
- कहां-कहां पर छोटे और बड़े लूप का प्रयोग नहीं किया जाता
- संक्षिप्त संकेत और वाक्यांशों में छोटे और बड़े वृत्त और लूप के प्रयोग की जानकारी

4.1 वृत्त (छोटा और बड़ा)

व्यंजन "स", "श-ष" तथा "ज़" को व्यंजन रेखाओं के द्वारा ही नहीं अपितु उच्च गति प्राप्त करने हेतु इन्हें एक छोटा वृत्त बनाकर भी दर्शाया जाता है । इस वृत्त का प्रयोग "स" के लिए रेखाओं के प्रारम्भ, मध्य और अन्त में तथा "श-ष" और "ज़" के लिए केवल मध्य तथा अन्त में किया जाता है । दायीं और बायीं गति से वृत्त के लिखे जाने का तात्पर्य रेखाक्षर बनाते समय पेन या पेंसिल की गति से होता है । दायीं ओर से वृत्त लिखने में कलम की गति घड़ी की सुंइयों की तरह बायें से दायें ओर तथा बायीं ओर से लिखने में कलम की गति दायें से बायें होती है ।

— वृत्त निम्नलिखित तीन प्रकार से लिखा जाता है

1. सीधी रेखाओं के प्रारम्भ में, बीच में (जब कि कोण न बने) और अन्त में बायीं (Left) गति से स वृत्त लिखा जाता है जैसे:–

प्रारम्भ में :
साथी .... सकना .... सुख ....

मध्य में :
पुष्प .... कसक .... चूसना ....

अन्त में :
चीज़ .... रस .... तीस ....

2. दो रेखाओं के मेल से बने कोण के बाहर "स" वृत्त इस प्रकार लिखा जाता है जैसे:–

रास्ता .... पश्चिम .... खस्ता ....

बस्ती .... किस्ती .... दशक ....

3. "स" वृत्त को वक्र रेखाओं के अन्दर निम्न प्रकार लिखा जाता है जैसे:–

मसला .... रोज़ाना .... इल्ज़ाम ....

फसल .... मज़ाक .... सिलसिला ....

किसी भी व्यंजन रेखा के प्रारम्भ में आने वाला वृत्त पहले और अन्त में आने वाले वृत्त को अन्त में पढ़ा जाता है । स्वर संबंधित व्यंजन रेखा के साथ लिखा और पढ़ा जाता है । जैसा कि ऊपर दिये गये उदाहरणों से स्पष्ट है ।

"ल" रेखा तथा वृत्त :– यदि किसी वक्र रेखा के साथ वृत्त के ठीक पूर्व या पश्चात् में **"ल"** रेखा आती है तो **"ल"** रेखा वृत्त की गति से लिखी जाती है जैसे:–

मंजिल .... कंसल .... बंसल ....

"क्ष" का प्रयोग :– "क्ष" व्यंजन "क" और "ष" वर्णों के मेल से बनता है । अतः आशुलिपि में "क्ष" व्यंजन की ध्वनि का संकेत करने के लिए .... रेखा और वृत्त का प्रयोग किया जाता है जैसे:–

सक्षम .... क्षमा ....

"स" वृत्त और स्वर स्थान :– "स" वृत्त (सर्किल) से आरम्भ होने वाले रेखाक्षर को स्वर की ध्वनि के अनुसार ही लिखा जाता है जैसेः–

प्रथम स्थान के स्वर :–

साज़ .... सामरिक .... सारथी .... सैलाब ....

द्वितीय स्थान के स्वर :–

सोम .... सेतु .... सेर .... सोना ....

तृतीय स्थान के स्वर :–

सुलभ .... सीमा .... सुगंधि .... सुलह ....

"स" वृत्त के पश्चात् कोई स्वर नहीं हो तो रेखा को लाईन पर लिखा जाता है, किन्तु यदि वृत्त के पश्चात् कोई स्वर नहीं है और इसके बाद आने वाली व्यंजन रेखा के बाद स्वर आता है तो वह नियमानुसार लगाया जायेगा जैसे –

सच .... सड़क .... सभा ....

सज़ा .... सदा .... सम ....

टिप्पणी – सकाम शब्द में "स" वृत्त और "क" रेखा के मध्य "अ" स्वर तो है, किन्तु उच्चारण की दृष्टि से उसे स्वर नहीं मानते । इसलिए शब्द के आरम्भ में ही केवल "अ" स्वर का प्रयोग होता है जैसेः– अमल........ असल .... आदि । यदि शब्द के प्रारम्भ में व्यंजन "स" अपने अगले व्यंजन से जुड़ा हो तो संकेत को उस व्यंजन के स्वर के अनुसार लिखा जाता है जैसेः–

स्नेह .... स्नायु ....

स्फीति .... स्केल ....

"स", "श–ष" तथा "ज़" रेखाएं :– यदि "स", "श–ष" तथा "ज़" के पहले या शब्द के अन्त में इनके पश्चात कोई स्वर आ रहा हो तो स्वर लगाने के लिए पूरी व्यंजन रेखा को ही लिखा जाता है जैसेः–

सार .... आसार ....

सैनिक........ असैनिक ....

राश .... राशि ....

"स" वृत्त और अनुस्वारः– यदि किसी शब्द के प्रारंभ में "स" वृत्त और अनुस्वार एक साथ आता है और इसके बाद व्यंजन रेखा **क, ख, घ, च** तथा **ठ** .... आए तो प्रारम्भ में लिखे गए "स" वृत्त के बाएं या दाएं एक छोटा हुक "सं" को प्रकट करता है जैसेः–

सांच .... शंख .... संक्षेप ....

"**ह**" से पहले "**स**" वृत्त आने पर स को वृत्त की दिशा में लिखे गये एक छोटे हुक से लिखा जाता है जैसेः–

सिंह .... संहार ....

वृत्त का प्रयोग कहां नहीं किया जाता :

- यदि शब्द के प्रारम्भ में "स", "श–ष" तथा "ज़" के पहले कोई स्वर आता है तो वृत्त का प्रयोग न करके पूरी रेखा का प्रयोग किया जाता है जैसे :–

असम .... असल .... असर ....

- यदि शब्द के अन्त में "स", "श–ष" तथा "ज़" के पश्चात् कोई स्वर हो तो भी वृत्त का प्रयोग न करके पूरी रेखा का प्रयोग किया जाता है जैसे :–

तलाशी .... दासी .... रोज़ी ....

वृत्त और बहुवचन :– **"स", "श–ष" तथा "ज़"** से अन्त होने वाले शब्दों में बहुवचन का संकेत करने के लिए रेखाओं का प्रयोग किया जाता है जैसेः–

पास .... किन्तु, पासों ....

बस .... किन्तु, बसों ....

परन्तु वाक्यांश लिखते समय अपवाद हो सकता है । ऐसी स्थिति में बहुवचन संकेत को वृत्त के पश्चात् आने वाली रेखा पर संकेत किया जाएगा जैसेः–

देशों में .... **सभी देशों में** ....

देशों के लिए .... **सभी देशों के लिए** ....

इसके अतिरिक्त शब्दों में अन्तर करने और संकेतों को स्पष्ट बनाने हेतु कहीं–कहीं वृत्त का प्रयोग न करके रेखाओं का प्रयोग किया जाता है ।

शब्द चिन्ह

से, इस, इसे .... इसी ....

आवश्यक ....

कैसा–कैसे–कैसी, क्षेत्र .... किस, किसे .... किसी ....

जिस, जिसे .... समझ .... समय, इसमें ....

सार्वजनिक .... समाज .... सुझाव ....

स्पष्ट .... संगठित .... संकट ....

सारा–सारे–सारी .... सरकार .... सिर्फ ....

सहयोग .... संख्या ....

– "स्व" तथा "सस" के बड़े वृत्त

वृत्त "स" .... की तरह लिखे जाने वाले प्रारम्भिक बड़े वृत्त का प्रयोग द्विव्यंजन "स्व" .... के लिए किया जाता है । इसी प्रकार शब्द के मध्य तथा अन्त में "सस", "शश", "श–ष", "श–ज़" की ध्वनि आने पर बड़े वृत्त का प्रयोग किया जाता है । बड़े वृत्त के बनाने की दिशा ठीक उसी प्रकार रहेगी जैसे छोटे वृत्त अर्थात "स" वृत्त बनाने के लिए निर्धारित की गई थी ।

– प्रारम्भ में बड़े वृत्त का प्रयोग

प्रारम्भ में बड़े वृत्त का प्रयोग केवल "स्व" ध्वनि के लिए ही किया जाता है जैसे :–

सड़क .... किन्तु, स्वर्ग ....

सर्प .... किन्तु, स्वरूप ....

सामने .... किन्तु, स्वामिनी ....

चूंकि वृत्त में स्वर नहीं लिखा जाता है अतः सिवा .... सवार .... जैसे शब्द पूरे ही लिखे जायेंगे ।

– शब्दों के मध्य और अन्त में बड़े वृत्त का प्रयोग

1. किसी शब्द के मध्य या अन्त में **स, श, ष** तथा **ज़** में से कोई दो अक्षरों के एक साथ आने और उनके बीच में **"अ"** या **"ए"** स्वर होने पर छोटे वृत्त की गति से लिखे गए एक बड़े वृत्त का प्रयोग किया जाता है । जैसे:–

राक्षस (शस) .... अवशेष (शेष) ....

2. यदि स, श–ष तथा ज़ रेखाक्षरों के बीच में **"अ"** तथा **"ए"** के अतिरिक्त कोई और स्वर आए, तो उनके स्वर को वृत्त के अन्दर लिखा जाता है । जैसे:–

अहसास .... तक्षशिला ....

अफ़सोस .... जासूस ....

– बहुवचन

ऐसे शब्द जिनके अन्त में बड़े वृत्त का प्रयोग किया गया है, इन शब्दों में भी बहुवचन का संकेत किया जा सकता है । इन शब्दों में बहुवचन के संकेत के लिए अंत में व्यंजन रेखा लिखना जरूरी नहीं है । बल्कि बड़े वृत्त के साथ ही एक समानान्तर टिक लगा देते हैं जैसे :–

अवशेषों .... कोशिशों ....

वाक्यांश में बड़े वृत्त का प्रयोग :
वाक्यांश में बड़े वृत्त का प्रयोग **"स–व"**, **"स–स"** के संकेत के लिए करते हैं । जैसे:–

इससे .... इस वक्त ....

शब्द चिन्ह

अवश्य ....   शिक्षा ....

महाशय ....   मुश्किल ....

सप्ताह ....   सम्मेलन ....   सहानुभूति ....

परामर्श ....   स्वतन्त्र, स्वतन्त्रता ....

वहां, अथवा ....   वर्ष ....   द्वारा, विशेष ....

कब्जा ....   ज्यादा ....   जिम्मेदार, जिम्मेदारी ....

प्रशंसा ....   सदस्य ....

निष्पक्ष ....   निष्कर्ष ....

स्वावलम्बी ....

वाक्यांश

ज्यादा से ज्यादा ....   विषय में ....

इस सिलसिले में ....   वास्तव में ....

सवाल यह है कि ....   पूरी सहायता ....

सब की तरफ से ....

(55)

4.2 लूप (छोटा और बड़ा)

– छोटा लूप ("स्त", "स्त्र" लूप)

स्त, स्थ, श्त तथा ष्ट की ध्वनि को एक छोटे लूप से प्रकट किया जाता है । इस लूप की लम्बाई उस रेखा से आधी से कुछ कम होती है, जिसके साथ वह लगाया जाता है । वृत्त **"स"** की तरह **"स्त"** लूप सीधी रेखाओं के साथ बाईं गति (Left Motion) से तथा वक्र रेखा आने पर इसका प्रयोग वक्र रेखाओं के अन्दर किया जाता है । **"स"** वृत्त के समान ही स्त लूप रेखा के आरम्भ में रेखा से पहले पढ़ा जाता है और रेखा के अन्त में लगा हुआ स्त लूप शब्द के अन्त में पढ़ा जाता है जैसे:--

प्रारम्भ में छोटे लूप का प्रयोग :

समास .... किन्तु, समस्त ....

सुरा .... किन्तु, स्त्री ....

उपदेश.................... किन्तु, अपदस्थ ....

उपर्युक्त दिए गए उदाहरणों से यह स्पष्ट हो गया है कि वृत्त "स" की तरह "स्त" लूप सीधी रेखाओं के साथ बायीं गति से तथा वर्क रेखाओं के अन्दर लिखा जाता है ।

मध्य में छोटे लूप का प्रयोग :

इस लूप का प्रयोग सुविधानुसार मध्य में भी किया जा सकता है जैसे :–

दस्तक .... राजस्थान .... पुश्तैनी ....

अन्त में छोटे लूप का प्रयोग :

इस लूप का प्रयोग सुविधानुसार अन्त में भी किया जा सकता है जैसे :–

रूष्ट.................... दुष्ट .... पुष्ट ....

– "स्त", "स्त्र" लूप का प्रयोग कब नहीं किया जाता

1. चूंकि अन्तिम स्वर के पहले पूरी रेखा लिखना आवश्यक है, अतः यदि किसी शब्द के अन्त में आने वाले **स्त, स्थ तथा ष्ट** के पश्चात् कोई स्वर हो तो **"स्त" लूप** का प्रयोग नहीं किया जा सकता । क्योंकि अन्त में स्वर आने पर रेखाक्षरों को पूर्ण रूप में लिखा जाता है जैसे:--

किश्त .... किन्तु, किश्ती ....

मस्त .... किन्तु, मस्ती ....

2. हिन्दी में प्रचलित अंग्रेजी शब्दों में **"स्ट"** को प्रकट करने के लिए **"स्त" लूप** का प्रयोग प्रारम्भ, मध्य और अन्त में किया जाता है जैसे:–

स्टाफ .... इलास्टिक .... कास्ट ....

– बड़ा लूप ("स्त्र", स्तर, शत्र, शतर और ष्ट्र लूप")

किसी रेखा के अन्त में जुड़ा हुआ एक बड़ा लूप जिसकी लम्बाई उस रेखा की दो–तिहाई हो **"स्तर" (स्त्र, स्तर इत्यादि), "शतर" (शतर, शत्र इत्यादि)** तथा **"ष्ट्र"** को प्रदर्शित करता है । "स" वृत्त अथवा **"स्त" लूप** के समान ही **"स्त्र" लूप** सीधी रेखाओं में लगाते समय बाईं गति (Left Motion) से और वक्र रेखा आने पर यह लूप वक्र रेखाओं के अन्दर लिखा जाता है । जैसे:–

नश्तर .... पेश्तर .... राष्ट्र....................

– स्तर लूप का प्रयोग कब नहीं किया जाता

1. **शब्द के शुरू में बड़े लूप का प्रयोग कभी नहीं किया जाता ।**

2. हिन्दी में प्रचलित अंग्रेजी शब्दों में **"स्टर"** को प्रकट करने के लिए भी इस लूप का प्रयोग होता है जैसे:–

बैरिस्टर .... पोस्टर ....

3. **"स"** तथा **"त"** के बीच कोई स्वर आने पर अथवा **"स्त"** और **"र"** के बीच कोई दीर्घ स्वर आने पर लूप का प्रयोग नहीं किया जा सकता है, क्योंकि जहां भी स्वर ध्वनि हो वहां स्वर को जगह देने के लिए रेखा का होना आवश्यक है । जैसे:–

दस्तर .... किन्तु, दस्तार ....

बिस्तर .... किन्तु, विस्तार ....

– वाक्यांश और "स्त" लूप

वाक्यांश में **"स्त"** लूप का प्रयोग **"साथ"** के लिए किया जाता है । जैसे :–

उसके साथ .... इसके साथ .... मेरे साथ ....

साथ ही साथ .... साथ–साथ ....

वाक्यांश

के समय .... हो गये हैं .... न सिर्फ ....

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 4.1.

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(1) सीधी रेखाओं के साथ "स" वृत्त का प्रयोग उदाहरण सहित बताइये ?

(2) "स" वृत्त वक्र रेखाओं में कहां लगाया जाता है, उदाहरण देकर समझाइये ?

(3) "स" वृत्त का प्रयोग कब नहीं किया जाता, उदाहरण सहित समझाइये ?

(4) बड़े वृत्त के आरंभिक तथा अंतिम प्रयोग उदाहरण सहित दीजिए ?

(5) वृत्त "स" के बाद व्यंजन "ल" का प्रयोग किस दिशा में किया जाता है ?

(6) "स्त", "स्त्र" लूप का प्रयोग किस ध्वनि के लिए किया जाता है, उदाहरण सहित बताइये ?

(7) "स्तर" लूप किसे कहते हैं ? इसके प्रयोग के नियम स्पष्ट कीजिए ?

(8) "स्त" लूप का प्रयोग कब नहीं किया जाता ? उदाहरण देकर समझाइये ?

प्रश्न 4.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) वृत्त "स" सरल रेखाओं के साथ .... गति से लगाया जाता है ।

(2) यदि "स" से पहले कोई स्वर आ जाए तो "स" वृत्त के स्थान पर .... का प्रयोग किया जाता है ।

(3) प्रारंभिक बड़े वृत्त का प्रयोग द्विव्यंजन "स्व" तथा .... के लिए किया जाता है ।

(4) "स्त" लूप की लंबाई उस रेखा से .... से कुछ कम होती है ।

(5) हिन्दी में प्रचलित अंग्रेजी शब्दों में ....को प्रकट करने के लिए "स्तर" लूप का प्रयोग किया जाता है ।

प्रश्न 4.3

निम्नलिखित में से सही / गलत उत्तर छांटकर लिखिए –

(1) स्त, स्थ, श्त तथा ष्ट की ध्वनि एक बड़े लूप से प्रकट की जाती है ।

(2) स्टर लूप की लंबाई उस रेखा की दो तिहाई के बराबर होती है ।

(3) शब्द के मध्य तथा अंत में बड़ा वृत्त स, श, ज़ एक साथ आए तो उनके लिए बड़े वृत्त का प्रयोग किया जाता है ।

(4) बड़ा लूप रेखा शब्द के शुरू में कभी नहीं लिखा जाता है ।

(5) वक्र रेखाओं के साथ "स" वृत्त को रेखाक्षरों के अन्दर की ओर नहीं लिखा जाता ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

आशुलिपि में लिखिए :

1. उस नदी का जल साफ है । जल पीना है तो चले जाना ।
2. वह एक सार्वजनिक बाग है । वहां सब लोग जाते हैं ।
3. किसी भी समय सेना को दुश्मनों का सामना करना पड़ सकता है ।
4. समाज को चाहिए कि संकट के समय एक–दूसरे का साथ दें ।
5. आप सब इस काम को ठीक से करने के लिए समझ लो ।
6. इस मुश्किल समय में आप सब लोग सरकार को सहयोग दें ।
7. राम स्पष्ट दिमाग का आदमी है, आप सब उसका साथ दें ।
8. रमेश का यह सुझाव है कि समाज को हमेशा संगठित होकर रहना चाहिए ।
9. किसी अनुभवी ने यह सही कहा है कि सब लोगों को स्वेच्छा से काम करना चाहिए ।
10. इस सहानुभूति के लिए मैं अति आभारी हूं । उसे इस पुस्तक के सब पाठ याद हो गए हैं ।
11. रात के समय निकटस्थ बस्ती में कुछ डाकू बाजार को लूटने के लिए गए ।
12. वे लोग जो दुष्ट संगति में रहते हैं, कभी भी सफल नहीं हो सकते ।
13. इस सिलसिले में आप लोगों द्वारा जो कोशिश हो रही है उसकी खुले दिल से प्रशंसा होनी चाहिए ।
14. देश अपनी निजी कोशिशों तथा समृद्ध देशों की सहायता से अपनी आर्थिक समस्याओं को सुलझा सकता है ।
15. काम चाहे छोटा हो या मुश्किल पूरा होना ही सफलता की कुंजी है ।
16. इस काम को एक सरल बुद्धि का आदमी भी आसानी से समझ सकता है ।

17. अधिकारी महोदय सभी कर्मचारियों की दृष्टि इस तरफ दिलाना चाहते हैं कि वे कार्य को सही तरीके से सम्पन्न करें ।

18. अब उनके पास किसी को अपराधी ठहराने या उलाहना देने के मौके कभी–भी नहीं होंगे ।

19. किसी सवाल का फैसला तभी हो सकता है जब सब लोग एक–दूसरे की दिक्कतों को समझें ।

20. वास्तव में लोगों को ऐसी आशा या अपेक्षा रखना किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं है ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 4.2– (1) बायीं (2) "स" रेखा (3) "सस" (4) आधी (5) "स्टर"।

प्रश्न 4.3– (1) गलत (2) सही (3) सही (4) सही (5) गलत ।

यूनिट 5. हुक्स (अंकुश)

परिचय

पिछले अध्याय में आपने सर्किल और लूप से संबंधित नियमों के बारे में पढ़ा । इस अध्याय में आप प्रारंभिक हुक "र–ड़" एवं "ल" तथा अंतिम हुक "न–ण" एवं "व"–"य" और "शन" हुक से संबंधित नियमों के बारे में पढ़ेंगे । हिन्दी भाषा में कुछ व्यंजन ध्वनियां ऐसी हैं जिनका प्रयोग शब्द व वाक्यों में बहुत अधिक किया जाता है । ऐसी व्यंजन ध्वनियों को आशुलिपि में संक्षिप्त से संक्षिप्त रूप में बनाया जाता है । जिससे इनके लिए पूरी रेखा का प्रयोग न करके इन्हें संक्षिप्त रूप से लिखा जा सके और गति बढ़ाई जा सके ।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- प्रारंभिक हुक "र–ड़" एवं "ल" हुक का प्रयोग
- अन्तिम हुक "न–ण", "व" और "य" के लिए हुक का प्रयोग
- कहां पर प्रारम्भिक हुक और अन्तिम हुक का प्रयोग नहीं किया जाता
- हुक और वृत्त का मेल
- शन हुक का प्रयोग

5.1 प्रारंभिक हुक "र–ड़" एवं "ल" हुक का प्रयोग :

व्यंजन रेखाओं के प्रारंभ में लगने वाले छोटे हुक "प्रारंभिक हुक" कहलाते हैं । व्यंजन **"र"–ड़"** तथा **"ल"** का प्रयोग अन्य व्यंजनों के साथ अक्सर होता रहता है और यह अन्य व्यंजनों के साथ मिलकर इस प्रकार के शब्द बनाते हैं जैसे :– **कर, पड़, कल** आदि । व्यंजन **"र", "ड़"** तथा **"ल"** के लिए रेखाओं के आरम्भ में एक छोटे हुक का प्रयोग किया जाता है ।

<u>सरल रेखाओं के साथ "र–ड़" हुक का प्रयोग :</u>

सरल व सीधी रेखाओं के आरम्भ में दाईं गति (Right Motion) से बनाया गया एक छोटा हुक **"र"** या **"ड़"** को प्रकट करता है जैसे :–

तर 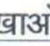 घर 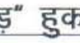 चर

जड़ पर 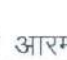 बर 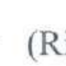

सरल रेखाओं के साथ "ल" हुक का प्रयोग :

सरल रेखाओं के आरम्भ में बाईं गति (Left Motion) से बनाया गया एक छोटा हुक **"ल"** को प्रकट करता है जैसे :–

खल .... बल .... थल ....

पल .... चल .... जल ....

वक्र रेखाओं के साथ "र–ड़" हुक का प्रयोग :

वक्र रेखाओं के अन्दर की तरफ प्रारम्भ में लगाया गया एक छोटा हुक "र–ड़" को प्रकट करता है जैसेः–

नर .... मर .... डर ....

मड़ .... फर .... शर ....

वक्र रेखाओं के साथ "ल" हुक का प्रयोग :

वक्र रेखाओं के अन्दर लिखे गये एक प्रारम्भिक बड़े हुक से **"ल"** का योग होता है जैसेः–

मल........ नल .... डल ....

स्वर का प्रयोग :

"डॉट" स्वर का प्रयोग रेखा से पहले या पीछे लगाये गये एक छोटे सर्किल से किया जाता है जैसे :–

मिलना .... तिलक .... तारीख ....

इसी प्रकार **डैश स्वर** का संकेत रेखा को काटकर प्रकट किया जाता है । प्रथम स्थान के स्वर का संकेत करने के लिए रेखा से पहले और तीसरे स्थान के स्वर को रेखा के अन्त में लिखा जाता है जैसेः–

फौलाद .... बिगुल .... मूर्ख ....

साधारण रेखाओं के समान ही इन मिले हुए व्यंजनों में स्वर का संकेत किया जाता है । जैसेः–

त्रिशूल .... त्रि ....

लेकिन **"रेखा–व्यंजन"** और **"र–ड़"** अथवा **"ल"** के मध्य कोई स्वर होने पर भी रेखा शब्दों को संक्षिप्त और सरल बनाने हेतु प्रारम्भिक हुक वाले रूप का प्रयोग किया जा सकता है ।

फर, भर, फल, भल के अतिरिक्त संकेत अथवा इनमें हुक लगाना :

व्यंजन रेखा **"र"** .... और "स" .... में **"र"** तथा **"ल"** के मेल के लिए हुक नहीं लगाया जाता, किन्तु **टर, ठर, डर, ढर, फल, भल** के लिए उनमें हुक लगाया जाता है जैसे:–

टर .... फर .... भर ....

डर .... फल .... भल ....

उपर्युक्त दिये गये उदाहरणों में पहला रूप बायां वक्र कहलाता है क्योंकि ये बाईं गति (Left Motion) से लिखे गये हैं । दूसरे रूप को दायां वक्र कहा जाता हैं, क्योंकि ये दाईं गति (Right Motion) से लिखे गये हैं । किसी रेखा के साथ मिलाते समय फर–भर आदि के सुविधाजनक मेल का ध्यान रखना आवश्यक है साधारणतः बायां वक्र बाईं (Left) ओर लिखी जाने वाली रेखाओं के साथ और दायां वक्र दाईं (Right) ओर लिखी जाने वाली रेखाओं के साथ ज्यादा सुविधा से मिलता है जैसे:–

चटोर .... कट्टर ....

– कहां पर प्रारम्भिक हुक का प्रयोग नहीं किया जाता

प्रारम्भिक हुक य, व तथा ह व्यंजनों को छोड़कर और सभी व्यंजन रेखाओं पर लगाए जाते हैं क्योंकि व्यंजन रेखा य, व तथा ह में आरंभ में हुकों के लिए कोई स्थान नहीं होते । व्यंजन रेखा **"र"** .... के आरम्भ में हुक नहीं लगाया जाता है, क्योंकि हुक लगाने से यह व्यंजन रेखा **"व"** .... या **"य"** .... के समान हो जायेगी ।

"श–र" .... व्यंजन सदा नीचे की ओर लिखा जायेगा, किन्तु **"श–ल"** .... सदा ऊपर की ओर ।

व्यंजन **"र–ड़"**, **"ल"** तथा अन्य रेखाओं के मध्य में दीर्घ स्वर आने पर हुक का प्रयोग न करके साधारण रेखाओं का ही प्रयोग किया जाना चाहिए जैसे:–

बल …… किन्तु, बाल ……

तर …… किन्तु, तार ……

भर …… किन्तु, भाड़ ……

शब्द चिन्ह

काल …… ख्याल, खिलाफ ……

अगला–अगले–अगली …… पिछला ……

विचार …… छोड़ …… जल्द …… जल्दी ……

मजबूर ……

तरह, तैयार …… बेहतर, तौर …… उत्तर, अतिरिक्त ……

आदरणीय, आधार …… देर …… दूर ……

कार्य …… अधिकार ……

निर्वाचित, निर्वाचन …… निर्णय …… निरर्थक ……

वाक्यांश

के बारे में …… लम्बाई–चौड़ाई ……

आवश्यकता इस चीज की है कि ……

5.2 अन्तिम हुक "न–ण", "व" और "य" के लिए हुक का प्रयोग

व्यंजन रेखाओं के अन्त में लगने वाले छोटे हुक अन्तिम हुक कहलाते हैं । जब भी किसी व्यंजन रेखा के अन्त में "न–ण", "व" तथा "य" आए तो इसे हम एक छोटे हुक के द्वारा भी प्रदर्शित करते हैं जैसे–

– **"न–ण" हुक का प्रयोग**

सीधी रेखाओं के अन्त में **दाईं गति** (Right Motion) से लिखा गया एक अन्तिम छोटा हुक **"न–ण"** को दर्शाता है जैसेः–

तन .... पान ....

कण .... गण ....

सीधी रेखाओं के प्रारम्भ में **"र"** और अन्त में **"न–ण"** का संकेत करने वाले हुक **दाईं गति** (Right Motion) से लिखे जाते हैं जैसेः–

त्राण .... प्राण .... कर्न ....

– **"व" और "य" हुक का प्रयोग**

सभी सीधी रेखाओं के अन्त में **बाईं गति** (Left Motion) से लिखा गया एक अन्तिम छोटा हुक **"व"** अथवा **"य"** को प्रदर्शित करता है जैसेः–

ताव .... राज्य .... प्रिय ....

दाव .... जीव .... अपूर्व ....

सीधी रेखाओं के प्रारम्भ में **"ल"** और अन्त में **"व"** या **"य"** का संकेत करने वाले दोनों हुक **बाईं गति** (Left Motion) से लिखे जाते हैं जैसेः– विप्लव ....

हिन्दी में प्रचलित अंग्रेजी शब्दों में व्यंजन "फ़" के लिए **"व" हुक** का प्रयोग किया जाता है जैसे :–

कफ़ .... चीफ़ ....

"न–ण" और "व" हुक का मध्य में प्रयोग :

यदि **"न–ण"** तथा **"व" हुक** आने वाली रेखा के साथ सरलता से जुड़ जाए तो उसको मध्य में भी प्रयोग किया जा सकता है जैसेः–

उज्ज्वल .... पंचशील .... चंचल ....

— "न" और अनुस्वार की ध्वनि का प्रयोग

कुछ शब्दों में **"न"** और अनुस्वार की ध्वनि समान होती है । इसी कारण चंचल आदि शब्दों में अनुस्वार होने पर भी **"न" हुक** का प्रयोग किया गया है । परन्तु कई शब्दों में अनुस्वार का संकेत **"न" रेखा** द्वारा भी करते हैं जैसे:–

आतंक मंच

"थीं" के संकेत के लिए उस शब्द के साथ के संकेत का प्रयोग किया जाता है जैसे:–

जा सकी थीं

— कहां पर अन्तिम हुक का प्रयोग नहीं किया जाता

"व" या **"य" हुक** का प्रयोग वक्र रेखाओं के साथ नहीं किया जाता । जब भी वक्र रेखा के बाद **"व"** अथवा **"य"** आता है, तो हुक का प्रयोग न करके "व" अथवा "य" की पूरी रेखा का प्रयोग किया जाता है जैसे :–

फन किन्तु, फावड़ा

किसी भी शब्द के अन्त में स्वर की अन्तिम ध्वनि आने पर हुक का प्रयोग नहीं किया जाएगा, क्योंकि अन्तिम स्वर के लिए अन्तिम रेखा का होना जरूरी है जैसे :–

मन और, माने

कान और, काना

— वाक्यांश में "न" हुक का प्रयोग

वाक्यांश में **"न" हुक** का प्रयोग सुविधा की दृष्टि से **"नहीं"**, **"दिन"** और प्रत्यय **"पूर्ण"** के लिए किया जाताा है जैसे:–

यह नहीं किया गया है कुछ दिन

मुर्खतापूर्ण 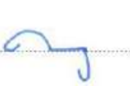 पिछले दिन सहानुभूतिपूर्ण

शब्द चिन्ह

केन्द्रीय .... परिवर्तन .... कल्याण ....

कारण .... किन, किन्तु ....

चुनाव .... जनाब .... प्रयोजन, जनता .... जिन–जिन्हें ....

प्रश्न, अपना–अपने–अपनी .... पुनः ....

स्पष्टीकरण .... संगठन .... संकटपूर्ण ....

नामुमकिन .... नौजवान ....

भारत, भारतीय .... भारतवर्ष ....

निर्भर .... मामला, मामूली .... मिल ....

वाक्यांश

इस विषय पर .... कुछ सालों में ....

नहीं हो सकता .... भारत सरकार ....

5.3 हुक और वृत्त का मेल

यदि किसी सरल रेखा के प्रारम्भ में "र –ड़" का हुक लगा हो और उससे पहले "स" अथवा "स्व" का वृत्त आए तो इस वृत्त को "र –ड़" हुक की तरफ ही मिला कर लिखा जाता है जैसे :–

कृति .... किन्तु, स्वीकृति ....

क्रय .... किन्तु, सक्रिय ....

"स" वृत्त को प्रारम्भिक हुक्स के अन्दर इस प्रकार लिखा जाना चाहिए कि वृत्त तथा हुक दोनों स्पष्ट रूप से दिखाई दें जैसेः–

बल .... किन्तु, सबल ....

मर .... किन्तु, समर ....

शब्दों के मध्य में **"ल" हुक** यदि सरलता से न लिखा जा सके तो **"ल" रेखा** को पूरा लिखना चाहिए जैसेः–

निश्चल ....

यदि **"त–वर्ग"**, **"च–वर्ग"**, **"ट–वर्ग"** या **"प–वर्ग"** के बाद **सकर** आए तो उसे निम्न प्रकार से लिखा जाता है जैसेः–

उपस्कर .... पुष्कर ....

टस्कर .... तस्कर ....

– अन्तिम हुक के साथ वृत्त का प्रयोग

जब भी सरल रेखाओं के अन्त में **"न्स"** या **"न्श"** आए तो **"स" वृत्त** को "न" हुक की ओर लिखा जाता है जैसेः–

दान .... किन्तु, दंश ....

वन .... किन्तु, वंश ....

इसी प्रकार वक्र रेखाओं में **"स" वृत्त** को **"न" हुक** के अन्दर लिखा जाता है जैसेः–

डंश .... मांस ....

वाक्यांश में रेखा .... का प्रयोग **"के अनुसार"** के संकेत के लिए किया जाता हैं जैसे:–

समय के अनुसार .... मौसम के अनुसार ....

बुद्धि के अनुसार .... सेनाध्यक्ष के अनुसार ....

नीति के अनुसार ....

यदि मूल शब्द के अन्त में हुक, लूप आदि का प्रयोग हो तो उस स्थिति में इन्हें एक साथ न लिखकर, थोड़ा अलग करके लिखा जाता है जैसे:–

अनुमान के अनुसार .... श्री सुमन के अनुसार ....

"स" वृत्त को "व" हुक के अन्दर लिखा जाता है जैसे:–

पावस .... लज्जावश ....

5.4 "शन हुक" का प्रयोग

एक अन्तिम बड़े हुक का प्रयोग **"शन"**, **"षण"** तथा **"सन"** को प्रकट करने के लिए किया जाता है जैसे:–

कमीशन .... राशन ....

भाषण .... निर्वासन ....

"सन" व "शन" जिस सीधी रेखा के अन्त में लिखा जाता है यदि उस सरल रेखा के प्रारम्भ में कोई हुक या वृत्त लगा हो तो अन्त में "शन" के बड़े हुक को प्रारम्भ में लगे हुक अथवा वृत्त की विपरीत दिशा में लगाया जाता है जैसे:–

प्रकाशन .... कर्षन ....

जहां तक हो सके अन्य स्थितियों में भी **"शन" हुक** लगाते समय रेखाक्षर के सीधेपन को बनाने का प्रयास भी किया जाना चाहिए जैसे:–

तत्क्षण .... भक्षण ....

सीधी रेखा जिसके आरम्भ में वृत्त, हुक आदि न लगा हो, के अन्तिम स्वर के विपरीत में **"शन" हुक** लिखा जाता है जैसे:–

पोषण .... रोशन ....

परन्तु, **"त", "द"** रेखाओं में **"शन" हुक** दाईं (Right) ओर लगता है जैसेः–

दर्शन ....

शब्द चिन्ह

प्राप्त .... प्रकट, पर .... परन्तु, ऊपर ....

प्रस्ताव .... प्रोत्साहन .... परिस्थिति ....

बड़ा–बड़े–बड़ी .... बढ़, बगैर .... बुरा–बुरे–बुरी ....

मुकाबला .... बल्कि .... बिल्कुल ....

मशहूर .... जरूर–जरूरत .... जरूरी .... फिलहाल ....

आई .... आईं .... आइये ....

आय, आए .... आएं ....

कई .... सहकार .... स्वीकार ....

वाक्यांश

के सामने .... उन्होंने कहा कि .... आदेश के अनुसार ....

इस बारे में .... की गई है कि .... उसी के अनुसार ....

कहा है कि .... विधान सभा .... नहीं हो सकेगा ....

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 5.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. आरम्भिक हुक से आप क्या समझते हैं ? "र–ड़" हुक के प्रयोग को उदहारण सहित स्पष्ट कीजिए ?
2. व्यंजन रेखा "ल" हुक के नियम उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए और यह भी बताइए कि यह वक्र रेखाओं पर लगने वाले "र" हुक से किस प्रकार भिन्न है ?
3. व्यंजन "श" के साथ "र" तथा "ल" हुक के प्रयोग उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ?
4. अंतिम छोटा हुक किन–किन व्यंजनों को प्रकट करता है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ?
5. "न" हुक को वाक्यांशों में किस प्रकार प्रयोग किया जाता है, स्पष्ट कीजिए ?
6.. अन्तिम बड़ा हुक किन ध्वनियों को प्रकट करता है ? इसके प्रयोग को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न 5.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) "र" हुक को सीधी रेखाओं के साथ .... गति से लिखा जाता है ।

(2) वक्र रेखाओं के अन्दर लिखे एक प्रारम्भिक बड़े हुक से .... का योग होता है ।

(3) रेखा .... के आरम्भ में हुक कभी नहीं लगाया जाता ।

(4) "न–ण" हुक को सीधी रेखाओं के साथ .... गति से लिखा जाता है ।

(5) "स" वृत्त को प्रारम्भिक हुक के अन्दर इस प्रकार लिखा जाता है कि .... तथा हुक दोनों स्पष्ट रूप से प्रकट हों ।

(6) "शन", "सन" तथा "षण" को एक .... से प्रकट किया जाता है ।

प्रश्न 5.3

निम्नलिखित में से सही / गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

(1) "ल" हुक को सीधी व्यंजन रेखा के साथ बायीं गति से लिखा जाता है ।

(2) "र" हुक को वक्र रेखाओं के अन्त में लिखा जाता है ।

(3) स्वर आने पर हुक का प्रयोग किया जाता है ।

(4) "व" और "य" हुक का प्रयोग मध्य में भी होता है ।

(5) वक्र रेखाओं में "स" वृत्त को "न" हुक के अन्दर लिखा जाता है ।

(6) शन–षण हुक का प्रयोग एक अन्तिम बड़े हुक के द्वारा किया जाता है ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

आशुलिपि में लिखिए :

1. तरल, नगर, सरस, कलम, पत्र, ग्राम ।
2. मगर, नकल, कठोर, नरक, पर्दा, असफल ।
3. तलाक, निर्मल, फर्क, अफसर, परहेज, कल्पना ।
4. आकर्षित, कृति, चर्म, तर्क, प्रेम, उत्कल ।
5. प्रचारक, शुल्क, क्रोध, कर्म, शर्मा, नम्र ।

अभ्यास पाठ 2–

आशुलिपि में लिखिए :

1. इस समय देश युद्ध के लिए तैयार है ।
2. वह कार्य अभी हो रहा है । बेहतर यह है कि तुम अपने काम मे लगे रहो ।
3. पिछले साल मेरा काम काफी जल्दी खत्म हो गया था ।
4. आवश्यकता इस चीज की है कि रेलों को तीव्र गति से विकसित किया जाए ।
5. ऐसा करने में किसी की हानि न होने की आशा है ।
6. भारत की आर्थिक रूप से संकटपूर्ण स्थिति अभी भी चल रही है ।
7. आज देश की उन्नति के साथ–साथ माल ले जाने की इस कमी को पूरा किया जाना आवश्यक है ।
8. हमारे क्षेत्र से निर्वाचित सदस्य अभी तक यहां नहीं पधारे । जनता उनका बेसब्री से इंतजार कर रही है ।
9. मेरा विचार है कि अब हमें किसी पर निर्भर नहीं होना चाहिए ।
10. किसी अनुभवी आदमी का विचार है कि दुःख में कभी नहीं घबराना चाहिए बल्कि धीरज से काम लेना चाहिए ।
11. आगामी चुनाव की तारीखों में अब परिवर्तन की आशा नज़र नहीं आ रही है ।
12. योजना मिनिस्टर महोदय ने रेलवे के मामले का स्पष्टीकरण दे दिया है ।
13. मुझे पूरा यकीन है कि भारत देश के नौजवान इस योजना को सफल बनाने की कोशिश करेंगे ।
14. देश में तीव्र गति से बढ़ती हुई बेरोजगारी को रोकने के लिए घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देना आवश्यक है ।
15. बुरी परिस्थिति में लोगों को घबराना नहीं चाहिए बल्कि संयम से काम लेना चाहिए ।
16. देश के सभी हिस्सों में सहकार लागू करने की कोशिश अवश्य होनी चाहिए ।

17. बाहर विभिन्न देशों से आए विचारकों के दर्शन हेतु जनता उत्सुक दिखाई दे रही है ।
18. इस कार्य की गति तेज रखनी होगी अन्यथा यह काम पूरा नहीं हो सकेगा ।
19. पिछले कुछ वर्षों में रेलवे की सुविधाएं काफी बढ़ी हैं, परन्तु अभी भी सुधारों की आवश्यकता है ।
20. यद्यपि इस समय देश संकटपूर्ण स्थितियों से गुजर रहा है, परन्तु सफलता को हासिल करना मुश्किल नहीं है ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 5.2— (1) दायीं (2) ल (3) र (4) दायीं (5) वृत्त (6) अन्तिम बड़े हुक ।

प्रश्न 5.3— (1) सही (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही (6) सही ।

यूनिट : 6 वैकल्पिक संकेत– "र–ड़", "ढ़", "ल", "ह" एवं "श" का प्रयोग

परिचय

पिछले अध्याय में आपने प्रारम्भिक एवं अन्तिम हुक्स के बारे में पढ़ा । इसके साथ ही आपने हुक और वृत्त के मिलान संबंधी नियमों को सीखा । अब आप इस अध्याय में – "र–ड़", "ढ़", "ल", "ह" एवं "श" के वैकल्पिक संकेतों के बारे में पढ़ेंगे । इस पाठ में यह बताया गया है कि कब इन व्यंजन रेखाओं को ऊपर और नीचे की दिशाओं में लिखा जाता है ।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- ऊपर और नीचे लिखे जाने वाली रेखा "र–ड़" एवं "ढ़" के नियम
- ऊपर और नीचे लिखे जाने वाली रेखा "ह" के नियम
- टिक "ह" एवं डॉट "ह" के नियम
- ऊपर और नीचे लिखे जाने वाली रेखा "ल" के नियम
- ऊपर और नीचे लिखे जाने वाली रेखा "श" के नियम

6.1 ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाली "र–ड़" एवं "ढ़" रेखा को लिखने के नियम :

यदि "र" से पूर्व स्वर आए तो "र" नीचे की ओर लिखा जाता है, परन्तु "र" के बाद स्वर आए तो ऊपर के "र" का प्रयोग होता है । किन्तु सुविधा की दृष्टि से स्वर का अपवाद कहीं भी किया जा सकता है, विशेष तौर पर "त", "थ", "द", "ध", "कल" और "गल" आदि रेखाओं के पहले व्यंजन रेखा "र" आने पर इसे नीचे से ऊपर की ओर भी लिखा जाता है जैसे :–

अरहर .... अर्थी ....
आरती .... अर्चना ....

- व्यंजन रेखा "म" से पहले "र" रेखा आने पर, "र" रेखा को हमेशा .... ऊपर से नीचे की ओर लिखा जाता है जैसे :–

आराम ....राम .... रमेश .... रोमांच ....

- जब दो मिली हुई रेखाएं ऊपर से नीचे की ओर लिखी गई हों और उसके बाद "र" रेखा आए तो "र" रेखा साधारणतः नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाती है जैसे :–

दादर .... पापड़ ....

– नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाने वाली सीधी / सरल रेखा के साथ नीचे से ऊपर की ओर .... "र" रेखा को बनाना ज्यादा सुविधाजनक होता है जैसे :–

हरी .... अनवर .... अरहर ....

– जब व्यंजन रेखा "र" से पहले कोई दूसरी रेखा हो और "र" रेखा के अन्त में हुक लगा हो तो नीचे से ऊपर की ओर की "र" रेखा का प्रयोग किया जाता है जैसे :–

धरण .... चरण .... मरण ....

– "फस" .... और "नस / नज़" .... तथा सीधी पड़ी रेखाओं के साथ भी नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाले "र" .... को अधिक सुविधापूर्वक लिखा जाता है जैसे :–

गुजर .... अफसर .... कसर ....

– जब भी शब्दों के बीच में "र" आए तो वह ज्यादातर नीचे से ऊपर की ओर .... लिखा जाता है जैसे :–

कारक .... मारना .... बारीकी ....

6.2 ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाली "ह" रेखा को लिखने के नियम :

वास्तव में व्यंजन रेखा "ह" का प्रयोग उर्ध्वमुखी दिशाओं में (नीचे से ऊपर की ओर) ज्यादा सुविधाजनक तरीके से किया जाता है जैसे :–

हाथ .... हद .... होश ....

हस्ती .... हीरा .... टहनी ....

– ऊपर की ओर लिखी जाने वाली व्यंजन रेखाओं के बाद अधिकतर नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाले "ह" का प्रयोग होता है जैसे :–

राह .... रिहाइश .... रहना ....

– जब "ह" अकेला हो, "क" वर्ग के पहले या "न" के पश्चात् "ह" आए तो हमेशा ऊपर से नीचे की ओर लिखे जाने वाले "ह" का प्रयोग किया जाता है जैसे –

नह .... हक .... हा ....

– पड़ी रेखाओं ("क", "ख", "ग", "घ", "म" और "न") तथा व्यंजन रेखा "ल" .... (नीचे से ऊपर की ओर) के पश्चात् यदि व्यंजन रेखा "ह" आती है तो "ह" व्यंजन रेखा हमेशा ऊपर से नीचे की ओर ही बनेगी जैसे :–

काह .... मेहर .... नहर .... लाहौर ....

– "स", "श" तथा "ज़" के साथ व्यंजन रेखा "ह" (ऊपर से नीचे की ओर) का प्रयोग वक्र के अन्दर किया जाता है जैसे:–

शाह .... सुहाग .... सुहाना ....

– "सह"–"शह" का बड़ा वृत्त :– नीचे से ऊपर एंव ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाने वाली व्यंजन रेखा "ह" के वृत्त को बड़ा करने पर उसमें "सह" तथा "शह" .... का बोध होता है जैसे :–

सहन .... सही .... शहीद .... उत्साह ....

परन्तु, यदि "स" या"श" के बीच में "अ" स्वर के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर आए तो "स" या "श" की पूरी रेखा का ही प्रयोग किया जाता है जैसे:–

साहस ....

इसी प्रकार यदि शब्दों के मध्य में "स–श" और "ह" के बीच में कोई भी स्वर आए तो "ह" के वृत्त को बड़ा करके इसका संकेत किया जाता है जैसे :–

निरूत्साह .... उत्साह ....

– **"ह" डॉट** – यदि किसी शब्द में "ह" व्यंजन रेखा को लिखना सुविधाजनक न हो तो व्यंजन रेखा "ह" के बाद आने वाले स्वर से पहले **एक हल्का डॉट** या **एक हल्का बिन्दु** लगाकर भी उसे लिखा जा सकता है जैसे :–

अवहेलना .... सराहना ....

– **"ह" टिक** – यदि व्यंजन "म", ""ल" .... और "र" (ऊपर से नीचे की ओर) .... से पहले "ह" आए तो ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाने वाली व्यंजन रेखा "ह" की दिशा में लिखा गया एक छोटा टिक "ह" के लिए लगाया जाता है जैसे :–

हर्ष .... हलचल .... हमेशा ....

किन्तु, यदि व्यंजन रेखा "ह" से पहले स्वर आ जाए तो "ह" टिक का प्रयोग नहीं किया जा सकता, क्योंकि स्वर को लिखने के लिए रेखा का होना आवश्यक है जैसे :–

हर .... किन्तु, आहार ....

हम .... किन्तु, अहम ....

6.3 ऊपर से नीचे व नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाली "ल" रेखा को लिखने के नियम :

– **"ल"** रेखा चाहे शब्द के शुरू में हो या आखिरी में, ऊपर की ओर बहुत ज्यादा प्रयोग की जाती है जैसे:–

लोन .... लाभ ....

लोद .... लाद ....

ताल .... पाल ....

माल .... जाल ....

– जब किसी वक्र रेखा के साथ वृत्त का मेल होता हो और उस वृत्त के एकदम पहले या वृत्त के बाद में **"ल"** आया हो तो **"ल"** रेखा को वृत्त की दिशा में ही लिखा जाता है । जैसे:–

नस्ल .... इल्ज़ाम ....

फसल .... फिसलना ....

– **"न"** तथा **"ड."** के पश्चात् **"ल"** :– .... "न" तथा .... "ड." रेखाओं के बाद में यदि **"ल"** आता है तो यह हमेशा नीचे की ओर ही लिखा जाता है । जैसे:–

नाली .... नील ....

रंगीला .... कर्नल ....

– **"म"** रेखा के बाद में आने वाला **"ल"** हमेशा ऊपर की ओर लिखा जाता है । जैसे:–

मोल .... माला ....

– **"ल" तथा स्वर संकेत:–**

प्रारम्भिक **"ल"** रेखा को नीचे की ओर तब लिखा जाता है जब उससे पहले कोई स्वर हो अथवा उसके एकदम बाद उससे जुड़ी हुई कोई पड़ी रेखा आई हो जैसे :–

लोम .... किन्तु, इल्म ....

लान .... किन्तु, अलान ....

लख .... किन्तु, अलख ....

लग .... किन्तु, अलग ....

– **"फ, "भ", "सक"** .... या सीधी ऊपरी रेखा **"र"** .... तथा **"व"** .... के बाद यदि **"ल"** आए और उसके बाद कोई भी स्वर न लगा हो तो नीचे का **"ल"** लिखा जाता है, किन्तु यदि **"ल"** के बाद कोई भी स्वर हो तो ऊपर का **"ल"** लिखा जाता है । जैसे:–

नवल .... किन्तु, नवेली ....

फल .... किन्तु, फला ....

सकल .... किन्तु, स्कूली ....

भाल .... किन्तु, भला ....

रेल .... किन्तु, रोली ....

– किसी भी शब्द के मध्य में **"ल"** का प्रयोग ज्यादातर ऊपर की ओर होता है, किन्तु सुविधा की दृष्टि से हम इसके दोनों रूपों का प्रयोग कर सकते हैं ।

6.4 ऊपर और नीचे की ओर लिखे जाने वाली "श" रेखा के नियम

नीचे के "श–ष" का प्रयोग :–

– जब "श" अकेला हो या **"र" हुक** से युक्त हो तो "श" नीचे की ओर बनाया जाता है जैसे:–

श्रेय .... ईश .... उषा ....

– जब "श" सीधी रेखाओं और **"न"** .... के साथ आता है तो "श" नीचे की ओर लिखा जाता है जैसे:–

शुरू .... काशी ....

मंशा .... पशु ....

ऊपर के "श–ष" का प्रयोग :–

– यदि **"भ"** और **"ल"** के पहले "श" आए तो यह नीचे से ऊपर की ओर लिखा जाता है जैसे:–

शाला .... शोभा ....

शूली .... शुभ ....

– किन्तु, "श–ष" यदि किसी वक्र रेखा के साथ मिलता है तो, उस रेखा की दिशा में ही "श–ष" को लिखा जाता है । जैसे:–

भाषाई ....

– **"ल" हुक** से युक्त होने पर "श" रेखा को ऊपर की ओर लिखा जाता है

जैसे:– बलशाली ....

– रेखा **"द" के बाद "श"** आने पर **"श" ऊपर** की ओर लिखा जाता है । जैसे:–

देशी .... दशा ....

किन्तु, **"द" के पहले "श–ष"** आने पर **"श–ष" नीचे** की ओर लिखा जाता है ।

जैसे:– शादी ....

– किसी रेखा में हुक लगा हो और उसके बाद **"श–ष"** आये तो **"श–ष"** ऊपर की ओर लिखा जाता है जैसे:–

प्रवेश ....

किन्तु, प्रारम्भिक हुक से युक्त किसी भी सीधी रेखा के साथ, हुक की विपरीत दिशा में **"श–ष"** लिखा जाता है । जैसे:–

प्रशस्त ....

– "कर" अथवा "कल" के पूर्व **"श–ष"** आने पर यह ऊपर की ओर लिखा जाता है जैसे :–

शक्ल .... शिकार ....

शेखर .... शुक ....

– **"व"** से पहले आने पर **"श–ष"** ऊपर की ओर लिखा जाता है जैसे :–

शिवालय .... ऐश्वर्य ....

वाक्यांश

हमने .... हम, हमें .... हमारा–हमारे–हमारी ....

हमको .... हमसे .... हममें .... हम पर ....

किन्होंने .... किनने .... किनका–किनके–किनकी ....

किनको .... किनसे .... किनमें .... किन पर ....

आपने .... आपका–आपके–आपकी .... आपको ....

आपसे .... आप में .... आप पर ....

तुमने .... तुम्हारा–तुम्हारे–तुम्हारी .... तुमको ....

तुममें .... तुम पर ....

जिनने .... जिन्होंने .... जिनका–के–की ....

जिनको .... जिनसे .... जिनमें .... जिन पर ....

आपके सामने .... इस बारे में .... के कारण से ....

कहा कि .... सरकार की तरफ से .... अति आवश्यक ....

इन अल्फाज़ के साथ ....

शब्द चिन्ह

उद्‌घाटन	कठिन	दृष्टिकोण	विध्वंस ....
असंतोष	असंतुष्ट	सांस्कृतिक	संस्कृति ....
परस्पर	हरगिज	हृदय	किन्हें ....

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 6.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

(1) किन्हीं दो परिस्थितियों को बताइये जब नीचे से ऊपर की ओर लिखे जाने वाले "र" का प्रयोग किया जाता है ?

(2) ऊपर से नीचे की ओर लिखे जाने वाले "र" का प्रयोग कब किया जाता है, उदाहरण सहित लिखिए ?

(3) टिक "ह" का नियम उदाहरण सहित बताइये ?

(4) ऊपर से नीचे की ओर लिखे जाने वाले "ह" का नियम उदाहरण सहित लिखिए ?

(5) किन परिस्थितियों में नीचे की ओर लिखे जाने वाले "ल" का प्रयोग किया जाता है ?

(6) ऊपर व नीचे की ओर लिखे जाने वाले "श" के नियम उदाहरण सहित बताइये ?

प्रश्न 6.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) पड़ी रेखाओं अथवा ऊपर की ओर लिखे जाने वाले "ल" के बाद .... "ह" का प्रयोग होता है ।

(2) यदि "र" के बाद स्वर आए तो .... "र" लिखा जाता है ।

(3) "स", "श–ष" अथवा "ज़" के साथ रेखा "ह" का प्रयोग .... के भीतर किया जाता है ।

(4) जब दो रेखाएं मिली हुई नीचे की ओर लिखी गई हों तो साधारणतः .... "र" का प्रयोग होता है ।

(5) "भ" और .... के पहले "श" आने पर यह ऊपर की ओर लिखा जाता है ।

प्रश्न 6.3

निम्नलिखित में से सही / गलत उत्तर छांटकर लिखिए –

(1) शब्दों के बीच में आने वाला "र" अधिकतर नीचे की ओर लिखा जाता है ।

(2) प्रारम्भिक या अन्तिम "र" के पूर्व कोई स्वर आए तो "र" नीचे की ओर लिखा जाता है ।

(3) "स", "द" तथा "प" से पहले आने वाले "ह" को एक टिक द्वारा प्रकट किया जाता है ।

(4) व्यंजन रेखा "ह" के वृत्त को बड़ा करने से "सह" अथवा "शह" का बोध होता है ।

(5) व्यंजन रेखा "व" से पहले "श" हमेशा नीचे की ओर लिखा जाता है ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

आशुलिपि में लिखिए :

1. करना, मरना, इरादा, लड़ना ।
2. बिमारी, शारदा, नहर, अकाल ।
3. हिमालय, हलवा, हमला, हरण ।
4. कालिका, कमाल, मंजूर, लड़का ।
5. हमारा यह विचार है कि सब लोग अच्छे कामों में अपना समय लगाएं ।
6. कठिन समय में उसे किसी का सहारा नहीं पहुंचा ।
7. इस देश की संस्कृति हरगिज ऐसी नहीं हो सकती ।
8. पुलिस ने आज चोरों को जेल भेज दिया ।
9. हमने लोगों को यह कह रखा है कि कल सभा अवश्य होगी ।
10. हमारे लिए सब काम ठीक हैं । लोगों को यहां रहना नहीं है ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 6.2– (1) नीचे की ओर (2) ऊपर का (3) वक्र (4) ऊपर की ओर (5) ल ।

प्रश्न 6.3– (1) गलत (2) सही (3) गलत (4) सही (5) गलत ।

यूनिट 7. यौगिक व्यंजन

परिचय :

पिछले अध्याय में आपने प्रारम्भिक हुक "र–ड़" एवं "ल" तथा अन्तिम हुक "न–ण", "व" एवं "य" और "शन" के नियमों के बारे में पढ़ा । इस अध्याय में आप यौगिक व्यंजन रेखाओं के बारे में सीखेंगे कि किस प्रकार हुक को बड़ा करने पर उसमें ग्य, ग्व, ख्य, क्य, स्य, श्य, श्व, ष्य, म्प, म्व, म्म तथा व्य का योग होता है । इन यौगिक ध्वनियों को हुक्स द्वारा तथा व्यंजनों को मोटा करके भी लिखा जाता है ताकि रेखाओं को संक्षिप्त रूप में लिखकर तीव्र गति प्राप्त की जा सके ।

उद्देश्य :

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- यौगिक व्यंजनों का वर्गीकरण
- "स" वृत्त के बाद एक छोटा हुक बनाने से उसमें "य" का योग होता है
- वक्र रेखा "म" को मोटा करने पर उसमें प, ब तथा भ का योग
- रेखा "व" के हुक को बड़ा करने पर उसमें "य" का योग

– यौगिक व्यंजनों का वर्गीकरण

जब दो व्यंजन आपस में मिलते हैं तो प्रारम्भिक व्यंजन में स्वर नहीं लगाया जाता या कहा जाए कि वह आधा लिखा जाता है । ऐसे व्यंजन यौगिक व्यंजन / संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं जैसे :– ग्य, ग्व, क्व, ख्य और ख्व आदि । इनके अलावा और भी यौगिक व्यंजन हैं जैसे :– स्य, श्य, श्व, ष्य, म्प, म्ब, म्भ तथा व्य । इन्हें बनाने के लिए आशुलिपि में अनेक प्रकार के प्रावधान किए गए हैं ।

"क" वर्ग के साथ यौगिक व्यंजन :–

एक बड़े प्रारम्भिक हुक से **"क–वर्ग"** में **"य"** तथा **"व"** का योग होता है । जैसेः–

भाग्य योग्यता

ज्ञान आज्ञाकारी

क्व, ग्व के साथ **"ल"** आए और अन्त में स्वर हो तो **ऊपर का "ल"** लिखा जाता है और अन्त में स्वर न होने पर **नीचे का "ल"** लिखा जाता है । जैसेः–

ग्वाला किन्तु, ग्वाल

श्व, स्य, ष्य का प्रयोग :–

जब हम **"स"** वृत्त की दूसरी ओर उसी गति से एक छोटा हुक बनाते हैं तो इसे हम **"य"** के रूप में प्रयोग करते हैं जैसे:–

कांस्य .... भविष्य .... मनुष्य ....

"स", **"श"** और **"य"** के बीच में यदि **"ई" स्वर** आए तो यह स्वर हुक के बाहर लगाया जाता है जैसे:–

वंशीय .... प्रदेशीय .... दिवसीय ....

म्प, म्ब, म्भ का प्रयोग :–

वक्र रेखा **"म"** को मोटी करने पर .... इस रेखा में "प", "ब" या "भ" का भी योग होता है जैसे:–

चम्पक .... चम्बल .... भूकम्प ....

व्य का प्रयोग :–

प्रारम्भ में जब रेखा **"व"** के हुक को बड़ा करके लिखते हैं तो उसमें **"य"** का योग भी होता है जैसे:–

व्यथा .... व्यापार .... व्याकरण ....

शब्द चिन्ह

गम्भीर–गम्भीरता .... समाप्त ....

सम्भव .... सम्बन्ध–सम्बन्धी–सम्बन्धित ....

निर्माण .... निर्विघ्न ....

महान .... मुमकिन .... विद्यमान ....

वाक्यांश

तुम्हारे पास .... हमारे पास ....

पुनरीक्षा प्रश्न
प्रश्न 7.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. यौगिक व्यंजन किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित बताइये ?
2. "म" रेखा को मोटा करने पर उसमें किसका योग होता है, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ?
3. "व" रेखा के हुक को बड़ा करने पर उसमें किस व्यंजन का योग होता है ? उदाहरण देकर बताईये ?
4. श्व, स्य, ष्य यौगिक व्यंजन को आशुलिपि में किस प्रकार लिखा जाता है, उदाहरण देकर बताइये ?

प्रश्न 7.2

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) रेखा "व" के हुक को बड़ा करने पर .... का योग होता है ।

(2) स्य, श्य, ष्य को "स" वृत्त की दूसरी ओर उसी गति से लिखे एक .... हुक द्वारा प्रदर्शित किया जाता है ।

(3) स, श और य के मध्य में .... स्वर होने पर स्वर को हुक के बाहर लगाया जाता है ।

(4) म्प, म्ब के लिए "म" रेखा को .... करके लिखा जाता है ।

(5) एक बड़े प्रारम्भिक हुक से .... में य तथा व का योग होता है ।

प्रश्न 7.3

निम्नलिखित में से सही/गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

1. यौगिक व्यंजन को संयुक्त व्यंजन भी कहा जाता है ।
2. यौगिक व्यंजन में आरम्भिक व्यंजन आधा होता है ।
3. रेखा "व" के हुक को बड़ा करने पर उसमें त का योग होता है ।
4. एक अन्तिम बड़े हुक से "क" वर्ग में य तथा व का योग होता है ।
5. "म" रेखा को मोटा करने पर उसमें प, ब तथा भ का योग होता है ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

आशुलिपि में लिखिए :

1. व्यवस्था, चम्पा, व्यापार, खम्भा, लम्बा ।
2. व्यय, दम्भ, मनुष्य, दम्पत्ति, हास्य ।
3. रहस्य, ब्यौरा, व्यस्त, लक्ष्य, मनुष्यता ।
4. रम्भा, कम्बल, ख्याल, वाक्य, अज्ञानी ।
5. चम्पक, विडम्बना, उद्देश्य, विज्ञान, स्तम्भ ।

अभ्यास पाठ 2–

आशुलिपि में लिखिए :

1. तुम्हारे पास काफी धन जमा है । किन्तु हमारे पास धन की बहुत कमी है ।
2. सभी लोगों का यही उद्देश्य है कि इस साल निर्वाचन बिना किसी मुश्किल के सम्पन्न हो ।
3. इस विषय पर सभी लोगों को गम्भीरता से विचार करना चाहिए ।
4. सभी भाषाओं के लिए व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक होता है ।
5. भूकम्प आने पर सभी लोगों को अपने घरों से बाहर आ जाना चाहिए ।
6. कल की सभा में कुछ नेता ही विद्यमान थे जो कि सभा के नियमों के विरूद्ध था ।
7. प्रत्येक विद्यार्थी को अपने अध्यापकों की आज्ञा का पालन करना चाहिए ।
8. मनुष्य को केवल अपने भाग्य पर ही निर्भर नहीं होना चाहिए ।
9. धन होने की स्थिति में धन का अपव्यय नहीं करना चाहिए ।
10. एक दिवसीय बैठक में सभी नेताओं ने भाग लिया ।
11. बिना विलम्ब के इस रास्ते का अवलम्बन सभी लोगों को करना चाहिए ।
12. ओलम्पिक खेलों में हमारे देश के खिलाड़ी ज्यादा अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते ।
13. प्रत्येक रहस्य को सुलझाने में हर व्यक्ति सक्षम नहीं होता ।
14. कार्य में सामंजस्य बिठाकर ही सफलता प्राप्त की जा सकती है ।
15. आज भारत देश विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ता जा रहा है ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 7.2– (1) य (2) छोटे (3) ई (4) मोटा (5) "क" वर्ग ।

प्रश्न 7.3– (1) सही (2) सही (3) गलत (4) गलत (5) सही ।

यूनिट : 8 स्वर संकेत तथा आवश्यक स्वर

परिचय :

पिछले अध्याय में आपने यौगिक व्यंजन रेखाओं के बारे में सीखा । वृत्त, लूप और हुक के प्रयोग संबंधी सभी नियमों के अध्ययन के उपरांत आपको निम्नलिखित बातों के बारे में भी जानना आवश्यक है । इस अध्याय में आप यह सीखेंगे कि यदि शब्द का आरम्भ या अन्त स्वर से होता है तो स्वर को स्थान देने के लिए पहली या अन्तिम व्यंजन रेखा अवश्य लिखी जाती है । इसके साथ–साथ हम यह भी सीखेंगे कि किन स्थितियों में स्वरों का संकेत अवश्य करना चाहिए ।

उद्‌देश्य :

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- आरम्भिक एवं अन्तिम स्वर की मौजूदगी
- आरम्भिक एवं अन्तिम व्यंजन की मौजूदगी
- स्वरों का संकेत किन स्थितियों में अवश्य करना चाहिए

8.1 आरम्भिक एवं अन्तिम स्वर की मौजूदगी

वृत्त, लूप और **हुक** के सभी नियमों के अध्ययन के बाद आप यह अच्छी तरह से जान गए होंगे कि यदि शब्द का आरम्भ या अन्त व्यंजन से होता है तो वह संक्षिप्त से संक्षिप्त रूप में लिखा जाता है जैसे:–

सब सूट

कष्ट स्थिर

इसी प्रकार यदि शब्द का आरम्भ या अंत स्वर से होता है तो स्वर को स्थान देने के लिए पहला या अन्तिम व्यंजन रेखा द्वारा लिखा जाता है जैसे:–

अपना अकाल

गाना काली

और उसी रेखा से ही स्वर की मौजूदगी समझी जाती है ।

आरम्भिक स्वर की मौजूदगी

असल	अपराध	अभाव
अर्थ	अलग	इमली
अंक	अटल	अपमान

अन्तिम स्वर की मौजूदगी

रस्सी	नारी	भावना
पास्ता	असमानता	कली

8.2 आरम्भिक एवं अन्तिम व्यंजन की मौजूदगी

आरम्भिक व्यंजन की मौजूदगी

समीप	सुधार	सम्मान
लोभ	विकसित	विमान

अन्तिम व्यंजन की मौजूदगी

आचरण	गुण
ऋण	संदेश
बार	तार
किस्म	समस्त

8.3 स्वरों का संकेत किन स्थितियों में अवश्य करना चाहिए

कुछ ऐसी व्यंजन रेखाएं हैं जिनमें स्वर संकेत अवश्य ही करना चाहिए :–

– ऐसी शब्द रेखाएं जिसमें प्रारम्भ और अन्त में, दोनों ओर स्वर हो, वहां अन्तिम स्वर अवश्य लिखना चाहिए जैसे:–

अभागा .... नारी .... नीला ....

– किसी भी शब्द रेखाओं में पहले अथवा बाद में द्विध्वनिक स्वरों के लगे रहने के बावजूद भी उन्हें उचित स्थान पर ही लिखा जाना चाहिए जैसे:–

आइना .... जाएगा .... फायदा ....

– जहां पर ऊपर तथा नीचे की ओर लिखे जाने वाले "र" तथा "ल" के प्रारम्भ अथवा अन्त में स्वर आता हो, वहां अन्तिम स्वर का संकेत अवश्य किया जाना चाहिए जैसे:–

आराधना .... अराजकता ....

नाली .... थाली ....

– **साधारणतः स्वरों का संकेत निम्न स्थितियों में अवश्य करना चाहिये :**

(क) जहां स्त्रीलिंग अथवा बहुवचन के शब्दों का संकेत करना हो जैसे:–

लड़की .... घोड़ी .... कहते हैं ....

जाती हैं .... जाते हैं .... रहते हैं ....

(ख) जहां एक ही प्रकार के समान स्थान वाले शब्द आते हों ।

(ग) जहां नये शब्द आये हों; तथा

(घ) जहां कोई शब्द रेखा गलत तरीके से, गलत स्थान पर लिखी गई हो । इस तरह की परिस्थिति में स्वर का संकेत करना ही एक सही उपाय हो सकता है ताकि शब्द को समझने एवं पढ़ने में किसी प्रकार की परेशानी ना हो ।

– जहां तक संभव हो इन सभी परिस्थितियों में स्वर का संकेत अवश्य कर देना चाहिए जैसे :--

(क) विषय नया होने पर ।

(ख) यदि भाषा कविता की हो, श्लोक की हो तथा असाधारण होने पर ।

शब्द चिन्ह

संरक्षण .... दोनों .... उत्पादन ....

परिणाम .... साधारण ....

शिक्षण .... उत्पन्न .... सिफारिश ....

पुनरीक्षा प्रश्न
प्रश्न 8.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. उन स्थितियों को बताइये जहां स्वरों का संकेत करना आवश्यक होता है ?
2. यदि शब्द का आरम्भ या अन्त स्वर से होता है तो स्वरों का संकेत किस प्रकार किया जाता है, उदाहरण सहित बताइये ?
3. शब्द रेखाओं में प्रारम्भिक अथवा अन्तिम द्विध्वनिक स्वरों की मौजूदगी होने पर स्वरों को लगाना आवश्यक है, उदाहरण सहित बताइये ?
4. ऊपर तथा नीचे की ओर लिखे जाने वाले "र" तथा "ल" के साथ प्रारम्भिक अथवा अन्तिम स्वर का संकेत किस प्रकार किया जाता है, उदाहरण देकर बताइये ?

प्रश्न 8.2

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) शब्द का आरम्भ या अन्त .... से होता है तो वह संक्षिप्त से संक्षिप्त रूप में लिखा जाता है ।

(2) व्यंजन रेखा वाली शब्द रेखा जिसमें पहले और अन्त दोनों ओर .... हो तो अन्तिम स्वर लिखना आवश्यक होता है ।

(3) जहां कोई शब्द रेखा अशुद्ध, भद्दी अथवा .... स्थान पर लिखी गई हो वहां स्वर का संकेत करना ही एक उत्तम उपाय है ।

(4) जहां पर विषय .... हो उस स्थिति में भी स्वर का संकेत कर देना चाहिए ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1—

आशुलिपि में लिखिए :

1. अब आप अविलम्ब घर चले आइये ।
2. विदाई लेते समय गीता रो रही थी ।
3. आगरा में एक नए पुल का निर्माण होगा ।
4. रात में रेत पर बैठना ठीक नहीं है ।
5. आपको सभी लोगों का आदर करना चाहिए ।
6. अब लोगों को समझ लेना चाहिए कि गर्व से रहना और गौरव से रहना दोनों अलग बातें हैं ।
7. आयोग ने यह सुझाव दिया है कि देश में पेट्रोल का उत्पादन ज्यादा किया जाए ।
8. अभी भी देश में हिन्दी शिक्षण संस्थाओं की संख्या कम है ।
9. आप लोगों की इच्छा अब उच्च शिक्षा प्राप्त करने की है ।
10. हमारे देश में अभी भी काफी लोग हिन्दी भाषा को सीख नहीं पाए हैं ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 8.2— (1) व्यंजन (2) स्वर (3) गलत (4) अपरिचित ।

यूनिट 9. हार्विंग (अर्द्धकरण) एवं डबलिंग (द्विगुणन) के नियम

परिचय

पिछले अध्याय में आपने यौगिक व्यंजनों के बारे में सीखा । इस अध्याय में आप सीखेंगे कि किसी रेखा की लम्बाई को आधा करने से उसमें ट, ठ, त तथा द का योग होता है । अकेली पतली रेखा को केवल ट, ठ तथा त के लिए आधा किया जाता है जबकि मोटी रेखा को "द" के लिए आधा किया जाता है । आप यह भी सीखेंगे कि आधी व्यंजन रेखाओं को भी स्वरों के अनुसार किस प्रकार रेखा से ऊपर और रेखा पर लिखा जाता है ।

इस अध्याय में आप रेखाओं को दुगुना करने के नियम भी सीखेंगे । जब किसी रेखा को दुगुना करने पर उनमें तर, तार, दर, दार या कर, कार का योग होता है, यही डबलिंग नियम या द्विगुणन सिद्धांत कहलाता है । इस पाठ को पढ़कर हम और अधिक गति से आशुलिपि लिखने में निपुण हो सकेंगे ।

उद्देश्य :

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- हार्विंग के नियम
- अर्द्ध रेखाओं का स्थान
- हार्विंग नियम में अपवाद
- वाक्यांशों में हार्विंग के नियम का प्रयोग
- डबलिंग के नियम
- डबल रेखाओं का स्थान
- डबलिंग नियम में अपवाद
- वाक्यांशों में डबलिंग के नियम का प्रयोग

9.1 हार्विंग के नियम

कुछ रेखाक्षर आशुलिपि में विशेष रूप से बार–बार प्रयोग होते हैं । यदि इन रेखाक्षरों की पूरी आउटलाईन बनाएं तो आशुलिपि में उच्च गति लेखन संभव नहीं है । किसी व्यंजन रेखा की लम्बाई को आधा करने पर उसमें "ट", "ठ", "त" या "द" का योग होता है । यही हार्विंग का नियम कहलाता है ।

हार्विंग के नियम निम्नलिखित हैं :

- जब किसी एक खण्ड के शब्दों के अन्त में हुक नहीं लगा हो तो पतली रेखा को केवल "ट", "ठ" तथा "त" के लिए और मोटी रेखा को "द" के लिए आधा किया जाता है जैसे :–

इष्ट 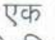 पठ 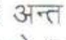 पात 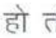 भद 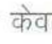

- एक से अधिक व्यंजन रेखाओं के एक साथ बने बड़े शब्दों में उस रेखा को "ट", "ठ", "त" या "द" के लिए आधा किया जाता है जिसके साथ ये शब्द आते हैं जैसे :–

  पटवारी .... असीमित .... भगवत .... शब्द ....

- यदि किसी रेखा के अंत में हुक लगा हो तो उस रेखा को "ट", "ठ", "त" या "द" के लिए आधा किया जाता है जैसे :–

  डांट .... कंठ .... महावत .... बन्द ....

- किसी भी अन्तिम हुक लगे आधी रेखा वाले शब्द में पहले रेखा, उसके बाद हुक और फिर "ट", "ठ", "त" या "द" पढ़ा जाता है जैसे :–

  बन्द .... (इस शब्द में पहले "ब", फिर "न" हुक और अन्त में "द" पढ़ा जाएगा)

- व्यंजन "म", "न" और "ल" .... की रेखाओं को आधा करके लिखने पर "त" या "ट" का योग होता है, परन्तु इन रेखाओं को मोटा करके लिखने पर इनमें "द" का भी योग होता है जैसे :–

  मटकना .... नटवर .... अहमद .... जल्लाद ....

- ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाने वाली व्यंजन रेखा "र" .... को आधा करने के साथ–साथ मोटा कर देने से इसमें "द" और "ध" का भी योग होता है जैसे :–

  हरदम ....

- ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाने वाली व्यंजन रेखा "र" .... तथा "र" हुक लगी रेखाओं को आधा करने से उनमें "थ" का योग होता है जैसे :–

  अर्थ .... आर्थिक .... प्रथमा ....

- मोटी (गहरी) व्यंजन रेखाओं को आधा करने पर उनमें "ध" का भी योग होता है जैसे :–

  बाधक .... प्रबन्ध ....

9.1.1 अर्द्ध रेखाओं का स्थान

किसी शब्द की पहली रेखा यदि आधी हो तो प्रथम स्थान के लिए लाईन के ऊपर तथा द्वितीय स्थान के लिए लाईन पर लिखी जाती है, परन्तु तीसरे स्थान का स्वर आने पर भी इन रेखाओं को लाईन पर ही लिखा जाता है । यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि ऊपर या नीचे लिखी जाने वाली रेखाओं का आधा रूप स्वर संकेत के लिए लाईन काटकर कभी नहीं लिखा जाता जैसे :–

बादली .... पत्तल .... पीतल ....

9.1.2 हार्विंग नियम में अपवाद

हार्विंग का नियम निम्नलिखित परिस्थितियों में लागू नहीं किया जाता :

- नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाने वाली अकेली व्यंजन रेखा "र" को कभी भी आधी नहीं लिखा जाता जैसे :– "रथ" शब्द बनाने के लिए "र" व्यंजन रेखा "थ" के लिए आधी नहीं लिखी जाएगी जैसे :–

  रथ

  यहां यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि किसी भी शब्द के अन्त में "ट", "ठ", "त" और "द" रेखा के बाद स्वर आने पर रेखा पूरी ही लिखी जाती है क्योंकि अन्तिम स्वर के लिए अन्तिम रेखा लिखी जानी जरूरी होती है जैसे :–

  पत किन्तु, पता 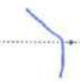

  लत किन्तु, लता

- "म्प" और "म्ब" को तभी आधा किया जा सकता है जब वह किसी हुक से युक्त हो जैसे :–

  संपन्न

- जहां पर दो असमान लम्बाई की रेखाओं का मेल सम्भव न हो, वहां पर उन्हें अलग लेकिन पास–पास/साथ–साथ लिखा जाता है जैसे :–

  प्रबन्ध

9.1.3 वाक्यांशों में हार्विंग के नियम का प्रयोग

वाक्यांश में हार्विंग के सिद्धांत के अनुसार व्यंजन रेखा "क" का प्रयोग "तक" के लिए किया जाता है जैसे :–

अब तक जब तक

तब तक कहां तक 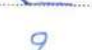

जहां हार्विंग के नियम का प्रयोग संभव न हो अर्थात् जहां व्यंजन रेखा "क" लिखना संभव न हो वहां रेखा "तक" को पूरा ही लिखा जाता है जैसे :–

जहां तक

शब्द चिन्ह

कर्तव्य .... अत्यन्त .... सन्देह ....

समर्थ .... समर्थन .... प्रत्यक्ष ....

परिवर्तित .... मध्य, सम्बन्द्ध .... संयुक्त ....

अन्दर .... स्वीकृत .... सम्मिलित ....

संरक्षित .... बात, बाद .... बहुत ....

विरोध, विरोधी, विरूद्ध .... अर्थात् ....

प्रत्येक .... प्रयत्न–पर्याप्त ....

शायद .... शक्ति, शिक्षित ....

निहायत .... हाथ ....

अन्त, अन्तिम .... अन्त में .... जाता ....

9.2 डबलिंग के नियम

जब हम किसी व्यंजन रेखा को दुगुना करके लिखते हैं तो उसमें "तर", "तार", "दर", "दार" या "कर", "कार" का योग होता है, यही डबलिंग / द्विगुणन का नियम कहलाता है जैसे :–

निरन्तर .... लगातार .... केन्द्र ....

सरकार .... सुन्दर .... तहसीलदार ....

डबलिंग के नियम निम्नलिखित हैं :

– सरल व्यंजन रेखाओं को तभी दुगुना किया जा सकता है जब उस रेखा से पहले वृत्त या व्यंजन रेखा लगी हो, या फिर उसके अन्त में हुक, द्विध्वनिक मात्रा या व्यंजन रेखा लगी हो जैसे :–

सचित्र .... किन्तु, चित्र ....

सुपात्र .... किन्तु, पात्र ....

केन्द्र .... किन्तु, कद्र ....

पत्रकार .... किन्तु, पत्र ....

– "म्प" .... तथा "ङ." (अंग) .... जिसके साथ प्रारम्भ में या अन्त में हुक न लगा हो, इनको दुगुना करने पर "र" और "आर" का योग होता है जैसे :–

सम्प्रदाय .... संग्रह .... सम्पर्क ....

– यदि नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाने वाली रेखाओं में "अम्बर" लगाने की आवश्यकता हो तो "अम्बर" के लिए .... (म्बर) रेखा बनाई जाती है जैसे :– लम्बरदार .... अन्य सभी परिस्थितियों में .... का प्रयोग होता है जैसे:– पीताम्बर ....

इसी प्रकार **"अंगर"** के लिए "अंग" (ङ.) .... व्यंजन रेखा को दुगुना करके लिखा जाएगा तथा **"अंकर"** के लिए "र" हुक के साथ "न" व्यंजन रेखा .... को दुगुना करके लिखा जाएगा जैसे :–

लंगर .... कंकड़ ....

– व्यंजन रेखा "ल" जब अकेली हो तो उसे दुगुना करके लिखा जा सकता है जैसे :–

लतर ....

– डबल / दुगुनी रेखाओं के अन्त में हुक लगने पर पहले रेखा, फिर हुक और अन्त में "तर", "तार", "दर", "दार" आदि पढ़ा जाता है जैसे :–

चन्द्र .... केन्द्र ....

9.2.1 डबल रेखाओं का स्थान

डबल रेखाओं को बनाते समय इनके स्थान का अवश्य ध्यान रखना चाहिए । अतः जहां तक संभव हो सके स्वर के अनुसार ही रेखा को लाईन से ऊपर, लाईन पर या लाईन से काटकर लिखना चाहिए जैसे:–

सत्र .... जागीरदार ....

सूत्र .... अन्तर ....

9.2.2 डबलिंग नियम में अपवाद

किसी भी शब्द के अन्त में "तर", "तार", "दर", "दार" और "कर", "कार" आदि आएं और इनके अन्त में यदि स्वर लगा हो तो डबलिंग का नियम लागू नहीं होगा । क्योंकि अन्तिम स्वर के लिए हमेशा अन्तिम रेखा को बनाना आवश्यक होता है जैसे :–

ईमानदार .... किन्तु, ईमानदारी ....

9.2.3 वाक्यांशों में डबलिंग के नियम का प्रयोग

वाक्यांश में इस नियम का प्रयोग "तरह" तथा "तौर" को प्रकट करने के लिए किया जाता है जैसे :–

हर तरह से .... आम तरह से ....

आम तौर पर .... मिसाल के तौर पर ....

सुझाव के तौर पर ....

इस नियम के अनुसार व्यंजन रेखा **"स"** को "तर" तथा "तरह" के लिए दुगुना करके लिखा जाता है जैसे :–

इस तरह .... इस तरह से .... इस तरीके से ....

इसी तरह .... इसी तरह से .... इसी तरीके से ....

सुविधानुसार क्रियाओं में आने वाले **"न"** के लिए, "न" रेखा को **"चाहिए"** के लिए दुगुना किया जाता है जैसे :–

पाना चाहिए .... देना चाहिए ....

होना चाहिए .... कहना चाहिए ....

देखना चाहिए .... खाना चाहिए ....

इसी प्रकार **"चाहिएं"** के लिए "न" रेखा को दुगुना करके उसमें "न" हुक का भी प्रयोग किया जाता है जैसे :–

देखने चाहिएं .... लेने चाहिएं ....

वाक्यांश में डबलिंग नियम के कुछ अन्य प्रयोग इस प्रकार हैं जैसे :–

वसन्त ऋतु .... शुरू कर दिया है ....

काम करने के लिए .... बढ़ा–चढ़ाकर .... मान कर ....

शब्द चिन्ह

ज्यादातर .... प्रकार .... क्योंकि .... क्यों ....

व्यवहार .... केवल .... वर्तमान ....

वातावरण .... वर्णन .... विवरण ....

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 9.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. अकेली हल्की व्यंजन रेखा को आधा करने पर किसका योग होता है, उदाहरण सहित बताइये ?
2. हार्विंग नियम में तीसरे स्थान का स्वर आने पर रेखा को कहां लिखा जाता है, उदाहरण देकर समझाइये ?
3. वाक्यांश में हार्विंग के नियम का प्रयोग उदाहरण देकर बताइये ?
4. हार्विंग के नियम का प्रयोग किन परिस्थितियों में नहीं किया जाता ?
5. सरल रेखाओं के साथ डबलिंग का नियम कब लागू होता है, उदाहरण सहित समझाइये ?
6. क्या "ल" रेखा अकेली हो तो उसे डबल किया जा सकता है, यदि हां तो उदाहरण देकर समझाइये ?
7. डबलिंग नियम में अपवाद बताइये ?
8. वाक्यांश में डबलिंग नियम का प्रयोग किन शब्दों के लिए किया जाता है, उदाहरण देकर बताइये ?

प्रश्न 9.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) किसी रेखा को दुगुना करने से उसमें तर, तार, दर, दार या .... का योग होता है।

(2) वाक्यांश में "स" व्यंजन रेखा को तर एवं तरह के लिए .... किया जाता है ।

(3) डबल रेखाओं के अन्त में हुक लगने पर पहले रेखा, फिर .... और अन्त में तर, दर आदि खण्ड की ध्वनि पढ़ी जाती है ।

(4) किसी रेखा की लम्बाई को आधा करने से उसमें .... का योग होता है ।

(5) एक खण्ड के शब्दों के अन्तिम हुक से युक्त न होने पर मोटी रेखा को .... के लिए आधा किया जाता है ।

(6) ऊपर की ओर लिखी जाने वाली अकेली व्यंजन रेखा .... को कभी आधा नहीं लिखा जाता ।

प्रश्न 9.3

निम्नलिखित में से सही/गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

(1) हार्विंग के नियम में तीसरा स्थान होने पर भी रेखा को लाईन पर ही लिखा जाता है ।

(2) वाक्यांश में हार्विंग के नियम का प्रयोग चाहिए के लिए किया जाता है ।

(3) म, न, ल व्यंजन रेखाओं को आधा करने पर प, फ का योग होता है ।

(4) किसी शब्द के अन्त में त, द, ठ या द के बाद स्वर आने पर पूरी रेखा लिखी जाती है ।

(5) नीचे की ओर लिखी जाने वाली व्यंजन रेखा "र" को आधा करने से उसमें "थ" का योग होता है ।

(6) हार्विंग नियम के अनुसार म्प को किसी हुक से युक्त होने पर ही आधा किया जा सकता है अन्यथा नहीं ।

क्रियाकलाप

अभ्यास पाठ 1–

आशुलिपि में लिखिए :

1. बन्दर, कवीन्द्र, केन्द्र, चन्द्र, अन्तर ।
2. निरन्तर, जानदार, खबरदार, मन्दिर ।
3. नित्य, बेहद, दर्द, मजबूत, गलत ।
4. तुरन्त, पसन्द, घटना, मृतक, हड़ताल ।
5. नैतिक, स्थापित, पटवारी, अकस्मात, अन्धाधुन्ध ।

अभ्यास पाठ 2–

आशुलिपि में लिखिए :

1. देश में ज्यादातर लोग गरीब हैं । क्योंकि उनको काम नहीं मिलता ।
2. मैं हर तरह से आपकी मदद के लिए तैयार हूं, परन्तु आपको मुझे अपना मित्र मानना होगा ।
3. आपके साथ किसने बुरा व्यवहार किया है । इसके बारे में पता लगाना होगा ।
4. इस विषय का केवल वर्णन करने से ही काम पूरा नहीं होगा ।
5. लोगों को कविताएं लिखनी चाहिएं ताकि उनकी कौशलता बनी रहे ।
6. आप जब भी हमारे नगर में आएं अपने मित्रों को अवश्य लेकर आएं ।
7. यह निहायत जरूरी है कि देश में सब लोग मिलकर काम करें ।
8. शिक्षित लोगों को चाहिए कि वे अन्य लोगों को शिक्षा देने में मदद करें ।
9. प्रत्येक दल के नेता का यह प्रयत्न होना चाहिए कि सभा में सभी लोग उसका साथ दें ।
10. अनेक विरोधी दलों ने इस विषय में गठबन्धन कर लिया है ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 9.2– (1) कर, कार (2) दुगुना (3) हुक (4) ट, ठ, त या द (5) द (6) र ।

प्रश्न 9.3– (1) सही (2) गलत (3) गलत (4) सही (5) सही (6) सही ।

यूनिट : 10.   नोट लिखना और अनुवाद (लिप्यांतरण)

परिचय

पिछले अध्याय में आपने हार्विंग एवं डबलिंग के नियमों के बारे में सीखा । चूंकि अब आपने शब्द चिन्ह, संक्षिप्त संकेत एवं वाक्यांशों का पूर्ण ज्ञान एवं अभ्यास कर लिया है । अतः अब आप उच्च गति पर श्रुतलेख लिखने में सक्षम हैं, परन्तु इसके लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है । इस अध्याय में आप नोट लिखने की तकनीक और कम्प्यूटर लिप्यांतरण करना सीखेंगे ताकि उच्च गति पर आप शुद्ध रेखाक्षर लिख व पढ़ सकें ।

उद्देश्य :

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि :

- नोट लिखते समय नोट बुक के पन्ने उलटने की तकनीक
- स्वरों का लोप तथा रेखाओं में काट
- स्थान लेखन
- नियमों का अभ्यास
- रेखा शब्दों का ज्ञान
- शब्द संकेतों का ज्ञान
- अभ्यास करने के नियम
- नियमित अभ्यास
- विभिन्न विषयों का लिखना
- एकाग्रता
- नोट लेखन में विराम चिन्ह का प्रयोग
- तकनीकी विषयों को लिखना
- श्रुतलेख का कम्प्यूटर पर लिप्यांतरण

– नोट लिखते समय नोट बुक के पन्ने उलटने की तकनीक

नये सीखने वाले प्रशिक्षार्थियों को नोट लिखते समय नोट–बुक के पन्ने उलटने में कठिनाई हो सकती है । उनकी सुविधा के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं :–

- नोट बुक के पेज के ऊपरी भाग में लिखते समय बायें हाथ (Left Hand) की दूसरी अंगुली को उस पेज के नीचे रखें और उस पेज को अंगूठे तथा पहली अंगुली से दबाकर सीधा रखना चाहिए । पेज के निचले भाग पर लिखते समय पेज को धीरे–धीरे उठाना चाहिए जब तक कि वह नोट–बुक के ऊपर के आधे हिस्से से ऊपर हो जाए और सुविधानुसार पहली अंगुली और अंगूठे को पेज से उठा लें, तो वह पेज आप ही उलट जायेगा । मेज या टेबल पर आशुलिपि लिखते समय नोट बुक का पेज उलटने का यह सर्वोत्तम तरीका है ।

- घुटनों पर नोट–बुक रखकर आशुलिपि लिखते समय, पेज के नीचे दूसरी अंगुली न रखकर पहली अंगुली को रखें और इस पेज को केवल दो–तीन इंच ही ऊपर हटने दें । नोट लिखने के समय हमें जैसे ही मौका मिले अंगुली को पेज के नीचे कर लेना चाहिए ।

- नोट बुक पर आशुलिपि लिखने का दूसरा तरीका यह है कि नोट बुक के निचले किनारे के बाएं (Left) कोने को अपने अंगूठे और अंगुली से पकड़ कर रखें, फिर उस पेज की अन्तिम लाइन पर पहुंचते ही पेज को उठा लें और उलट दें ।

- आशुलिपि लिखते समय उपरोक्त दोनों में से कोई भी तरीका अपनाया जा सकता है, किन्तु ध्यान रहे कि नोट–बुक के पेज पर एक तरफ ही लिखा जाता है । यदि आशुलिपि लिखते समय नोट–बुक एक तरफ से भर जाए, तो उसे उलटकर पेज की दूसरी ओर लिखना चाहिए ।

– स्वरों का लोप तथा रेखाओं में काट

आशुलिपि में नोट को गति के साथ लिखना और इसका शुद्ध अनुवाद ही आशुलिपि का उद्देश्य है । आशुलिपि लिखते समय सभी जगह स्वर का संकेत करना या रेखा–वर्णों को काट द्वारा बनाना गति में बाधक होता है । अतः जहां आवश्यक हो वहीं स्वरों का संकेत किया जाए, अन्यथा स्वर संकेत करना जरूरी नहीं होता । शब्द चिन्हों, वाक्यांशों, संक्षिप्त शब्दों और समान रेखा वाले शब्दों में स्थान का अन्तर करके भी आशुलिपि में गति प्राप्त की जा सकती है ।

– स्थान लेखन (Position writing)

आशुलिपि को गति के साथ लिखते समय शब्दों को उचित स्थान पर लिखना जरूरी है । धीरे–धीरे अभ्यास करने के साथ ही शब्दों को उचित स्थान पर लिखने की हमारी आदत हो जाती है । आशुलिपि सीखते समय जरूरी या कुछ अन्य स्वरों का संकेत किया जा सकता है, किन्तु धीरे–धीरे स्वर न लगाकर बनाई गई आउट–लाइन को साफ–साफ और सही स्थान पर लिखने की आदत आशुलिपिक को डालनी चाहिए । जब आशुलिपि लिखने की गति बढ़ जाए तो प्रशिक्षार्थी सभाओं में जाकर, रेडियो से या टेलीविजन से समाचार या भाषणों को सुनकर लिख सकता है । इससे भी आशुलिपि की गति बढ़ाने में अवश्य मदद मिलती है ।

– नियमों का अभ्यास

आशुलिपि सीखते समय और गति प्राप्त करने के बाद भी इसके नियमों का अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है । गति बढ़ाने के लिए प्रशिक्षार्थियों को पुस्तक में दिये गये अभ्यासों का अभ्यास (Practice) किसी से (Dictation) बुलवाकर करना चाहिए । इसलिए नियमों को ध्यान में रखते हुए जितना संभव हो ज्यादा–से–ज्यादा आशुलिपि में लिखने का अभ्यास करने के साथ–साथ श्रुतलेख बुलवाकर भी ज्यादा–से–ज्यादा लिखने का अभ्यास करना चाहिए । क्योंकि लिखने से ही गति बढ़ती है ।

– रेखा–शब्दों (Outlines) का ज्ञान

छपे हुए आशुलिपि के रेखा–शब्दों को पढ़ना जितना जरूरी है उतना ही लिखने का अभ्यास करना भी जरूरी है । इस प्रकार के अभ्यास से प्रशिक्षार्थी को बिना स्वर के रेखा शब्दों को पढ़ने और लिखने की आदत पड़ जाती है और फिर एक समय के बाद लेखक स्वरों को छोड़ता जाता है । अतः प्रशिक्षार्थियों को अपने लिखे नोट को पढ़ना चाहिए और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि आशुलिपि लिखते समय उसने जरूरी स्वरों को छोड़ तो नहीं दिया है या जिन स्वरों की आवश्यकता नहीं थी, उनका संकेत तो नहीं किया है । क्योंकि अनावश्यक स्वरों का संकेत करने से गति बढ़ना मुश्किल हो जाती है । जिन शब्दों को लिखने में कठिनाई होती है, उन्हें बार–बार सही स्थान पर लिखकर अभ्यास कर लेना चाहिए । लिखते समय उन शब्दों का उच्चारण भी बोल–बोल कर करना चाहिए ।

– शब्द–संकेतों का ज्ञान

एक अच्छे आशुलिपिक को शब्द चिन्हों, संक्षिप्त शब्दों तथा वाक्यांशों का पूर्ण अभ्यास होना आवश्यक है । पुस्तक में दिये गए अभ्यासों का बार–बार बहुत अच्छी तरह से अभ्यास करना चाहिए । प्रायः ऐसा देखा जाता है कि किसी भी भाषण या नोट में 60–75 प्रतिशत शब्द, शब्द–चिन्हों, संक्षिप्त शब्दों एवं वाक्यांशों आदि में से होते हैं । अतः प्रशिक्षार्थियों को चाहिए कि वे इन्हें लिखने का अभ्यास पहले धीमी गति पर एवं फिर उच्च गति पर श्रुतलेख बुलवाकर कर लें । इससे आपकी श्रुतलेख लेने की गति भी बढ़ेगी ।

– अभ्यास करने के नियम

प्रशिक्षार्थी अभ्यास करने का अपना तरीका अपना सकते हैं, किन्तु अभ्यास करने के कुछ तरीके नीचे दिए गए हैं जो काफी अच्छे हैं और जिन्हें अभ्यास करने में अपनाया जा सकता है :–

प्रशिक्षार्थी अपनी क्षमता के अनुसार किसी से डिक्टेशन बुलवाकर कम–से–कम पांच मिनट तक अवश्य लिखे । श्रुतलेख लिखते समय जहां भी जरूरी स्वरों अथवा रेखा काटों का प्रयोग करना हो, अवश्य करें । आधे घंटे के अभ्यास के बाद अपने किसी भी नोट से किसी अनुच्छेद को स्वयं पढ़कर बोलने वाले को सुनायें, फिर बोलने वाले के द्वारा दिये गए किसी एक अनुच्छेद को पढ़ें । पूर्व में लिखे गए अभ्यासों को पुनः दस शब्द प्रति मिनट गति से बढ़ाकर लिखें और आधे घण्टे बाद फिर पढ़ने का वही ढंग अपनाएं । प्रत्येक दूसरे दिन इसी गति पर लिखें । इस प्रकार अभ्यासों को धीरे–धीरे लिखने और पढ़ने के के कारण आप उच्च गति प्राप्त करने में सक्षम हो जाएंगे । फिर उच्च गति से अभ्यास करना शुरू करें और आधे घण्टे बाद दस शब्द प्रति मिनट की गति बढ़ा लें । पिछले दिनों में लिखे गए विषयों के एक–दो अभ्यासों को पढ़ें जिससे कि आपको पढ़ने की क्षमता का पता चल सके । जब भी श्रुतलेख लें तो बोलने वाले से लिखने में दो–तीन शब्दों से ज्यादा पीछे न रहें । एक अच्छा आशुलिपिक बनने के लिए यह आवश्यक है कि श्रुतलेख लेते समय आपके कान और हाथ साथ–साथ काम करें । श्रुतलेख लेते समय यदि कोई रेखा शब्द गलत लिखा गया हो तो उसे छोड़ दें और आगे बढ़ें और इसे बाद में आराम से शुद्ध करें । एक अच्छे आशुलिपिक को गति के साथ–साथ शुद्ध नोट लिखने पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिए ।

– नियमित अभ्यास

प्रशिक्षार्थी को प्रारम्भ में रेखा–शब्द आदि को लिखने पर ध्यान देना आवश्यक है । इस अभ्यास से धीरे–धीरे आशुलिपि लिखना स्वाभाविक हो जाता है । प्रतिदिन कम–से–कम एक घण्टे का अभ्यास अवश्य करना चाहिए । पुस्तक में दिए गए आशुलिपि के अभ्यासों को लिखना, पढ़ना तथा स्वयं द्वारा लिखे गए नोटों को पढ़ना बहुत लाभदायक होता है और इससे हमारी कार्यक्षमता भी बढ़ती है ।

– विभिन्न विषयों का लिखना

प्रशिक्षार्थी द्वारा राजनैतिक, कृषि, शिक्षा, तथा वैज्ञानिक आदि विषयों पर श्रुतलेख लेकर अभ्यास करना चाहिए जिससे शब्द ज्ञान बढ़ सके । जब भी रेखाएं, वृत्त, लूप आदि बनाएं, वे नियमों के अनुसार स्पष्ट बनाए जाएं जिससे पढ़ने में कोई परेशानी ना हो । यह भी ध्यान रहे कि रेखाएं टेढ़ी–मेढ़ी तथा अस्पष्ट न लिखी जाएं, इससे पढ़ने में परेशानी पैदा हो सकती है । श्रुतलेख लिखते समय किसी भी प्रकार का भय, चिन्ता एवं कोई मानसिक विकार न हो । श्रुतलेख लिखते समय यदि कोई शब्द या वाक्य छूट भी जाए तो उसकी परवाह ना करें, आगे लिखते जाएं, नहीं तो सारा नोट बेकार हो जाएगा ।

– एकाग्रता

आशुलिपि लिखते समय यह जरूरी है कि जब कोई विषय आप लिख रहे हों तो एकाग्रचित होकर लिखें । बोलने वाले की आवाज और उसके उच्चारण पर विशेष ध्यान रखें । व्याकरण सम्बन्धी गलतियां ना हों इसके लिए खूब अभ्यास करें । धीरे–धीरे अभ्यास करने के साथ ये सभी आदतें कार्य को सुचारू रूप से करने में मदद करेंगी और विषय पर एकाग्रता भी बढ़ जाएगी ।

– नोट लेखन में विराम चिन्ह का प्रयोग

प्रशिक्षार्थी को पूर्ण विराम का प्रयोग सभी हालातों में करना चाहिए जिससे श्रुतलेख का अनुवाद करते समय सुविधा हो । डैश का प्रयोग उस समय करना चाहिए जब वक्ता, मुख्य वाक्य से हटकर, कोई दूसरा वाक्य शुरू करता है । अर्द्ध विराम (कौमा) का प्रयोग भी मुख्य स्थानों पर करना चाहिए । जहां कौमा या पूर्ण विराम लिखना सम्भव न हो, वहां कौमा के स्थान पर थोड़ी जगह और पूर्ण विराम के स्थान पर थोड़ी ज्यादा जगह छोड़ देनी चाहिए जिससे कौमा और पूर्ण विराम का संकेत आसानी से मालूम हो सके ।

– तकनीकी विषयों को लिखना

जब कभी आशुलिपिक को तकनीकी विषयों पर भाषण, विचार गोष्ठी या वार्तालाप आदि लिखने हों तो उसे पहले ही उस विषय की पूर्ण जानकारी अवश्य प्राप्त कर लेनी चाहिए । उस प्रकार के विषय सम्बन्धी लेख एवं भाषणों आदि को अवश्य पढ़ लेना चाहिए । अगर आशुलिपिक ऐसा नहीं करता है तो इस प्रकार के कार्य करने में परेशानी आ सकती है ।

– श्रुतलेख का कम्प्यूटर पर लिप्यांतरण

श्रुतलेख लेने के पश्चात् लिप्यांतरण करना आवश्यक है । यदि यह ड्राफ्ट (मसौदा) है तो इसे दोहरी पंक्ति के अन्तर से टाइप करना चाहिए । लिप्यांतरण करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए –

- नोट बुक (कापी) और उससे संबंधित कागज़ को अपने समीप रखें । श्रुतलेख लिखते समय छूटे गए शब्दों के लिए डैश इत्यादि लगाने की बजाय कुछ स्पेस दीजिए ताकि श्रुतलेख पढ़ते समय छूटे गए शब्दों के बारे में तुरन्त पता चल सके ।

- लिप्यांतरण करने से पूर्व इसे अच्छी तरह पढ़ लेना चाहिए । इसके दो तरीके हैं – एक पूरी डिक्टेशन को पढ़ लीजिए । दूसरा, एक पंक्ति या वाक्य को पढ़कर लिप्यांतरण करना ।

- लिप्यांतरण करते समय यदि किसी प्रकार का व्यवधान आए तो उस जगह डिक्टेशन पर पेन या पेंसिल से निशान लगा लीजिए ताकि दुबारा लिप्यांतरण करते समय उसे ढूंढना न पड़े और जिससे समय भी व्यर्थ न हो ।

- कम्प्यूटर पर लिप्यांतरण करने के बाद उसे एक बार अवश्य पढ़ लेना चाहिए ताकि किसी प्रकार की अशुद्धि में सुधार किया जा सके ।

- प्रत्येक कागज (पेज) के लिप्यांतरण के पश्चात् उस पर पेन/पेंसिल से काट का निशान लगा दीजिए ताकि किसी भी भाग के छूटने की संभावना न रहे ।

- यदि आपको विषयों का अच्छा ज्ञान है तो अनुमान के द्वारा छूटे गए शब्दों को ठीक कर सकते हैं । अपने कार्यालय से संबंधित कार्य की जानकारी रखिए एवं उनसे संबंधित शब्द चिह्नों एवं वाक्यांशों का अभ्यास समय–समय पर करते रहिए । इसके द्वारा आप निपुणता प्राप्त कर सकेंगे ।

- नोट बुक (कापी) में लिए गए श्रुतलेख को दिनांक एवं महीने के हिसाब से सहेज कर रखिए ताकि भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर इसको प्रयोग में लाया जा सके ।

- कुछ अधिकारी आशुलिपिक की अनुपस्थिति में आवश्यकता पड़ने पर डिक्टाफोन पर श्रुतलेख बोल देते है ताकि बाद में आशुलिपिक द्वारा इसका लिप्यांतरण किया जा सके । इसके लिए यह आवश्यक है कि डिक्टाफोन के प्रयोग की सम्पूर्ण जानकारी आपको होनी चाहिए । डिक्टाफोन द्वारा दिए गए श्रुतलेख को एक बार पूर्ण रूप से पढ लेना चाहिए, हो सकता है कि इससे संबंधित निर्देश अधिकारी ने अंत में दिए हों । लिप्यांतरण करते समय 5–6 शब्दों को पढ़कर टाइप कीजिए जिससे स्मरण शक्ति तो बढ़ेगी ही, साथ ही किया गया कार्य कुशलतापूर्वक एवं सुचारू रूप से पूर्ण हो सकेगा ।

पुनरीक्षा प्रश्न

प्रश्न 10.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

1. श्रुतलेख लिखने की तकनीक का वर्णन कीजिए ?
2. श्रुतलेख का लिप्यांतरण कम्प्यूटर पर करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
3. आशुलिपि को उच्च गति पर लिखने हेतु अभ्यास करने के नियम बताइये ?
4. लिप्यांतरण करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, स्पष्ट कीजिए ?

प्रश्न 10.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(1) नोट लिखते समय पन्ने के निचले किनारे के .... कोने को अंगूठे और अंगुली से पकड़ना चाहिए ।

(2) गति के अभ्यास में .... स्थान पर शब्दों आदि का लिखना जरूरी होता है ।

(3) गति बढ़ाने के लिए पुस्तक में दिए गए अभ्यासों का अभ्यास किसी से .... करना चाहिए ।

(4) शुद्ध नोट लिखना ज्यादा आवश्यक है न कि .... को बढ़ाना ।

(5) नोट लेखन में डैश का प्रयोग उस समय करना चाहिए जब वक्ता .... से हटकर कोई दूसरा वाक्य शुरू कर लेता है ।

प्रश्न 10.3

निम्नलिखित में से सही/गलत उत्तर छांटकर लिखिए :

(1) लिप्यांतरण करने से पूर्व इसे अच्छी तरह पढ़ लेना चाहिए ।

(2) नोट लिखने में गति और अनुवाद में शुद्धि ही आशुलिपि का उद्देश्य है ।

(3) आशुलिपि में रेखा शब्दों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं होती । केवल लिखना ही आवश्यक होता है ।

(4) नोट लिखते समय आशुलिपिक को बोलने वाले के उच्चारण और आवाज पर ध्यान देना चाहिए ।

(5) आशुलिपिक को नोट लेखन में विराम चिन्हों का कभी भी प्रयोग नहीं करना चाहिए ।

(6) हार्विंग नियम के अनुसार "म्प" को किसी हुक से युक्त होने पर ही आधा किया जा सकता है अन्यथा नहीं ।

पुनरीक्षा प्रश्न
उत्तर पुस्तिका

प्रश्न 10.2– (1) बायें (2) उचित (3) बुलवाकर (4) गति (5) मुख्य वाक्य ।

प्रश्न 10.3– (1) सही (2) सही (3) गलत (4) सही (5) गलत (6) सही ।

मॉडल प्रश्न – पत्र
हिन्दी आशुलिपि (सिद्धांत)

समय : दो घण्टे   अंक : 30

सामान्य निर्देश :

i. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

ii. प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिये गए हैं ।

1. आशुलिपि से आप क्या समझते हैं ? (अंक 1/2)
2. आशुलिपिक के तीन अभिन्न अंग बताइये ? (अंक 1/2)
3. क्या एक से अधिक रेखाओं को आपस में मिलाया जा सकता है ? (अंक 1/2)
4. आशुलिपि के कोई दो आवश्यक गुण बताइये ? (अंक 1/2)
5. दिशाओं के आधार पर व्यंजन रेखाएं कितने प्रकार की होती हैं ? (अंक 1/2)
6. क्या आशुलिपि के द्वारा गोपनियता को बनाए रखा जा सकता है ? (अंक 1/2)
7. वाक्यांश से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए । (अंक 1)
8. रेखाओं का मिलान करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? (अंक 1)
9. श्रुतलेख का लिप्यांतरण कम्प्यूटर पर करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? (अंक 2)
10. उन स्थितियों को बताईये जहां स्वरों का संकेत करना आवश्यक होता है ? (अंक 2)
11. यौगिक व्यंजन किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित बताईये । (अंक 2)
12. द्विध्वनिक स्वर एवं त्रिध्वनिक स्वर में अन्तर स्पष्ट कीजिए ? (अंक 2)
13. ऊपर एवं नीचे की ओर लिखी जाने वाली "ह" रेखा के लिखने के नियम उदाहरण सहित बताईये ? (अंक 2)
14. छोटे एवं बड़े वृत्त का प्रयोग कहां किया जाता है, उदाहरण सहित बताइये ? (अंक 5)
15. प्रारम्भिक एवं अन्तिम हुक के प्रयोग सरल एवं वक्र रेखाओं पर उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ? (अंक 5)
16. डबलिंग के नियम को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ? यह भी बताईये कि डबलिंग के नियम का प्रयोग कब नहीं किया जा सकता ? (अंक 5)